





ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ माहायति सना
 याश्च तमेकस्मिन् समशं रुगवान् महा
 महावज्रसमाधिहृन्निपुतिष्ठाने महाक
 वत्तयश्च हाहाविना महावज्रवालिः
 महावज्रसंस्तुलमाठं कस्य देवानामि



येनानमस्यैव बुद्धिना विद्व
 वज्रमेव नृशिखरकृदा मेव नृ
 ल्यवक्तुसमलक्षणे महावज्रयु
 कायैव रुगमहामिहागमहाव
 न्यस्य रुवने महावज्रसिंहा

युनगतसदृशसाक्षि सचेनकजा मिय निवर्द्धेनवे वरुि के वन रुनाया सम्यक् वा
 महावज्रविमोक्तसमाधिवृद्धरुगविकुर्वधमहापानिहार्यसदगपनिहानयकनेकविह
 मद्रुहसर्वसन्वविहवनिनान्यवैधविद्विगमधूना दात्रगंहीवधर्मदधानायनिहानयानि
 मन्वागमेननेकवृद्धरुग तथागतमहायुगामेधावनामविमोक्तसर्वधममाधिवसिमाहि
 हावेनिकवाधंगमाग्नेहमिपत्रिमिना पायकोधलयसंयद्रवमुनिमैशीकनूधामुदिनायकावल

३

प्रसाधे नहिलाया लहिलाथे ४६ द्वावा स काशिक देवपूज ४ सूयामे न च देवपूज ४ सूयाम काशिक देवपू
 जयनिवा नैदा ॥ संवृषित न च देवपूज ४ निर्माध न मिता च ॥ पत्रिनिर्मित व सवहिला च ॥ गेकं द च देवाना मि
 थं द स च देवपूज यत्रिवा नैदा ॥ वं मश्चि न ता च सू नै द न वलि ता च ॥ पद्मा द न च ॥ ना दू ता च ॥ वे ना च न न च ॥ ३
 वा दू ता च ॥ न च प मखे न यत्रि मिता थे प मं या संखे न स नै द ॥ सा ग न न च ॥ ता ग ना ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥
 न च ॥ वा स की ना च ॥ संख पाले न च ॥ क कौ ट क न च ॥ प म न च ॥ म हा प म न च ॥ न न क न च ॥ क लिक न च ॥ न

वं प मखे न यत्रि मिता थे प मं या संखे न यत्रि मिता थे ता ग ना ॥ ४ ॥ दू मं न च कि न न ना ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥
 न ना ॥ जय निवा नैदा ॥ प च ॥ हि खे न च ॥ ग न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥
 न च ॥ वि शा ध न ना ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥ न च ॥
 पत्रिवा नैदा ॥ वे थ म खे न च ॥ मा धि रु दं द च ॥ पू र्ण रु दं द च ॥ पा कि कं न च ॥ म हा य रु ना ॥ जय निवा नैदा ॥ हा नि
 त्या च पं च पू र्ण ग न यत्रि वा नैदा ॥ स प हि श्व म हा लो क मा रु हि ४ स प हि श्व म हा ना रु सी हि ४ स प हि श्व

५

देवतया च उषया च देवतया युक्ता च ॥ सर्वत्र स हि ॥ नादसिं न्या च ॥ यथा यथा च देवतया च
ग सर्वमिह यि स रु ग वान सु प व र्ति न धर्म च क ॥ सु प ति छि त व द्ध का य ॥ सु प त्रि पु र्णु य स्तु हान स रु
न ॥ सु प त्रि गे द्वा न ॥ सर्वरु तो म द्वा वी र्णो धि न मि ता रु मि ला ॥ कालि त द्वा पि ण म द्वा पु न्ख ल रु ध ल ॥
क त धी त्री न च रु न्धी ल्य न र्ण ज त वि न जि न स र्वा ग ॥ व य व ॥ सर्व स त्वा न् व ला कि न म द्वा नि र्जि न स र्व
मा त्र पु पा दि कु ग द य म र्थ न दू र्ग न की लि ण द ध लो क आ र्च रु सिं ह ना द ना दी स म र्चि ता वि श्रा न्ध का

ना अ सं ख या प रि मा न का टि नि यु त धा त स द ॥ दान धी ल र्ना नि वि र्ज ध्मा न प ह्ना पा य व ल य धि धा पा न
मि ता दू स्त न च या वि नि व र्ति त द्वा पि ण म द्वा पु न्ख ल रु ध ल च रु न्धी ल्य न र्ण ज त ल रु त ग ॥ न धा रु न ॥ अ
ने क व ज न ल वें दि का स रु त या द यी थ स प ति छि त अ ने क व ज न ल स क न म र्वा गी र्णु ला दि न म का व लि
नि व द्ध क ग पु व क ॥ अ ने क व ज न ल स क ॥ किं कि नी जाल क लो ना दि ता ॥ अ ने क व ज न ल य म क र्णु का
वि ल ग न क का त न ॥ न्दी ल स द्वा नी ल पु ष्य वा ग न सि णा ला व रु र्णै वि स म न्क पा सा दि क ॥ अ ने

कवजगत्तसलाकाविशुषितादधुयपणकोटिनियुतशतसहस्रकतस्तथापत्रिकत्रमनेकल्य
दुमायल्लभितविस्तत्रसमेनूमायनवेजगत्तपमासनेनिषप्रुष्टकात्रतपव्वतनाज०००वंग्रिया
५ कलन॥सूर्यसहयानितिनैकपहामलुलवित्राजितरुमिहागं॥सूपनिपुत्रुवन्द०००दंसर्वला
कपिशदधनामहाकल्यदरु०००ववृद्धधर्मदधायतिस्मराआदीदयानमध्वकल्याद्यपयैतसान
कल्यानस्वर्थस्यजगत्तकेवलपत्रिपुत्रुपत्रिष्ठद्वपर्यवदातंवृक्तचर्यस्यकाशयतिस्मराअथत्वः

लृहगवान्मूर्द्धासत्तदूर्ध्वकाशान्तसर्ववृद्धसन्दर्भनन्नाममहावन्मिजालपमृक्ततिस्मरा॥तैतववस्मिजा
प्रतायेकविहादयमहासाहयलाकधुनवराषित०सरुदीकता३रुतयावन्मिचगंगानदीवालका
प्रमानिवृद्धकंगालिगानिसर्वादिगैतावराषित०तस्ररुढान्यराषितानैरुवन॥शैवतंषुवृद्धरुणेषुवृ
द्धाहगवन्मोअनेकसिंहासतकोटिनियुतशतसहस्रयुहकुटागंनविमानेषुधर्मदधायतिस्मरा॥साध्विम
हाधैवके०वाधिसत्तामहासत्ताहिरुहिरुहियाशकायागिकाहिरुदवतागयरुगवोधैसवगानू

किं न त्रसदात्र गोसाईं ॥ अथ खलु रुगवान् विस्मिन्पुत्रिषदमा मरुशंभो ॥ अथ गोमदापतिस्तत्रा
 मदाविद्यापवक्तामि सर्वसत्त्वानां कर्मसाधनधीदृष्टतस्थे सां सर्वदृष्ट्यमर्दनी सत्याद्यवधमाशेषपापा
 गच्छन्ति संरुप ॥ सखदा सर्वसत्त्वानां सर्वथा धियमाचनी कानूष्मा सर्वसत्त्वानां सर्वथा धियमाच ॥
 नीलोकनाथ नराचितापनिगायत्र सर्वपादहितोपायका निधान ॥ अतया कृतत्रकं उपविशेषसूत्रा
 लयः अथ कवनीतथागच्छं यत्ताधमाक्य उमि रूतनागविष्णवानां युद्धे नवदानूधमः अथ सर्वधर्मकथां स

वरुतगोरोत्रपियदाः सर्वविनश्यन्ति नामयं दहकीर्तनेः स्कंधात्मादायसात्रा विष्णुजकिनीयदाशाशुक्रा
 मदानं जादिसकं मानुषपुजां न ॥ गो सर्वसुमहिताशान्तिपतिस्तत्रायाचुर्गं सा ॥ यत्र च काविनध्यमिकाखा
 उद्भयं वदानूष्मा मरु कर्मो न बोधकं मूलकमस्त्रिमयगं ॥ न विषन्नगं न तान्नि न भगवन् वचादक ॥ अथानि वि
 शतश्रेवाकालवायुनवाधकं ॥ सर्वधर्मपमथनाविद्यावाह्यादितं ऊसा ॥ उपसंगं विनश्यन्ति याधया नर
 वगं पितृ ॥ सर्वधर्मस्य सिध्दिकुयपाप्राणिनिन्यगं ॥ यश्चिन्नद्वानयविद्याकरवाहोवनिन्यगं ॥ नस्य सर्वा

निकायातिशिक्षमंतामं सयः॥ निखनरुतिदेव्यतागनाजातयेवव॥ वाधिसत्त्वामद्वीयावृद्धाः
पुष्टेकतायकः॥ अथकः॥ सर्ववृद्धानां विद्यादद्यामद्विकाः॥ नरुाकुर्वन्ति सततपति सनाधनकस्य
८ वे॥ वज्रपादिश्रयकृत्यानां तत्र उदयस्थथा॥ तस्य नरुाकनिष्यन्ति दिवा नागोनः सयः॥ एकश्चि ८
दरुो सार्धं वृक्षादिभ्यः सदेव्यताः॥ तन्दि के॥ ममदा कालः॥ कार्दिकं सागराद्येनः॥ सर्वमारुगं ध
स्य गथां नमानकायिकाः॥ मयया श्रमदा मं जा देवाः॥ श्रेवमद्विकाः॥ निखनरुाकनिष्यन्ति पुनि

सनाधनकस्य वेवृद्धाः॥ श्रेवमदा तमाना विद्यादद्यामदा वलाः॥ मासकी रुकटी वेवना ना देवा तथा कु
शी वज्रसकलया खेता मदा खेता तथेवच मदा काली च दूय च वज्रदं तथा येनाः॥ सृपासी वज्रपाणी
वज्रपादिमदा वला वज्रमाला मदा विद्या तथेवाम त कु कुलिः॥ मयना जिता मदा देवी कालकत्री म
दा वला तथा धं न्या मदा हा ग म य म कु कुलि वेवच॥ पृथदन्ति मदि वृणा सृष्टु के गी पिंग ना॥ मदा मं जा तथा
देवा धं न्या च दिशु मालिनि॥ नारुथे कजटा वेव वृद्धा रुति क नायका॥ कापालिनी मदा हा ग धं न्या ल

कं ध्वनी तथा मन्त्राश्च वदवा विद्याः सर्वसत्त्वान् ग्रहकाविकाः तस्य नृका कविष्यन्ति जस्य विद्या कं नृकृताः ॥
 हात्रिणी पांदि कश्चैव सांख्यिनी कूटदन्ति श्री देवी सनध्वनि चैव नृकृति सदान् गमः ॥ मदायति सत्रा मंताया
 २ श्री धामयम सदा सर्व सिद्धि रुवे रुखा पुंगु र्हात्र निख्य सः ॥ सुखग र्हात्रि वद्ध कय स्यति गु विनी व्याध स
 यश्चापि विनस्यन्ति सर्व पापान् गम्य ॥ पुः श्वान् वलवान् निख्य धन धन्यः ॥ पु वद्ध गं म्ना दयं वचनं वा
 पि पूजनीयं रविष्यति ॥ छवि बाल स्युषि शावा पुनूषा धनवा सुखेन सर्व सत्त्वानां मां रुक्षार्थ समग्र

मं ॥ सुखि नश्च रुवे निख्य सर्व व्याधि विवर्जितः ॥ राजा नाव सगं न स्य धन पुत्र सदा जनाः ॥ निख्य वद्ध
 लमं लरुमा पुंश्च ना सि विवर्द्धनं ॥ सिद्धि नं सर्व कल्याण्य पु विवृ ॥ सर्व मं भुले ॥ सर्व ग समग्र ह्मा सो जि
 नस्य वचन सथा दुस्वपनेन पुवा धनं सर्व पाप हना पना कील विष रश्चैव न स्यन्ति पश्य मिता ग रथे वच ॥
 सर्व ग्रह विनाशार्थः ॥ रात्रि ता ह्मा नम ह्मन् ॥ सर्व का म ददा ह्मां रा वरं पु निख्य ॥ ॥ गदि दानी पव
 का मिह तसं द्या ॥ ॥ ॥ नमो वृद्धाय ॥ नमो धर्माय ॥ नमो संधाय ॥ नमः सर्व गथा गतांतां नमो नम

70

[illegible][illegible]

77

अथवादिनि १ द्रुल २ मूल ३ चून ४ धन ५ आयपालनि सनवनपमर्थनि सर्वदेवगदायुजिग १ विनि २
विनि ३ समन्तावलाकिगः परु ४ सपरु ५ छु ६ विस ७ सवपापविष्ठाधनि चून ८ धनधिधने धन ९
सम १० मस ११ ननचले वालयस १२ नपुनरा मासा श्रीवपूधने अयंकमले किदि १३ वलदाकरा १४
१५ उं यमविष्ठा १६ रगाधन १७ छु १८ व १९ रुव २० रिनि २१ चून २२ मंगलविष्ठा २३ यविगमृत्वि स्वज्जिति स्वन
२४ कालिगहिखने समन्तावलादिगः परु २५ सपरुविष्ठा २६ समन्तयसात्रितहावितगुद २७ कल २८ सर्वदेवग

[illegible]

[illegible][illegible]

धिबलवीर्याधिष्ठितं स्वादा ॥ धृतराज्यस्वादा ॥ विनूरकायस्वादा ॥ विनूपाकायस्वादा ॥ वैश्रवणा
 यस्वादा ॥ वकुलमहावाजाय नमस्कृताय स्वादा ॥ ऊमाय स्वादा ॥ ऊर्मपूजिताय नमस्कृताय स्वा
 दा ॥ वनूधाय स्वादा ॥ मानूताय स्वादा ॥ महामानूताय स्वादा ॥ अरुन्धाय स्वादा ॥ वायुर्वे स्वादा ॥ १३
 नागविलोकिने स्वादा ॥ देवगंधर्वाय स्वादा ॥ नागगंधर्वाय स्वादा ॥ यक्षगंधर्वाय स्वादा ॥ वा
 क्यगंधर्वाय स्वादा ॥ गन्धर्वगंधर्वाय स्वादा ॥ असुरगंधर्वाय स्वादा ॥ गन्धर्वगंधर्वाय स्वादा ॥ कि

न्नगंधर्वाय स्वादा ॥ महान्नगंधर्वाय स्वादा ॥ मनुष्यगंधर्वाय स्वादा ॥ सर्वग्रंथाय स्वादा ॥ सर्व
 रुतं स्वादा ॥ सर्वपुत्रं स्वादा ॥ सर्वपिशाचं स्वादा ॥ सर्वपुत्रमात्रं स्वादा ॥ सर्वकुंठारं
 स्वादा ॥ सर्वपुत्रं स्वादा ॥ सर्वकटपुत्रं स्वादा ॥ सर्वदूषणं स्वादा ॥ उधुनू २ स्वा
 दा ॥ उधुनू २ स्वादा ॥ उधुनू २ स्वादा ॥ उधुनू २ स्वादा ॥ दन २ सर्वदंष्ट्र
 स्वादा ॥ दद २ सर्वदूषणं स्वादा ॥ पत्र २ सर्वपुत्रं स्वादा ॥ यस्यामिनिधिन

१४

नमस्तुभ्यं सर्वेषां त्रिकालं यत् सर्वदुष्टविनाशं साधयति ॥ कलिनाय स्वाहा ॥ अकलिनाय स्वाहा ॥
 दिक्पालाय स्वाहा ॥ वज्रपालाय स्वाहा ॥ समन्तपालाय स्वाहा ॥ मानिक्यपालाय स्वाहा ॥
 पूज्यपालाय स्वाहा ॥ समन्तपालाय स्वाहा ॥ महासमन्तपालाय स्वाहा ॥ कालाय स्वाहा ॥ महाका
 लाय स्वाहा ॥ महाकालाय स्वाहा ॥ यक्षीनां स्वाहा ॥ लाक्ष्मीनां स्वाहा ॥ यैत्रयिणीयक्षीनां
 स्वाहा ॥ आकाशमातुल्यस्वाहा ॥ समुद्रग्रामिनीनां स्वाहा ॥ समुद्रवासिनीनां स्वाहा ॥ नागि

१४

वनानां स्वाहा ॥ दिव्यसुवनानां स्वाहा ॥ शिखरसुवनानां स्वाहा ॥ वैलासुवनानां स्वाहा ॥ अश्वत्थ
 वनानां स्वाहा ॥ गर्भहृदयस्वाहा ॥ गर्भाशयस्वाहा ॥ गर्भसंभ्रमस्वाहा ॥ उदर
 स्वाहा ॥ उदरस्वाहा ॥ हृदयस्वाहा ॥ रुद्रस्वाहा ॥ विट्स्वाहा ॥ विट्स्वाहा ॥
 धनस्वाहा ॥ धनस्वाहा ॥ अग्निस्वाहा ॥ महावायुस्वाहा ॥ त्रिलोचनस्वाहा ॥ त्रिलोचनस्वाहा ॥ मि
 त्तस्वाहा ॥ वृद्धस्वाहा ॥ सिद्धस्वाहा ॥ मन्त्रस्वाहा ॥ गीमावधस्वाहा ॥ सर्वगस्वाहा ॥

स्वाहा॥ ऊर्ध्वय २ स्वाहा॥ ऊर्ध्वय २ स्वाहा॥ शिख्य २ स्वाहा॥ शिख्य २ स्वाहा॥ लंज २ स्वाहा॥ वध २ स्वाहा॥
 ॥ मादय २ स्वाहा॥ मधिविभु २ स्वाहा॥ सूर्य २ विभु २ स्वाहा॥ चन्द्र २ पूरु चन्द्र स्वाहा॥ ॥ अधानि स्वा
 हा॥ विरामधनि स्वाहा॥ ग्रह स्व स्वाहा॥ नक्षत्र स्व स्वाहा॥ गिद स्व स्वाहा॥ भानि स्व स्वाहा॥ पुष्टि स्व १३
 स्वाहा॥ स्वस्व यने स्व स्वाहा॥ गिद कनि स्वाहा॥ सक्रि स्वाहा॥ भानि कनि स्वाहा॥ पुष्टि कनि स्वा
 हा॥ वलवर्द्धन कनि स्वाहा॥ श्री कनि स्वाहा॥ श्री वर्द्धनि स्वाहा॥ श्री कालनी स्वाहा॥ मन्त्रि स्वाहा॥

नमस्त्रि स्वाहा॥ मन्त्रि स्वाहा॥ वेग वनि स्वाहा॥ डं यच्च गथागतमूर्ख पवनविगत रुय समथरु
 गवनि सर्वपापस्वस्ति रुव रुमम सर्वस्वाना रु स्वाहा॥ डं मनि २ विमनि २ पत्रिचलि चलन रुगव
 नि रुयविगत रुय रुमनि वाधि २ वाधय २ वृद्धि लि २ सर्वतथागत रुदय रुं स्वाहा॥ डं मनि २ मनि व
 नं मुनि पि रु रुमम सर्वतथागत ४ सर्व विद्या विषं क मदा व रु क व व न म्पु डा मुदि नं ४ सर्वतथागत रु
 दया धिष्ठि न व रु स्वाहा॥ सम रु काला माला विभु द्वि सरु विम विना मदि म दा मु डा रु दय पत्रा जि

१६ नामदाधववि. नंतखलुयुन ४ समर्थं न तस्या संवयत्रियदमदावाक्कधसंनियति मोरु तसन्निर्वनश्च
 तयुरुगवान्मदावाक्कधमामरुयमंस्म संवसेदायनिसनायामदाविशानाह्वा यदधवदमाधंम
 दावाक्कधवजकाय ०० नितेदिनय ४॥ नग्नितस्य काशं कुमिष्यति ॥ किंमिति संज्ञा न जदा कपिलवसु १६
 निसदानगले नारु रुद्रकुमा नोमा नु कुक्किग मारु लो रुदा र्गम पाया ४॥ ककं न्या या आत्स मृगतिख
 दाया पक्षिषत ४॥ तययमानियादुरु ता नितदा नारु रुद्रकुमा नोमा नु कुक्किग मनुव ०० मां विशामन

२१
 स्यकार्षित् ॥ अस्याविशानुनस्मन्नमार्गं नया ३ ग्निकस्मिन्नरु २१ ती गो रुा वसुपगत ४॥ ततो र्गम पाया
 म ककं न्या या हात्री नम ३ ग्नितसं पृष्ठत तत कस्य द ता ४॥ वाविशायर्वतथा गत धिष्ठितं न द रुनाम
 दावाक्कध मग्नि नद दतित न च विषं न वहा कं जी वितो द्वे पत्राययि रुत रु कथमिति यदा मदावाक्कध
 सूर्यपात्रकं मदानगत्रवत्र को हा वं ही वहिक स्य १ धिष्ठित नृणा विशावलिका वरुव ४॥ नंततविशायवत्र
 हातरु कना गना जा आ कर्षित् ४॥ आ कर्षित् यित्वा च प्र मोदवसा द्वे को नदा रु ४॥ याव रुना सीको ध

१७ दष्ट ॥ समीवा कृदवेंदनावेदयति ज्ञानातिव्ययथा मजीविततिबुद्धमिति कृत्वदवादि का मूद्रु
 ॥ न कश्चित्तसकलानि विषयिकिस्तु ॥ अथ नरु नेव सूर्यपात्रकं सदानग नवने विमलविद्यु
 दानाभा पागिक ४ पुनितवमिति मदा क नू धा समन्ता ग न ॥ तस्य ॐ यं मदा विशा नाही जि का व्यह न ११
 सा कस्या नि क मू पय काना डय सकु भ मा दा विशा यव रु या मा स सा क र्ये क वे ला या म न स्र त मा प या
 निर्वषस्म नित्य तिल द्रु क ला न मा म दा य स ना त्या नि मा च यित्वा ॐ मा मे व र धि पू ज म दा विशा रु द

२१
 यगता कात्रयति स्म यथा विधिवद न क्लानमिति अपि च मदा वा कृदा किं य नि ह्ना वेनेति
 ॥ वा ना हा स्या म दा न ग र्थो ३ न पूर्व ना नू वि च न मा नो वा जा व क द रु ॐ नि स र्वा ग रु ति न
 स्य या मि को व ल च क वा जा च रु ने ग व न का य स ना र्थ वा ना हा सी त्म दा न ग नी य नि वा र्थ
 वि ना स रि रु मा न द ४ ॥ त नी वा क्ता व क द रु स्या मा ने नि वे दि न ४ ॥ दे व य न च कं ध न ग
 न द न त कि नू ख लू व य ड पा य कू र्थो मा र्थ ने व य न च क वि न स्य ति ॥ आ ह्ना य स रु ॥ अ ल

१८
 धीसूकारुवन्मोरुवकुञ्जसिमममदायनिसनाताममदाविद्यानाह्नीयंतादंसिमवृष्टं
 गवलकाययनाजिष्यामि॥ रुहमीकत्रिष्यामि॥ अमाया४सिन्नसापतिपह्योच४॥ किंसिदं
 मदात्राजनस्मार्तिकदाविदपिध्वनमिति॥ वाजापाद४॥ अदंसिदानिपह्यरुदधनकत्रिष्यामि॥ १८
 अथसनाजावृक्तदहोनामगद्वादकंनसनातसिना४ध्वित्रिपुपादकं०००मांसदायनिसनामदावि
 द्यानाह्नीयथाविधिनालिख्यगिलका॥ १३॥ इवह्यपयित्वा०००मांसवमदायनिसनामदाविद्यानाह्नीक

वचनकृत्वायग्राममध्वश्वगीर्यनकाकिनेवसर्वाशोचकुत्रंगवलकाय४यनाजितमामर्दिनश्चतावयावृक्त
 वृणमह्ववृणमर्दुति४॥ ०००तिरुत्वाशोवलचक्रनाजामृक०००ति॥ नवंदिमदावाक्तायपह्यक्रमदातना
 वंयमदाविद्यानाह्नीयवृणमगनह्वदयमृदाधिष्ठितायपह्यक्रमवृणमिध्वनशीतया॥ सर्वमथागतसर्ववापृ
 या॥ पश्चिमंकाशं॥ पश्चिमंमयमयज्यायुकातामनुलयुक्तानांमन्दराग्यनायत्रितराग्यनां॥ सर्वसत्त्वानां
 मथयद्वितायसूत्रायदृष्ट्या॥ य४कश्चिन्मदावाँ०००मांसदायनिसनामदाविद्यानाह्नीयथाविः

१८

धिनालिखित्वा वा हो क १० वा धावयिष्यति सं सर्वमथागतमधिष्ठितवदितय ॥ सर्वमथागतमने ००० ति
वदितय ॥ कलिताचि सुत्री ००० ति वदितय ॥ अरुं यकवचन ००० ति वदितय ॥ सर्वमथागतमथन ००० ति
वदितय ॥ सर्वपापवन्धनिर्द्धन ००० ति वदितय ॥ सर्वनत्रकगेति विरामधन ००० ति वदितय ॥ किंमिति ॥ १८
पूर्वपरिहृतवतिसहावाक्ता अनेगमस्मिन्पद १० हि कुन गा र्ध्वमथागकूलगि काखठका अदहा दान्यासूख
यदात्रहानकसाधिक वरुद्धं क गंधपाप चंद्रदुष्टा तस्यो गलिकरत्ना सर्वमधिष्ठा यरु रूयति यावदयत्रं द

समयं नमदायाधिसंयुक्त ३ मदी इखा वंदनामनरुवंतिः समयस्मि अनाय र्धमपवाय र्धम अय निस्र र्धम
दातसूका गता गदक वानि अथतस्मिन् वयं थि वी पद १० डया ग को वा क्त ध पति वसतिः गंतम रुद्ध
ध्रुव ३० ला यपूनयं न सहि कृष्णं ता य संका क ३ डय संक मं तस्य हि कृत्रिमां म दा यति सत्रा मदा विद्या
वाह्मी लिखित्वा क १० वधमिस्मः समनक वरवहा या मदा यति सत्रा या मदा विद्या वाह्मी नस्य हि कृ ३ सदा
वंदना १० भक्ता सर्वया धि ४ पविमूक खलू समरुत ००० ति ॥ गस्य न ववाह्मी अमाया जातसूति लिखित्वा

२०

मृत्तिकालगगन४५ सतसमिन्नेव कर्वकदवनेडनसृष्टेऽमुविचो मदाननवकंड गयन्न तवतस्यगवित्रहि
 कृत्तिकुटं लुपित सावतस्यमहापुनिसत्रामहाविद्यानाह्नीक १० वधवावस्तिन४॥ समनूनाडनयन्नस्य
 वतस्मिन्नेऽविचोमं वांनानकाधमसत्त्वानां सर्वोद४खर्वदनायुधभागा गेंचनानका सत्त्वा सर्वसुखसमपिता २०
 मृदुवनयेंचगेमदानमवीदिकाग्निस्कंधासंयिसर्वदासर्वमयभागाः ००ति मृथमंउर्मयूनादिसमय
 सायनाजर्मस्यधममराजस्यमनिश्चयविस्मयेधमवाचयति समराग्निविस्मयमिदन्देवहृदयंननकस

कटं पशान्नादावृष्टादृ४खसत्त्वानां कर्मजं वयं यथासंयिसमंगानादं हस्तदंदिनासुदकत्रयज्ञानवा
 धर्मकूबधवानस्यजमं वा मयभासलयाह गतपशान्नालोदकंरय४॥ मुसिपुतवनेपला नवाधर्म
 कर्मजायुत४५ जर्मसत्त्वधर्मनाजा सिधर्मदाभाहायनयजा वा ०० दं दुकात्रदाता ल्यमसमाक
 वकुरुमदसिवागता मोधर्मनाजा वैधर्मात्सामनिश्चय४ कवृष्टमहायनहा नावाकं ०० लेंद
 मोटहा वाकिंमं व कथ्यताही चंपनि वचोवदत ॥ नगसं वां दृष्ट सत्त्वानां यर्महत्वा सुदावृष्टा४॥

29

[illegible]

देवयनिसनेमस्य गं॥ धर्मनाउडवाच॥ यनिपत्तानेथंचरुसतगरुतिदग्नेतिन॥ सगतिगरुः
गंवाशोयनिसनाकावलाविता॥ ००० चंननकपालावेगरुवायूसकुलावती॥ तद्वृधमहाकुट
वगे॥ पत्रिवात्रित॥ तद्वृधसर्वसत्त्वधूमेश्चिरारुविषयति॥ अथमेउमेषून्पाप्मुगस्यावनात्यायूसकु
नावतिगता॥ गंयध्यन्तिगदागणनाउक्षानिसमीपगत॥ गवकुटसमभंतएकज्ञालासमाकुला
स्तमभात्रीनयध्यन्तिपुनिसनावन्यकएकदेवतागीश्चगन्धर्वाश्चक्रुवाकुरुसाकिन्ननयनिवा

र्यसमननयुजा कर्त्तुं नुरुवाया जावरुस्यमेशः ४ यनिसत्राकूटनिनामल्लापित ॥ अथम
 यरु ४ पुनत्रागेयजमस्यधर्मत्रास्यमानिश्चयविस्मयं धात्रात्रयतिस्म ॥ पुनमंत्रयथास्वः
 यातिदिनसमनननानाचित्रः ३ स्मिन्नवचनयत्रवसानेसदासत्त्वस्मन्तात्रकृष्णान्विजवशा २२
 यन्दिदं ११ षुदं वृषयने ॥ गनदं नुनायतिस्मत्रापूर्वदं वयु ०० ॥ ययमं गनदिमदावाक्का
 दपनिहानयुर्वत्तस्मादवधमंत्रयंसदायनिसत्राध्वनयितया लिखितया यथाविधिनानित्य

गनिनगनाकृत्वाध्वनयितयानित्यसर्वयसनदू ४ खलपनिमृयमं सर्वदूर्गतिरुयके वंथ ४ डलनति ॥ याव
 दसूक्तल्लयपनिमृयमं नचविशुनागकस्यानयि ४ किमिति विशुनायनिहानयुर्वमदावाक्कादिगुम
 र्धनं सदानगत्रे विमलसंखानामल्लोक्षीमदाधनकनकसमृद्धिः ४ यनियुक्ताकाशकाशागात्रसंयन्तावरुव ॥ सः
 सदासार्थवाद् ०० निख्यागवान ॥ अथसमदासार्थवादायानपाणसमासायसदासमृद्धमवतीर्षु ॥ जावनहि
 मिगिले ४ सास्ययाना ३ थवाविनागयिक्तकामनागत्रसद्द्वामदाकर्त्तनासखोटकूर्वादिविशूलकामू ३

२३

निवजासनिपवर्षयिहमालध॥ नमस्तु वनिजाविमद तादृशवतायाद न॥ विहाममदाकनागासकाहवि
 युलकावजासनिवागसु अन्निमेश्वरिमिगिले॥ पातमवसुदृष्टमदातमका॥ ना॥ दकनुमालध॥
 मन्वदेवताविस्थानायाचयन्ति नकश्चिदंषापनिगाधरुवनि॥ नमस्तु वनिजमदासार्थवाह २३
 स्यपतमेकबुधमिदं वचनमववत॥ यत्रिगायस्वमदासत्त्वमोचयासमात्मदाहयागु॥ अथखलः
 समदासाथवाहादृष्टविहमदामति॥ वनिजाविकलीरुता॥ दं वचनमववत॥ माह २ वनिजाहवः

भाषीवतावजत॥ अहवासाचशिष्यामिजुहादृशवमदाहयागु॥ तमाधीनमनसाहत्वावदिज॥ दं वच
 नमववत॥ किंसतनमदासत्त्ववदिधौघमविघ्नत॥ यावजीविनमसमाकंस्वरूपवात्सदासमाकथ्य
 ताहानमदातमपश्चात्किंकत्रिष्यतिसनग॥ साथपतिस्तेषामिमाविशामदाहयंत॥ अस्मिन्मममदाः
 विद्यापतिसनातामधेनममदनीसर्वदृष्टानामदावलपुत्राकुमर्गेताहंमाचशिष्यामिजुहादृशवमदाः
 धवात॥ नमस्तुमदासार्थवाहनस्याविलाया॥ मांमदापतिसनामदाविद्यावाहीलिखित्वाध्यायवना

पिता कन्या निम्न ॥ समनक्त बध्ना ग्रवना पिता या ज्ञाया सदा पुति सत्रा या मदा विद्या वा ह्य सर्व न वं न निमि
 गिला संयो तम कला लीरु नय ध्वनिः नग सं मदा ना गभ मे नि मन सा सं वा म नि कं वनी र्य पुजा क र्ण मात्र
 २४ द्वा ॥ तं च निमि गिला ज्ञाया न वं मदा पुति सत्रा या मदा विद्या वा ह्य अनुरा दे न द ह मा ना ४ पुति य ला जिः २४
 ता ४ ॥ विलय ग ता ४ तं च सार्थ का सं मदा ना गे त्म द नि मदा वत्त दी प पा पि ०० ति ह्य न व नी य मदा विद्या म
 दा पुति सत्रा सर्व न थ ग न धि धि ता नं न हं रु ना मा दा वा क्त ध मदा विज्ञ नि विद्या ना न समा द व ध्व मे व य ध

जाग्रवना पिता कला ध्व न शि न या ॥ सर्व वा न नी ता का ल मे द्य वि शू द र्श ना ४ पु सम य नि सर्व द
 वम नू ष्य वि प्र द वि वा द षु य त्रि मा च रं ति सर्व द त्म क र्म स क स ल रु पा ध क जा ग्रा वि वि ध नू या ४ स
 ह्य वि ना ध का न प रु व नि षु स म ग र्क नि सर्व त दू र वि रु मि ग प रि द ष्टि १ धा वि न स्य नि सर्व
 दि च पु ष्य रु ल य व न थ रु ष धि षा स्या दा नि जू रि प व र्ध नं ॥ सू न स्या नि सार्द नि म दू नि च रु वि ष्य नि
 ॥ सम्य र ग व य त्रि पा त्रि ना नि रु वि ष्य नि अ ति रु षा ना रु षि दो षा ४ ॥ सर्व न रु वि ष्य नि ना का ल रु षि दो षा रु

विषयति॥ यत्र तस्मिन् विषयमदाता गां सं सं गव कालेन कालवर्षधना डल्ल कृत्ति यस्मिन् विषयः
 ॐ मा विदोशा राहो मदा पुनिसना नाम पुत्र विषयति न पुत्र सन्तु ह्यो लायुजा सत्का वरुत्वा नाना गंधेना
 नो धूपे नाना पुष्पे नाना वस्त्रे पत्रि वस्त्रे चित्वा चैत्य सा पत्रि धजा ग्राम वना पिता कत्वा नाना वायु हव संगा २३
 तिका हि वायमाना हि ४ पुद द्विष्टी कर्तुं या नत सं वा मदा सत्वा नायथा चिह्नित मा सा पत्रि पुन शिष्य निद
 वता ग क व क पु रु त य ४॥ अथ वा यथा २ विधिना लिखित्य नं तथा २ स्रध्वनं वा पूजा थी लरु नं पूज ग र्ह सं

धनधीय वा सुखेन वर्द्धनं गर्ह ४ सुखेनैव यमय नं वा कालेन वर्द्धनं गर्ह ४ कालेन यत्रि सुत्र नं वा किं मि
 ति मदा वा कृत्वा पूर्व कृत्यता ॐ हो व सं गंध विषय ना जाय सा त्रितया तिना म सा च पुत्र वरु व
 किं मि ति य सा त्रितया ति त्रि ति ख्या न्न वान नं न वा ह्य जात मा पुं द य ति य सा र्थ मा ४ ४ न नो ग
 हीत्वा जा व दा फ र्णी व पीत नं च सु नो स द ही मा पुं द य व द्वि त ४॥ नं न का व र ध न न स्य वा ह्य ४
 प्र सा त्रितया ति त्रि ति ना म स्रु पि न म रु त ॥ अ नं च न स्य वा ह्य ज दा जा च न क ज नं स्य आ ग शु क्ति न दा

२०

धनरुतिकर्मकनिष्ठासिधर्मश्चर्यामिः यदासमाकिंविद्विषयनितर्ददधर्मयुज्यिष्याः
 मित्तस्यगद्व्यापात्रकूर्वमाधर्मश्चर्यामिः यदासमाकिंविद्विषयनितर्ददधर्मयुज्यिष्याः
 दीक्षानादहं॥ यमनसर्वसत्त्वयन्त्रिगार्थवाधिविर्हमत्स्यायसर्वसत्त्वसाधानधीदाकृत्वासदायुनिस २१
 नात्रलंतिनिर्यामि ४॥ एवमपि धिधनकमननमदा दाननमदा रूलेनमसर्वसत्त्वनाश्रदा
 विद्वद्वरसमूहं दद्यात् ॥ अनेनकावदानन दानं २ पात्रिकसंगश्रुतिनववद्विधनन ३ नकवि

धिपूष्मनिसक्तव ४ कमादेवश्चयुजितायाजावनवृद्धा रुगवन् ४ युजिताः तदाचरुर्वावायकायि
 कारि ४ स्वयमेव दर्शनदहं ॥ एवचहिदिनरामदा नाजसमन्नाला मा लाविशुद्धिं वयस्सुनितासिना
 महिमदासूदाहदयायनाजितामदा धनधीमदाविशानाहीमदायुनिसवानामनायथाविधिः
 नालिषिष्यति यथाविधिनालिखंययथाविविधकलयः ३ हिदिननडपवासासिनायाअर्गमदि
 ध्यादद्या ४ गनीनेवद्याननसं पूरुपतिलमंरुविषयसौमिः अथसनाजायुनिविबुद्धस्य एवना

२८

त्याग्याथनसंख्यालिपिनरूपगदविषयकामकूलवाक्कथसनिपात्ययथविधिकल्पयद्विष्टन
पूषानरूपवाक्कथनिपन्नसूचनातगमनायाउपवासासितायाजग्रमदिदद्यायथविधिनालिख्य
महापुनिसनाविद्यावाहीक१०वद्ववानमदतीमदावृद्धवेष्टपूजामकार्षिन्॥अनेकानिचन २८
नविष्ठापानिसत्वातांदातानिदहानि,तमीनवानामासातामखजातयुताः॥हिनूय४याः॥दिमीः
दर्शनीय४यत्रमयागुवर्षुयासमन्वागतः॥००॥नितमीहात्वामदावाक्कथसर्वकामगताजग्रवाजिता

महापुनिसनावर्तनविष्टनामदाविद्यावाहीसर्वगमगपूजिताहाकस्यायीयवृजामदि४सर्व
थाःयदागकोदवानामिदामदासंगमसूत्रे४साक्षिकरुक्कामसुदा॥००॥मांभेवमदाविद्याकवचन
कत्वासंगमस॥१॥वनीर्यवृजायाभेवसुष्टयसर्वासुनाजित्यसूत्रसुस्तिनाक्रमेनदेवपूत्रमंपविः
सति,सर्वासुनात्रध्यारुवति,नवंदिमदावाक्कथयथविनात्यादमृत्यादायवाधिसत्त्वस्यमदासत्त्व
स्यमामदापुनिसनामदाविद्यावाहीधनयग४सर्वमात्रेमृशंकारुवति,यस्यैवाकारक०गतारुविष्य

२२

तिः सर्वं तथैव गतं धिष्ठितं रुविष्यतिः सर्वं वृद्धं वा धिष्ठितं रुविष्यतिः सर्वं देवमनुष्यामनुष्यवा जप्या
जमायुवा कृदा गृह्यति हि श्रुतं तत्समिन्नं वदितां पूजितं सत्मानि कारुविष्यतिः सर्वं देवा सुवगं वृद्धं किन्न
वमदा नगं धितं पूजितं कारुविष्यतिः समदा सत्त्वं ॐ स्ववा नृगं वानमा नलपुमद्वं क॥ सर्वं ध्याधिगतां रुवि २२
ष्यतिः सर्वं पदवा यमर्गं श्रुतं पदमन्यतिः तस्य सर्वं ध्याधिगतां रुविष्यतिः सर्वं देवनां श्रुतं सर्वं ध्याधिगतां
गतां रुविष्यतिः सर्वं देवतास्य सततं समितं वक्राव वक्राव गुप्ति ध्याधिगतां ॐ मानिनेन वत्सार्थं यत्राजिताम

दा विद्यामनुपदयानि सततं समितं लिखितं कायक ० गतानि कृत्वा ध्यायितव्यानि रुविष्यतिः सर्वं देवा सुवगं वृद्धं किन्न
ध्यायितं सर्वं दृष्टं प्रदूतिमिरुमांगल्यं रुविष्यतिः सर्वं देवा सुवगं वृद्धं किन्न ॥ ॥
अनुपदयदा सिद्धा सर्वं कर्म कर्तुं रु॥ तथैव ॥ ॐ अमृतं वनं वनं शेषवन्तं विद्वद्गुरुं रु॥ २ ॥ ॐ अमृतं
न विना किनिगुरुं सनरुहि आकर्षति रु॥ २ ॥ दा ॥ अथ वाजिता रुदय ॥ ॐ विपुलं जय वनं अमृतं रु॥
रु॥ २ ॥ दा ॥ ॐ रुनं २ ॥ रुनं २ ॥ ॐ रुचि वलि विष्णु ध्याधिगतां रु॥ २ ॥ दा ॥ ॐ रुदय विद्या ॥ सर्वं वृद्धं वा धिष्ठितं

४०

लाञ्छकसुनियान्तं कस्यननिधायितं ॥ मां धनधीमकुपदानिरुषितानि मदापतिमत्रामदाविद्याह
दयकवचनं तानि मकुपदानि सर्वतथागतं धर्ममूढायामुदितानि अतिदुलरुमपेक्षां ध्रुवहा किं पुनर्लिख
नय० न धावहा वाचनयनदं गता ॥ वृद्धत्यभेदतिनिहान्त्य ॥ यं ह दयवं सर्वतथागतं प्रसहिता ॥ ३०
नूमादिगाथा कृता यत्र मदुलरं यमेदा धनधी अयत्रा जिनामदापतिमत्रा अस्या नामध्वयं ध्रुव
हामपि वमदुलरुन ॥ ॥ यं सर्वपापकृतं कनी मदावलपत्रा कर्ममदा मजा मदापि हावामदागु

ला ३

॥ हा विना सर्वमात्रकायिकदवताविधं समकवि सर्ववासनी नूसांधिसमस्याननकनी सर्वमा
त्रया ॥ गच्छं दनकनी यत्र मकुमूढा दिषका खोर्दकि नहा यजा गवि द्वेषधरि वात्र का हा कदृष्टि
हानां विधे समकनी सर्ववृद्धवाधिसत्वार्यगहावनपूजा हिताना नाकः सर्वसैनोयविपालनक
ली सत्त्वाना यविपालनकली मदाशानी ग्रहहा लिखनवाचनय० न स्वाध्यायन ध्रुवना हि युक्ता
नायविपालिकसमाहा धाविधी जावतवृद्धवाधियत्रियूनयनी मदावाक्कहा मदापतिमत्रा

३१

विद्यावाहनीनकवित्युतिदन्तं सर्वं च मदायुजाया प्राप्तिः यथा दंष्ट्रास्तं जीविनविद्विष्टा किं
 मिति पूर्वपत्रिहानवती यमादाविद्यावाहनी सर्वविद्यविनायका नाविधेययेयी यदावरुगवान
 विपुलपेदसितवदनमहिकनकवल्ली कलत्रस्मिपरा सात्यु गतवाजस्तथागतदस्तसम्यक् ३१
 दृश्यथमारिसवृक्षार्यनवाधिमनुवर्धनोपसकास्यसर्ववृक्षपुगस्तवर्मवक्ष्यवर्कशिरु कामेस्तस्य
 गंवत् सर्वमावृष्टयविवात्रेभूनेकमात्रकाटिनियुतगतसहप्रयविहमं तानावृषरुयहववहादाः

कुलेवद्विविधमात्रविषयविकुर्वधधिया नाधिहितं तानापदवधवृक्षीवहनिर्मायागम्यचतु
 दिहायविवायोक्तनायककुमालदक्षातसकगवानविपुलपेदसितवदनमहिकनकवल्ली कल
 त्रस्मिपरा सात्यु गतवाजामृद्धरुहणीमास्तं यः ०० सामदायुतिसनामदाविद्यावाहनीमनसायक
 रुत्वष्टपवर्हयामास्तं समनकवृष्टिगोशाः ३५ सामदायुतिसनायामदाविद्यावाहनीमनरूपाधेव
 सर्वमेमावृष्टयायीयासोददृगुगवत्तुर्ककसाक्षीमविवनादनकमात्रकाटिनियुतगतसह

३२

आदिपुन्याधसन्नद्धवद्धकवनाधकालितखड्गपत्रधुपाधसुगवासिजिह्वलदस्मतांभंववाच
यथाहवधमानानिगच्छन्ति गच्छन्तं वधन १२ दृष्टमालाविधययनदृष्टिहानविचरुयनजीवितस
र्वदृष्ट्येदविद्यविनायकानांयैतनरुगवनाविदं ॥ कर्वन्ति नरसं सर्वदृष्टमात्रासिजीखड्गनाहिति ३२
जितानमस्तुत्वाकविस्त्रुतायदानिग्रहिता ४॥ कविविद्यावदनरुवायासम्यक्वाधोवाकनामकुः
मदानरुवाशाभूतकपुनस्तुत्वागनत्रामविचनननिर्गतानमदापुन्यदृष्टानस्मिन्नगत्रविक

लीलुतामद्विपनिदीधनस्तुपतिरानवलपवाकमाविधस्तं ४ समस्तसमकात्यलीनामः ०० नितगाह
गवतधम्मत्रिकुपवर्हितायथानवत्रिनि सर्वविद्यविनायकानमावाध्यायीयानविधंसचित्ताही
र्षुपात्रगाकः ०० ति ॥ एवं हिमदावाकधमदावेगमृद्विपात्रमिगायाफेयमदापतिमत्रामेदाविद्या
वाहीस्मलदामांघासर्वयदानरुशरुववेय ४ यनिमात्रयंति आधायपनिष्ठाना नानेवादृष्टन
सा नस्तारुहिमदावाकधनित्यमेवानस्मन्नधमनसिकर्हया सर्वकालकलित्विवा

३३

कायक ० गता कृत्वा धनशित्तया किंमिति पूर्वकृत्यता ३३ यन्यामदातगया नाह्वा वृक्तदहस्यविजि
केनचित्पुन्येष्टायनाधकृत ॥ सनाह्वा वृक्तदहस्यनवंधकयुन्येष्टायनाह्वा ॥ रुवन्नागकुंभन
पुन्यजीविताह्वायनाययिनि मृथनवंधकयुन्येष्टायनाह्वाह्वा पुन्यगदीलापर्वतविवननशि ३३
ला मृथिका ॥ निष्ठास्यस्य पुन्यजीविताह्वायनाययिनुमानह्वा ॥ तदास्यपुन्य ००० मामदायनि
सनामदाविशानाह्वा मनसास्यतवान् लिखिता कृदक्रि ॥ वाद्रवद्धाधनयनिसम् तस्यमदा

सत्त्वस्यविशाययापरावनजसिनेककाली रुत्वा खलु २ यथाधुमयाविकीर्तु ००० निः ततस्त्वधक
पुन्य ००० मामवनिश्चयनाह्वा विस्मयेष्टायनायनामासु ॥ तनावाजायकृपिनाचेन्द्रितकथयनि
तनागकुंभनायपुन्यानेनमस्मिन्पदं गजकृगुदासिन्तनवद्रुनिरुदीनसदृश्राहियनिगान्ति
यसिनासिनिनयसिन्ताह्वा नयनः ततस्यपुन्यस्येवधकपुन्येष्टस्ययायकृगुदायाह्वात्रित ४ स
मनकनशुत्रितसिन्तयकृगुदायाततस्ययकृ ४ सवृकुष्टमनसः हृष्टविहाश्रयधविगाः

३४

मानुषरुद्रशिवामः० निः। मं यध्वनिः। अस्यामदायुनिसनामदाविनाह्नी अनु लावेनतयुनष
 मं कहालीरु नदवीपमानविग्रह दृष्टं च सर्वे नमं शक्राः सतसं दहमानास्वहावीनयध्वनिः
 अथमं शक्रा विस्मयमायनास्वयुनषगृहीत्वा वहिवात्र ३ वरुणाय पदक्षिणी कर्तुमात्रदः॥ जावह ३४
 वधकयुनषे नाहनिश्रेयाशविस्मयं दहनाशितः ४ नताहृशोनाजापकृषितत्रिभिरुतकथयतिः
 यथैवं रुवभोगर्हध्वनयुनषवद्या नयाप्रक्रियः ४ नतसयुनषसं वधकयुनषवधनयाप्रक्रियः

४॥ यमनक्रयक्रियः तस्मिन्मदायुनषे सानदीनिबृदकीरुतायथा सयुनषरुद्रलग्नवनिष्ठः
 नितानिचवन्दनानिखं लुखं लुविचूर्णं निवाह्नां धृतमना नताजा विस्मयं स रू लितवदनः ४ क
 थयतिः अदा विस्मयमिदं युनषस्य दध्वनं किमंशकावहायादिमं वितर्कः॥ अथ सनाजानयुनष
 माद्रुशेवमदा कित्वा युनष जानानिषा युनष उवाच नाहमदा नाजकिचिदपि जानामि अन्धम
 दायुनिसनायामदाविनाह्नी ध्वनयामितस्य च वं यहावः॥ नाजा आह ॥ अदा आश्चर्यमिदं म

३५

हस्तदाविद्यासुतापितामोदनीमृदुस्यसर्ववृद्धेवधिश्रित्तावधीसर्वसत्त्वानां सर्वदृष्टव्य
 मोचनीमदाविद्यामदागंगासुकास्यमोचनीहापिताकावृद्धकैलाकनाथमदावागनिः
 वावधीतमावाह्ययहृष्टमानसंनमदायतिस्वाममदाविद्यावाह्यपूजितामानिताश्रुतिनंदिनात् ३३
 स्यपूज्यस्यसद्वत्कृत्वाश्रुतस्यजनपदस्यपूज्यमन्नगवजंरुतायामरिषकोदहृष्ट॥नृवंदिमदावा
 दः॥मदायतिस्वाममदाविद्याह्रीसर्वजमदनीपूजालरुतेजननिवमणीयासर्वदृष्टविहृष्ट

सत्वे॥पूर्वमितिपविहृष्टमदायतिस्वाममदाविद्याह्रीनकविहृष्टपतिदंनमः॥तस्मादवधकाय
 क०गतारुविद्यनिरुत्वाध्वयितयाश्रुतिमदावाकृष्टयनरुष्टयमदाविद्यावाह्रीसुपुष्टासं
 तविधनंनलिखितया॥अथसमदावाकृष्टवतीव्यहृष्टमनारुगवकंयहृष्टमशुलकंनारिहस्य
 पुष्टमानहृष्ट॥किंहरुष्टनरुदकविधनंनयमदायतिस्वाममदाविद्यावाह्रीलिखितया॥रुगवानाह
 ॥१॥मदावाकृष्टत्वंमदंवरुष्टंसर्वसत्त्वानुकंपयायंतसत्त्वसुखितारुवहृष्टमृष्टमकर्मसकर्म

३६ ॥ याभिनाता कृपा शार्थस्त्री धाग रुसमूहव ॥ रुविद्यतिवसत्वा नादानिदवधनाह ॥ उयवाः
 साभितरुत्वा नरुण पुष्यसमनं वृद्धयुजापनाहत्वा विरुमन्ययवायं कनूधमं भित्तविरुनमेखा
 वापिसमभित्त ॥ ३७ ॥ दिनाभानयनश्चापिसर्वसर्वसत्त्वनिवृत्ति ॥ सनांत्वा चन्दनकपूत्रेकमुनीशी ३८
 लनचन्द्रविदम्बुदियाहृद्यधुयितानिचधुयने ॥ गनीमकुलकंकला मृगमयसमभित्त ॥ पुत्रु
 कंराश्च ३८ पयकममधमकुले ॥ पुष्यधुयाश्च गन्धश्च दातया महाहना ॥ धुयनेचन्दनचैवपु

कागुनूतयेवयपयक ॥ कवागुनूतश्च दातयानिविधनन ॥ नानाविधानिपुष्यानि यथाका
 वयथाविधि ॥ सर्वपुष्यरुलवीजगन्धश्चापिसमभित्त ॥ ३९ ॥ दत्तमात्रिकदुगन्धेश्च पावकपा
 यगादिहि ॥ पुनरंशुलिकंलाश्च लक्ष्मणासमंगलाना ॥ रुपयंशुवादिदुपयकममधमकुले ॥
 रुपनियासनावावकानेषुगन्धयुत्रिना ॥ कीलकश्चापिखादिवाहृदवैष्टितापयकगंगिकसुगनवैष्ट
 यित्वाविद्वरुह ॥ समलागनमायेतानिखन्यात्मकुलादिहि ॥ ४० ॥ वंलिखंरुनचपदीष्टुसिद्धिमात्म

३३

नशा शुक्र हा जन रुक न लिखित वासुसिना ॥ पट्ट वा वस्तु रुज या न्युवा यत कु र विरु लिखि श्रीषू
 पूजा थी सम रंग नान नवे ॥ मेध दान क कुर्यात् सर्व लंका नरुषित न यूर्ध्व तथा या न वा म द ह न धन
 येन ॥ कार्ये ४ य म निर्व र्ण सो प सरु लिख विरुषित म दि हो न स व र्धु क नाना वस्तु विरुषित ॥ न स य ३ ॥
 सिनो नि कार्यो दि सिध्द क नाना हा ही य ४ ॥ नाना नू या ध्रु क र्हा मू डा विज्ञा च य मि नी द्र य य मः
 मू थ वा वि दि च त्वा त्रिय क्वा लिखे न् ॥ य म नाना च न थ क र्थो कं हा वा दि सम न्न न ॥ स

नयमन २

पुष्पि न य म कू वी न स द भु म ट व द्ध क णि गूल प म कू वी न ज ष का र हा य द व द्ध य म कू र्थो रु था म
 र्थे य न स म न्न न ॥ स र्व क्क य म कू वी सि न म व च्छो ख य म न थ क र्थो न स र्व न वि धि वि स्म न स र्व न वि धि
 विज्ञा नि का न थ दि च रु हा ॥ व र्ज यं दाल नू या दि य न वि रु प दू षा नि ॥ द व नू य क क र्हा नाना
 लं का न रुषि न हि कू व ज ध न क र्थो न दू र्ण न ज नि न न य न व र्ज न ध्र म दाना जा च रु पा र्थ व य म
 लिखे न् ॥ वा म हा स व नी ले ख रु णि यं म द ध न ॥ गू ड य म दा सो षा व च्छ क स्वा मि न स मा लिखे

36

[illegible]

३२ अति ॥ निश्चया विदितानि लिखं भूदृष्टं न कर्मदा तसमा तस्य च यत्नेन धानय कर्म निमान
 व ४१ सर्वसिद्धि कत्रह तमागं ल्या पायना धन प्राप्ति यत्र मरुत न खरु वत्र न यथा ॥ ला कं ३३
 न पत्र मसो विपत्र ला कं यत्र मरुत यत्किं वा ना दो हूत न मरुत स्रवा लय ॥ अं वृद्धी यं गुरु नम ३२
 विदिष्ट कुल समन ॥ क्रुति यं विदिष्ट पुत्रा क्रुति यं विदिष्ट वन ४१ अत्मन स्य विद्या सोख क्रुति
 त्यस ॥ वै सें वृद्धं न दक दि पुत्र स कंध ४२ य कीर्ति न ॥ यत्पुत्र समवा प्राप्ति यति स्रवा धान कानन

४१ नत्र कदात्रा पिथि विना ४२ स्वर्ग द्वात्रा जगत् ४३ ॥ सुख संपर्हि संपन्न ॥ रुविष्यति मदा मति ४४
 वृद्धाश्च वाधिसन्वात्रा ज्वा ४५ यत्किं निख ४६ ॥ कायं न सुख सपन्न ॥ वल न मदा न ४७ ॥ यथा ४८ ॥
 जिनेन्द्रा कव कवर्हि रुविष्यति ॥ आस्वा सन नद वा ना जा धन दृष्टं न सा रुविष्यति न दम सो
 अत्य विद्या मरुति ना ॥ ना सीरु न निम मृद न विरग ख दान न म मि ना को नो लम ल द अ पि दू न ग
 रु मिया य को द र्हा ना य ध ना र्धे व ध व दान द व सर्व न गु न गु द वि वा द ४९ द का ३ ग्नि रु य न

४०
 ध. मृगयाज दयाना गमयाधयश्च सदा नृणां ४१ न सर्वनरु विष्यन्ति येषां विद्या स रुषिता
 ॥ सर्वमथ सर्वमात्रे श्रुतं वक्रा मितं त्वगं ४२ पूजनीयं रु विष्यन्ति सर्वसत्त्वा रु मादित ॥
 ॥ मदा विद्या माहू आर्यमदा पति स माया ४३ पथम कल्प स माय ४४ ॥ अथ ४०
 मा विद्या धनस्य वक्रा विधान कल्प या त्या त्या मित सर्व सत्त्वा नृकं पुया ॥ यं न वक्रा विधाने
 न मदा सिद्धि र्हु विष्यन्ति यजत यक ना वक्रा रुष्यत ध्यान मद्य ४५ निरुय निरुय न न चैव सव

प्रदनिवा वध ॥ स नरु पं न कल रु कर्म स कल रु दन ॥ द रु क द ल घित न चैव सव म रु ग
 हो रु ग दू यं रु त दू लि खित न चैव का र्वा द र्य न दा नृ ४६ ॥ वृ शु म रु रु न चैव विष रु क रु
 धा य न स र्व न स्य पं धा म्या नि व क्रा धा न र्य मं ४७ य ४८ ॥ प र्या गि ना विष र्य रु या विद्या स म नं ति
 कु मं त ॥ य न व क्रा दा नृ ४९ य पि प र्या मि ना म दा रु य ४९ स र्व मं य ल य जा नि प ति स मा य व र्जि
 ना ४९ वृ द्वा न रु नि स र्व रु द्रा वि स त्वा श्र स न ना ॥ व रु मि प र्य क वृ द्वा ४९ व का श्र म दा रु या ४

४२
 द्वैवकाकूर्चकितिलगं ४ सासमनासूर्यश्रवकाविष्णुमदध्ववा ४ जर्मश्रमानिडे हे श्रवलदः
 वीमदावल ४॥ पृष्ठरुडामहावीवदावितिचसपृष्ठिकापांवालपांनिकश्चेवकार्हिकयोग
 १६ श्रव ४ श्रीवपिचमदादवीवेगवदासखती ॥ सखतीकटदकीचतरथेकजटापिचधंन्याश ४२
 नामदाहागावकाकूर्चकुनित्यस ४ मजापुजजननिगारुक्तेनदिवर्द्धनीनकयमरुमीगंयया
 वजीवरुविषयति ॥ नवाधजयदानित्यशुद्धसंग्रामहेववज्रनयावनदाहवन्निदेववाधर्म

निश्चिता ४॥ अथपापविनाशकुलितनादवनस्यमि ॥ तथागतविलाकृतिवाधिसत्वस्मथेव
 त्र ॥ र्यधववर्द्धनस्यपुष्पमायुश्चवर्द्धनधनधन्यसमृद्धिश्चरुविषयितनसद्य ४॥ सखसापि
 निमेषावीसखश्रपतिवृधमं ॥ अथ ४ सर्वेदाकनासर्वकुतगरेवपि ॥ संग्रामवर्द्धमानस्यज
 यंरुवतितिलगं ४॥ विद्यायासाधमानायामित्रतावकाजुनहवा ॥ सखसाधयमंविद्याविः
 ध्नस्यनरुविषयति ॥ सिधमिसर्वकल्या ॥ श्रपविष्ट ४ सर्वमकुलपुंनिकसमयहानमोरुवत्सर्व

४३

उजातिषु वैश्वसिकसहस्रजिनानांगुदाधनरदोसर्वमंगलसंपूर्ण सर्वसिद्धिमनायथ ४१ अस्या
 लिखितमाज्ञाया सर्वसौख्यं वसन्धति सुखकालक्रिया कृत्वा रुवे स्वर्गपनायन ४२ विवादकनद
 वेवविग्रहपत्रमदा नृणां सर्वरुयविनिमक जिना कवचनयथानिरुजातिस्मना रुवन्निजागो ४३
 जागो नमो य ४४ वाजागो वसगमनस्य सा नृपूत्रमदा जना ४५ सामानेश्वरुवे निरुसाधुहिलाक
 समम ४६ सर्वेषां कृपिशा रुवन्निशं देवा उचमानुषा ४७ वक्रा नृस्य कविष्य निदिवा वागीवनि

ल्य ४८ अयमकपदा सिद्धा सम्यक्कवुद्धं नराधिना ॥ नमो वृद्धाय नमो धर्माय नमो संधाय ॥ न
 मो रुगावतं ४९ कसूनयं सदा का वृद्धा का शतथा गताया रुक्मं सम्यक्कवुद्धाय ॥ नमो समकं ल्य ४९
 वने कां नमस्कृत्य वृद्धसाधन वृद्धयं अहं मिदानी यवक्रामि सर्वसत्त्वानं कं पया ॥ ५० माविशामहा
 मंजा महावल्लयलाकमा ४९ यस्या रुषिकमाज्ञाया सधिना ४९ वज्रमाया धनेवा मालाश्च मावकायाश्च
 ग्रहा ४९ सर्वविनायका ४९ विघ्नश्च सन्निधं कंचिद्विरुद्धा विलयगता ॥ तथथ ५१ ५२ गिनि २ गिनि

धवलिधवलि धा कविदमिजिजामिति दहनियवनी पावति मर्दनिस्रवरुल स्रवलमंरुदीनमथा
 रुष्टविदावतिविधायति महामदिल निगंठनिगंठरुंमहिनि दान्म वक्रवाकिनि हलं हालनिश
 वनी सर्वथाधिदवधी वृत्तिश्चुत्तिनिश्मदावृत्तिनिनिमि निमिधविजिला कदहमि जिला काला क ४३
 कवि मंधा रुकवैवली कमिवजयव ३ पा धीमंगवख ५ वक्रविशूलचिन्नामधिमहाविश्राधानि
 धि वक्र २ सर्वदूष्क नगान सर्वदूष्क रुय ४ सर्वमनूष्य रुय ५ सर्वथाधिरु वज्र वज्रवतिव

जयाधिधनेदिलिश्मिलिश्किलिश्विलिश्सिलिश्वलश्चनद सर्वगजयवदसादा ॥ सर्वपाप
 विदावतिस्वादा ॥ सर्वथाधिदवधिसादा ॥ समुद्रवतिस्वादा ॥ सर्वधेनु रुयदवतिस्वादा ॥ स्वस्ति
 रुव रुसर्वस्वानांस्वादा ॥ धीमिकविस्वादा ॥ पूष्टिकविस्वादा ॥ वलवर्द्धनिस्वादा ॥ ५ जय ५
 जयवतिकमलविमलस्वादा ॥ विपुलस्वादा ॥ सर्वतथगगमूलस्वादा ॥ ५ रुविमहा धीमिस्वा
 दा ॥ ५ ५ ५ रुविश्चवतिगगगगदयपूवति जायु ४ सधनधिवलश्चलवतिजयविशरु

४६ हं रुद्र २ स्वाहा ॥ अस्य कस्य चित्तमदा वाक्क ए जून या गतम गतम मूला विद्या मरु पद धा त्रिधा वक्राः
 कृता गुप्ति ४ पत्रिणा ध पत्रिग्र ४ पत्रिपालन धा नि स्वस्ति यन द ७ पदा न मरु पत्रिदा न विषदूष
 ध विष्ठा धन कृता रु वं रु स्य पत्रि धा य ४ नैये वेव विवर्द्धनः सति न सख च जी वति स्मति सपन्न ४
 रुवति ७ वा न ध मा ण ध वा व जा सम गि न न वा म्र काम व धा त्म दा या धि रि श्र प त्रि स य नः सर्व वा
 ग वा स्य प ध म्य ति दी र्घ ला न व मा र्ज न मा र्ग ध प स म ग रु ति दि न २ स्वा धा य कृ या न्म दा पा हा

रुवति ३ आ व न वी र्य पति ता न स प नो रु व ति सर्व क्म वि व धा नि वा स्य नि य त द व त द नो या निः
 नि व व धा ध प त्रि रु य ग रु ति स र्व वृ ह वा धि स त्व द व ना ग य क्ता दि नि वा स्य अ आ व ल वी र्य का र य
 रूप स्य नि स दा पी ति व द्वा रु वि ष्य ति अ न्न मा म दा वा क्क ए ०० यं म दा वि या म रु प दा व क्ता नि र
 र्ग धा नि ग ता स पि म् ग य रि धा रं षां क र्धु पृ ट ति य ति य नः स र्व ३ वे व र्द्धि का रु वि ष्य स न रु वा या
 स म्य क र्म वा र धा ४ ॥ क पु न वा दा य ०० मा म दा प ति स वा धा त्रि षी धा र्ध कू ल पु ण वा कू ल दः

४७

हिता वा, हि दुधी वा, डपा धका वा, डपासिका वा, बाजा वा, बाजफुला वा, बाजमाणा वा, बाकः
धमे वा, रुजिया वा, तदंशो वा, ४ र्य कश्चित्सकृत्तथाप्यन्ति, ५ द्वासागो ववर्धध्मा धशेन लिखि
ष्यन्ति, लिखापयिष्यन्ति, धा वयिष्यन्ति, वा अयिष्यन्ति, गो वधमनसा हा वयिष्यन्ति, पत्रे यश्च ४१
विस्तरेण स्य का धयिष्यन्ति, तस्य महा वा, कदा जहा वका वम वधानि सर्वथा न युक्तिका क्रित
यानि, न चास्य का शम हा वा या रु विष्यन्ति, तग्नि न विषयीकृतं ग वन का खाद, न कि वध, न

सकृत् कर्म न चूर्णु या गत न चाग धूल न धी वा वति, न क्राहिक दूति यकं, चार्थ क स फंदिका वाक
वा ३ न कि क मिष्यन्ति, ससमृत्त न व स ख स्वस्ति ना स्वर्ति पि, ससमृत्त न व विवृष्टं ॥ महाप विनि वा
धला रु रु विष्यन्ति, सन रु ग स रु ध मा धम रु ता ध्व र्य या पि ग रु ति, य रु य जा य रु तं रु २ जा गो जा गो
जा ति स वा रु विष्यन्ति, सर्व सत्वा ना रु पि या रु विष्यन्ति, वदनी या श्र स युं ग ला रु विष्यन्ति ॥ सर्व न व क ति
र्य र्ग्या नि गत, ग्र रु ध य मो प हि त्य श्र य नि म क ता रु विष्यन्ति, यथा वा क म लु ल सर्व सत्वा ना ग था ल

४८

संख्यावरासकवाति यथावदुसमुल्लेखयकवति सर्वसत्त्वानां कायपक्षादयति ॥ तथा धर्मो मृत
 न सर्वसत्त्वानां विरुसम्मानानि पक्षादयिनिष्यति सर्वयकसर्वदुष्टरूपयकपिमावात्मादायस्मा
 वजाकिनिग्रहविघ्नविनायकादयः सर्वस्यमहापतिस्वामहाविद्यायकावेन नष्टकाविदुना ४८
 कुरुम् ॥ उयसुकमतावृत्तथावयमहाविद्यावाहीस्मन्नककथ नगर्भेवांसर्वदुष्टत्रिडाविद्याधन
 वक्ष्यह्लाद्यवधविधयंरुविष्यति ॥ अस्यानवनकावेनयदुक्तमहापतिस्वनायामहाविद्यावाहा

४९॥ नवास्यधरुहयकविष्यति अनन्तिकमहीयकविष्यति सर्वधरुगारहीनाज
 महावाजमहामात्रिवाक्कधगंरुपतिरिश्च अन्तसीवक्ष्यहापिवधकपुनर्धनसुहिता
 नापिधमुहिखउखउगंरुनिपांमुमरातीवन्नहीर्यकंनस्मिश्चसमयसर्वधर्मज
 स्याहिसखीरुविष्यति महावास्यस्मृतिवलरुविष्यति नकाघुयनमक्षवापविशपा
 पताहीनरथीकनूवेवसर्वगुहाविवर्धन सर्वमंगलकवीरुवा सर्वमंगलनाहीनीसख

॥ धीकव १

40

दधिसदिकु॥ ॐ महि वज्रं हृदय वज्रं माव सो न्य विदा वधि हन २ सर्वं कृतवत् २ सर्वं सत्त्वाना कृतव
ज २ वज्रं गार्ह नाधाय २ सर्वं माव कृतव नानि हूं हूं रुद्र २ सै कृतव स्वाहा ॥ वृद्ध मैत्री सर्वं कल्या नधिष्ठि सर्वं क
मवि वधम ननय नय शं स्वाहा ॥ तदिदो नि सयुव कामि मा पुत्रा धा धि किं न स न व उ व स म लु ल क यो म ३०
१॥ मय स म वित य क रं गि क वृ न वि र्त्त शं स लु ल रु व रु व स पू र्ण कृ ता श्र ह्य य न वि धि ना वृ ध
४॥ पू ष्या १६ व कि रं रु धू य शं हू य म ल म व लि क र्म कृ वी त म हा सा ह य प्र म ह न पू र्व गं ध पू ष्या दी न

दशायागविधानवित्॥ चतुस्रुद्विकाराख्यं सर्वत्रयद्विकारं॥ सनापयित्वा चतुस्रुद्विकारं
 कुसमाकृतं॥ रुग्णान्धनलिपं नूलिकांगपत्रं दशैतन्मध्यमं तुल्यं॥ पूर्वमखनिषयतमं नाविशाम्
 दाहनेन॥ सयसोऽयसो वायिनक्राकुराविवरुहा॥ अरुदस्यगताथयेवावाश्चाथेकविंशतिः
 उदाहरेदिमाविशोसर्वभागयधाम्॥ रुयश्चसयवावानर्तवलिकं रुक्मसमन्वितापश्चानिव
 दयं स्रुद्विकारलिपुश्चयथाविधि॥ ००॥ एवं दक्षिणार्धपक्षिणं सयपुत्रं गुरुयक्षिमानाया सयैव

नृत्तं वा यामथादिगिवा ज्ञेयं उच्यते स यमेव कृतावकाहविषयान्ति ॥ एवं कृतं विज ॥ १४ ॥ सर्वदृष्टव्यम्
अमेराजवाचकसंयाख्यानामकसिद्धनतायिना ॥ नास्यकपस्यापवाकात्रियकाविद्याविधाशुक्
॥ नतस्यमृत्यूनजवाननामनत्रपिशाजाशुविद्यागलावनत्रपिशास्यस्यदिसकपयागरुवंविद्या ३॥
गलाविक्तविलसन्कमि ॥ ४ ॥ जमापितस्यवनधर्मवाजकविषयितियुजशंसामोत्रवनकथप्रिषयमंदवपूवदि
गच्छति नरुति कर्ममंदनकविषयिनि ॥ तमाविमानेसुवद्रूपकात्रेसदक्षिकोयमित्सुबालयशुह ॥ ५ ॥ वट

नकसानवमनूय यक्रवा क्रसे ४ सपूजितगणस दाहविषयनि ॥ वज्रपादोश्च सद्रुद्रः ॥ श्वेतसंघीयनि ॥
 दात्रितीयांशिकः श्वेतलाकपालमदक्षिका ॥ चन्द्रसूर्यनक्रगोशं ग्रहायनमदाबुध ॥ ४० ॥ तनसर्वमदानाग ॥ द
 वता ॥ अथयसुधा ॥ असुवागवृजगंधर्वा ॥ ४१ ॥ किंनरामदावग ॥ ४२ ॥ नित्यानूवक्षानक्रार्थजस्यविद्यामदाव
 ला ॥ लिखिता ॥ अथयतपाहोमदावाहोवधमदावलमदक्षिकामदमीलरुमं पूजासंयुदं वायिनि
 त्य ॥ ४३ ॥ ति ॥ ॥ आर्यमदाप्रतिमवा ॥ मदाविशावाहोवक्राविधनकलपाविशाधवलीसमाय ॥

५२

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
मं कास्मिन् समसं रुगवान्वा जगद्वि
यद्गुणं च नैव तन्मयं रुगवान्वा जगद्वि
हि कृष्णं वा तस्य श्री वा आशुष्मता च धा
रते नैव ॥ आशुष्मता च महाकाव्येन



महाकाव्येन ॥ नवमं स्यात्किं न
द्वयमित्येव कृतं यत्तद्विदुषां लब्ध
होति कृष्णं तस्मात्तद्विदुषां लब्ध
लिपुर्गं धा ॥ आशुष्मता च महाकाव्येन
॥ आशुष्मता च महाकाव्येन ॥ आशु

शुष्मता च नैव दि काव्येन ॥ आशुष्मता च नैव दि काव्येन ॥ आशुष्मता च नैव दि काव्येन ॥
च महाकाव्येन ॥ आशुष्मता च नैव दि काव्येन ॥ आशुष्मता च नैव दि काव्येन ॥
शुष्मता च नैव दि काव्येन ॥ आशुष्मता च नैव दि काव्येन ॥ आशुष्मता च नैव दि काव्येन ॥
शुष्मता च नैव दि काव्येन ॥ आशुष्मता च नैव दि काव्येन ॥ आशुष्मता च नैव दि काव्येन ॥
तस्मात्तद्विदुषां लब्ध
होति कृष्णं तस्मात्तद्विदुषां लब्ध
लिपुर्गं धा ॥ आशुष्मता च महाकाव्येन
॥ आशुष्मता च महाकाव्येन ॥ आशु

ग्रंथनरूपपर्वकवर्तनोषधिरुनदुगसवाङ्गदं कृपकदागवेत्यस्य नापि मे पुरुषद्वयानिति चन्दस्य यत्र
 हनस्यति ॥ कथं नाभं कससायव यमं ववपादुपडवाता ये हे स्य नाप्यविश्वमांति ॥ धेमे रुगवानस्य ॥
 ५४ वृषमहर्षि मस्कं नमकार्षितु ॥ यथा वृषे नमः क्षिरिमस्कं वधामिस्तु न न जि सां ह प्रमदा साग्रलोकः ॥ ३४
 काकुत्स्त्रेण विहाय दं वमानुषासुत्रलोकपुष्पाश्रयानि पातयामास ॥ कथं वक्ता सदा पतिवक्तका
 यिका न दं वासुकं दं वानामिन्द्रा देवानां कृणायति श्रुत्वा न श्रमदा वाजां कायिका न दं वासुकाति

क्षतिरिश्म मदायकं नायकशा क्षति दं मदायकं न गन्ता दानि वी न स युरिका सपत्रिवा वा श्रुति का ना
 या वाणी केवल कलयगं ह्वकृत् पर्वगं स्वकं न वधु न ता वं दं दाने दं ता स रं न रुगवानस्य नायकान्द
 दुयं सकृन्मरुगवत पादो सिवसा वंदित्वा ग कामं स्तिगा न कवा रो कस्व रे कर्षदं न रुगवं न र्थं गे म हि
 वरिष्ठं नृणां दिक् कावन निरा स सपुत्रं चन्दु य हा स्व नृणां श्रीर्धे मधव दी व वत्ताना मा कवा श्र
 सि सिंदवा वाधविका न्द मरुत गवय कर्म ४ पर्वक ता स वधु स्य निस्कं जातु न दस्य वा चन्द्रा वा विमला वा

५५

सन्निभकृष्णनिपुणसूक्तश॥ मध्वध्यावकसंधस्यलकृष्णो समलकृष्णश॥ लोकं सदवकाहसमूनिभ
वधमागतश॥ मनुष्यानादिताथशत्रुकाकानुदयोस्तिता॥ सादश्रुपमदनिभुयसर्ववृद्धपकाः
शितश॥ आचक्रवादपर्यन्तस्यमाकधमनुरुस॥ नमस्कृत्यपुनश्चावीन नमस्कृत्यपुनर्हमश॥ कृतां ४३
जलिनमीस्यामिधर्मवाजमहामुनि॥ अथरुगवानमदरुणिहीतावं नधिवाच्यन्तुवमहावाजा
मामरुयामास॥ नेतकमहावाजान॥ पुनिपुणययुषमातघनिषदो अस्मन्मयनिषदविह० यितय

ममन॥ ततकस्यहना०० तिदिमानुषलोकवृक्षागयादाधर्मस्वखागाव०० दंसमिन्नवाज
मववायवृक्षाकगवलालो कडयशर्म॥ यत्वं कवृक्षाश्चरुस्म॥ भावकाश्च अस्मिन्निमवला क
कृष्णलमूलानेवलापेसदको दानिहारदेवनिका यडपपशर्म वाजानापिरुवन्ति चरुनगचरुदी
पेश्ववाचक्रवहिन॥ समुद्रपर्यन्तमहापृथिवीमनुलधर्मनवार्यकालयमि॥ गंधाकपुण्य
हप्रहवृक्षसूत्राधवागवृषीतां महानगलवंगधविष्णयवर्षेन्यपमदकाना सफनत्तसम

न्यागत, नागशुषमाकविदात्रेहविद्विनामैवदृषानास्मिन्नाकनायलिकविषयतिवाअथवे
धमनामद्वाराजोअत्युगम्यासनादेकासमरुवासेगकत्वादक्रिदाजानुपुलपतिहाययेनक
५६ गवाधेनाजलि कत्वाकगवतमेवतमस्यमानाकगवकमेवदवाचन॥ एतकिरुडकिरुगवानसमा ४६
कमुदावादिगुरुथनरुवनानिनगवायानविमानकटागभवस्यनियुहतात्रधगवाकुरुहस
चित्रविविधविविधपदमद्यममत्रमूकजालयत्रिक्रिफानिधूपद्यकि कानिधूपितापिपूष्या
*ति१

वकीनधनिशेषवयनात्रादीनसदुपनिवृत्ता४संपुरेयेपंच कामगुरुहे समर्पिता समन्वागीतावि
हनामि४॥ गवासमाकरुडकरुगवानपुमथानापमादविहानिधविहवतायत्रिषद४समन्वादहादि
शोपानशोअनानिमार्गशोधयकिपलायमानाशुपूत्रषदात्रकदात्रिकाजानगरुखननिर्यग्धनिग
नानामयिचपादिनामाशोहननिविहययकिजीविताहापत्रायकिमेवयरुदकरुगवनी३निकचकुष्म
यत्रिषदापूत्रत४स्वकस्वकानापत्रिषदलकृदादंशशिष्यामिथास्यत्रयत्रिषदाशायहाविषयमिगगत

५८

नः समवतः समिति स्वाहा ॥ धमं रुममसर्वसत्त्वानां च सग्रहां सर्वरूपयुद्धविबुधकस्य महाबाजस्य
 नामनावलने सूर्याधिपते नवस्वाहा ॥ अथ विंशत्युपाक्रमदा बाजाः ॥ अथ गन्धार्वा नादका समस्तवा सगक
 लादक्रिडा जानमकुलपृथिव्या पुनिकृपाय नरुगवानसं नां जालिकलाहगवन्ममं तदवाचतु ४२
 ॥ अथ समस्तपत्रिषदा रुद्रक रुगवांता गसुवर्गुगृहगृहीतस्य ॐ ह्रीं नृपल रुध्रिं कर्मस्य सग
 वादि सी वं ग्रीतमं वच विदुगं नला लास्वपमं नव पुनश्च वरुवाकवमं सुना वं पनध वमं तथा पु

न नखान विदं यतिमदी विमति वादति ॥ रुममकुपदा नै सिला कताथ ॥ १८ ॥ हिमं ॥ स्या शरथ द ॥
 कगमं ककमहि ककशो ककमी ककुमकुयं ककमं कुरग अगलेन गलेन ककुमं ककुमं अलुकं
 कलमकं कलले ॐ न व मित्र धीनं अग नृवति स्वाहा ॥ स्वस्तिं रुममसर्वसत्त्वानां च विनृपाक्रमस्य
 दा बाजस्य नामनावलने सूर्याधिपते नवस्वाहा ॥ अथ रुगवानसं वदवसर्वा वत्या पत्रिषद पु
 वग ४ सिं रुना दनन्दति दहावल समत्वा गमी हं व उव वे धा वद पय्यमु दा वमा र्थ रु सम्यक सि

६०

हनादनदामिनिः प्राम्नाप्रवर्तयामिः मात्रानिर्जित्यकं नमसं न्यवत्तवाहनः॥ वक्रायेसर्व
विशाम्नाप्रवर्तयामिः प्राम्नाप्रवर्तयामिः प्राम्नाप्रवर्तयामिः प्राम्नाप्रवर्तयामिः प्राम्नाप्रवर्तयामिः
वज्रधनास्रजमंरुदुःसाधैविनजः विद्यमं वनाग्रपाफः अवरधधर्मयुक्तं दिगिविद्युष्टस्वाहा॥ ७०
सस्त्र्यंरुसर्वस्त्रानां वनधगनस्य नामनावलनेधर्माधिपतये नमः स्वाहा॥ वृद्धस्य वनधनं स्त्रुत्वा
लोकेपालाश्च रुद्धिगडलुक्ताहीनसविम्भसः पांजलिकता॥ शिष्टाहूतगधस्रजविनिष्कृतिविन

लीकताऽपलायनादधदिर्धमदानागमसूदीनयं॥ नमविदित्वामहा राजानस्मिन्मुफसम
दाहनेन॥ अहाविशामहासाहस्यमर्दनीः जस्यागस्यनिरुक्तानिश्चत्वा वृद्धस्य हाविताः यथाप
कलितावक्रिन्नसियागं लयालनः॥ कूलधनासमाविद्याग्नीमभनपकागिता॥ जीर्थं नन्नरिम
नमलिषिताय सुहाविताः नस्यानवृक्ताधयेनजं स्रुपुणानरुतिः अग्निपुक्तालचित्वागुष्टहीत्वासि
नपुष्यपान॥ घृतमक्रितसशक्तं नपुष्यपानं॥ हृष्टुर्ध्वं वरुदिदृक्किपं ववरधधकः य

६१

दिक्रियन्नमूत्रं यन्निदं श्वत्वा सृष्टा विना रुक्मकुल्लिगा सर्वो यथाग्नीद्युगसर्वयान् ॥ क्रमचक्रं नल
पस्यमि यक्रदधुनेतर्जिता ॥ १॥ मेषान्दिक्रिद्यो ॥ श्वेषु मदागन्दा रुविष्यमि विजुता रुविष्यमि यक्र
वा ॥ गनपिठिता ॥ १॥ क्रुक्कवती वाजधानी नगं रुक्मिकदावन ॥ निवे ॥ १॥ नन्नयध्वमि कुर्वे नस्यय ॥ १॥
साविनः ॥ आसनच नलपस्यमि रुक्मसंघासमागने ॥ अन्नयाने नन्नदिगाजायगे यक्रमधुलेमदासाह
प्रपमदनि सृष्टया जक्रता नवर्हं ॥ १॥ तस्यवजधनकृष्णमृत्तानसृष्टयिष्यमि ॥ कर्कशकूत्रधावजि

कागस्यदृक्कस्यमि लक्रनवा स्यधमनक ॥ १॥ ना ॥ १॥ कृष्णस्यमि ॥ १॥ पया दयमि चकें ॥ १॥ मस्रकलाः
हमृगनकीने नहदयवा स्यपिठयं ॥ १॥ मुखगधिवर्गया स्यपूत्रयमृक्च ॥ १॥ निग विद्यापा ॥ १॥ नदधुनस
दासंसावगमिन ॥ १॥ तं वसंसावे चक्रमधुले ॥ १॥ गिया विस्मसदा वाज ॥ १॥ सगं सर्वान्दधमि निनथा समाः
गतागं पिसर्वविद्यापा ॥ १॥ नकर्षिता ॥ १॥ वे ॥ १॥ म ॥ १॥ मदा वाजा ॥ १॥ णिता चक्रगां जलि ॥ १॥ चकाहिगं विजत्र
॥ १॥ यष्टिका च नसनि ॥ १॥ ॥ १॥ कपशानकि व ॥ १॥ ॥ १॥ कनाथमहामूने च ॥ १॥ यष्टिसह ॥ १॥ या विचक्रा नांम

६२

कुक्षत्रिदश॥ निरुगाड रुवदिग हाग पिउ यनि ड रु मादि ६। कर्षादपु प र ह ध्या मि ला क ना थ स्य सम
ख ॥ स्या शरथ द ॥ ख र्ग ग रु विव रु र ह य क ना जान व रु व न पा ता ली म य र्व म ख वा र ग रु कुटी ६।
ना र गे न का र्ति व र्ग व नि स न ग व र्ग विरु काने स स्य यं रु मा स य नि वा न स र्व स त्वा ना क रु रु न स्या ॥ १२
दि सि स्वा हा ॥ वृ क्ता वा यं ग म क श्र लो क पा ना म ह धे वा ॥ य रु स ना य न स र्व हा नि मा न स पृ णि
का ॥ मा पु ष्या व ग भ्वा य प नि ग रु रु म मा रु मि वा यं हा मं ज सा मं वा जे न्ध यं न य न न च नि रु ना स

व ना ग म व स स्यं रु म म स प नि वा न स र्व स त्वा ना क स र्व रु य त्वा हा ॥ न म स्यं पु नू षा वि न न म स्यं पु नू
षा रु म न म स्या मा रुं ज लि क ना ध र्म ना ज न मा मु र्ग ॥ ध र्म ना हा यं न ना जा पि स न रु मा ज लि नू र्दि न ४
रु रु वा मि नि वा न रु ल वि क नू म ख न ४ मा न का कि ल नि र्घा ष मं द द नू रि ग र्जि न रु ष रि स रु द्रा
नि ग ध र्वा वा रु सा म न नि श्रि ना पु र्व दि ग हा ग पी उ य नि पु न स्त्री मा द पु प र ह ध्या मि ला क ना थ
स्य सम ख वा स्या शरथ द वा ध न वि धा व वि वि धं स नि रुं ज नि वि ध म वि किं पु नू ष ४ क न धा व व नि रुं ध
ति १

६३

ब्रह्मविधिः शुद्धव्रतः क्षायावति स वा ग्रीष्मनि स्वस्थं शुभमसर्वसत्त्वानां च पूर्वस्यादिमि स्वादा
वृक्षावापेष्टं धाकश्चला कपालामदं ध्वना ॥ यक्रुषंतापनयं सर्वदा विनिवस्य पुत्रिका ॐ मां
पूष्या नगंधा वयमिगं क्रुं शुभमाहूति वीर्यनमं जसा गंधां मे ध्वर्यन वनन च निदना सर्वना गंधां ॐ
मम सर्वरुप पदवयः स्वादा ॥ नमस्तु पुनूषा तीव्र नमस्तु पुनूषा लुभ नमस्तु मम दंडालिक नाध
र्मना जनमो मुनेः नाजा विवृट् कश्चापि पां जलिक नगा स्तिरु सर्वरु सर्वदही वसव वादिप

मदं क ॥ सर्वसं सयं कृता न सर्वला कवि नायक ॥ ननु सखि सदृशा तिकुं का भुपे नयुत ना ॥ नि
धाय दक्षिण दक्षिणं यमिगं दुरुवा गंधा दधु परतया मिला कनाथ सयसख ॥ स्या सयथ द ॥
धाम्नि धावति कान्ति कान्ति वति कि कसि कि वति हि सतन्ति जातिव व रोगं ल गि स्वस्थं शुभ
मसर्वसत्त्वानां च दक्षिण स्यादिमि स्वादा ॥ पूर्ववदि दा वयि वृक्षावापे थ धा कश्चला कपालाम
दं ध्वना ॥ यक्रुषि पनयं सर्वदा विनिवस्य पुत्रिका ॐ मां पूष्या नगंधा वयमिगं क्रुं शुभमाहूति

सर्वदर्शी च सर्ववाक्षि यमर्दनः ॥ सर्वसंशयहृता सर्वलोकाविनायकः ॥ चतुषष्टिसहस्राक्षि कुंठाशुभेन
पूतना निग्राहकः ॥ दधियुगलिनदहवा ॥ गंगादधुपरदायामिलो कनाथस्य समुखा ॥ त्यागस्थदः ॥
६५ निग्राहकः ॥ काकिकाववति किं कसि किं नमिहि मवति ॥ गोति च न रदा गलगि स्वस्त्युमम सर्वसत्त्वाना ॥ ३५
दक्षिणस्यादि सिखादा ॥ पूर्ववन्दिता नपिवक्ता वायथं कश्चलो कपालामहेश्वरा ॥ यक्षाधिपतय स
र्वदात्रिती च सयुक्तिका ॥ मापूषा च गंधाचपति गृहं रुममाहूति वीर्यदामं जसां गंधां मेधार्थं वलन

वनिदनाः ॥ सर्वनागाश्च स्वस्त्युमम सयुक्तिवा च सर्वसत्त्वाना ॥ सर्वशैलेषु च स्वदादा ॥ नमस्तु पुनूषा
वात्र नमस्तु पुनूषा रुम नमस्तु माहं जलिकना धर्मना जनमा मुग्धा विनूपा रुमदा वाजा कतां जलिन
स्ति नः ॥ मदा मेघमदा सिंदमदा मरुमदा दरधमदा वादिमदा ॥ नमदा सयुक्तममर्दनक ॥ चतुषष्टिसहस्राक्षि
नागसोपर्वगुक्तका निग्राहययश्चि मर्दनपिठयानि नदहवा ॥ गंगादधुपरदायामिलो कनाथस्य समुखा ॥ त्या
गस्थदः ॥ धर्मिधवा रंगवलवनिवलनिदिग्रा रंगविदसि सांवेदिकपिने ॥ चतुषष्टिसहस्राक्षि नी वाजनं विध

६६
 त्रिदिवसुमतिस्वस्त्यं तु मम सयनिवात्रयश्चिमादिगीखादा ॥ वृक्तवापयथ गक श्रलो कया लामदंश्च
 ना यक्षाधियतयः सर्वदा त्रिगीचसयुजिका ॐ मां पृष्ठाश्च गन्धश्च पतिगृह्णतु ममाद्रुतिगविशं
 धा वनेन नच निदना सर्वनागाश्च स्वस्त्यं तु मम सर्वरुय पडवे स्वः स्वादा ॥ नमस्तं पुनूषावीन नमः ॥ ३
 मं पुनूषा हं म नमस्या मा हं जलिकला धर्मनाजी नमा मुने ॥ अथ वक्ता मदा वक्ता सां जलिक ४ सम
 स्ति न सनाग क ३ ४ सर्वदं वेषु पात्रग ४ वेयना ज जनादन सर्वला कविहृ हसक ४ ॥ ३ ॥ जहा मा क

सारश्चेवदिगं धिदि कूवे वस्तिता ४ पाताल दं ह मूर्ह च आ का सन्निविता ग्रहा ४ नं वां द लुप र हा ध्यामि
 ला क नाथ स्य समस्त ॥ स्या यथ द ॥ वक्ता वृक्तस्वने वज्रधनास्ति न सान अत्र ले अत्र १६ ॐ प १६
 न ह द अत्र द ह म न ग्राग्रपा फे सान वनिस्वस्त्यं तु मम सर्वसत्वा ना क स्वादा ॥ वृक्तवापयथ गक
 श्रलो कया लामदंश्च ना ४ यक्षाधियतयः सर्वदा त्रिगीचसयुजिका ॐ मां पृष्ठाश्च गन्धश्च पतिगृह्णतु म
 माद्रुति १ वी र्यं धा गं ज सा गं वा मे श्व र्यं धा वल न च निदना ४ सर्वनागाश्च स्वस्त्यं तु मम सयनिवात्रय सर्व

सत्त्वा नां च सर्वरूपपदवैल्यः स्वादा वागजाः पिरुजाः वागजाः लक्ष्मणाः सतिपागजाः निरुताः सर्व
 लागाश्च स्वस्यं रुमां सयनिवान् सर्वरूपपदवैल्यः स्वादा वागजाः पिरुजाः वागजाः लक्ष्मणाः सतिपागजाः निरुताः सर्व
 स्याथार्थयवृद्धा रुगवन्माला कडत्यंनस्यमः ३ ने कनिगमजनपदप्रामकलाना जावनेकसत्त्वस्यार्थय ३१
 वृद्धा रुगवन्माला कडत्यंनस्यमः ३ ने कनिगमजनपदप्रामकलाना जावनेकसत्त्वस्यार्थय ३१
 वृद्धा रुगवन्माला कडत्यंनस्यमः ३ ने कनिगमजनपदप्रामकलाना जावनेकसत्त्वस्यार्थय ३१
 वृद्धा रुगवन्माला कडत्यंनस्यमः ३ ने कनिगमजनपदप्रामकलाना जावनेकसत्त्वस्यार्थय ३१

किमनरुमनूष्या विदुः शितया मन्त्रस्यमः शंनदः शनवे शाना मदानगनामना प्रसक्तामयः ७ वंमया
 वे शाना मदानगनामना प्रसक्तामयः ७ वंमया
 यनिवास्थपाशुनी वलमादाय मूर्ध्नि गदादगहिरि कृशमः ४ साध्वं गृध्रकूटपर्वमंदवनीर्थः अथ वृक्षा सह
 पतिः ४ यच्छमागानि दिव्यानि कृशमन्या दय रुगवन्माला दक्षिणा पापनामैरुगवन्माला वीजं यमानादि
 मारुतः ४ यच्छमागानि दिव्यानि कृशमन्या दय रुगवन्माला दक्षिणा पापनामैरुगवन्माला वीजं यमानादि

६८

स्तिगवत्तामामहावाजान्ककात्रादिवानिषत्समागतिरुगुगनान्यायगुगवतः ४५५ गौडय
नामैरुगवतमैववीजयमानः ४५६ स्तिता ४॥ महं ध्वनापिदवपुः ३५५ विंसतिरिश्चमुदासक
धनापमथाहाजिंशमहायकनग्नमादात्रितीयसपुत्रिकासपत्रिवा ४५७ धावकानांपर्यंकः ३८
दिवरुगुगनमयनामितवतीवीजयन्निवस्तितावाचवंपुषपरधालाहवसकात्राप्रपापैरु
गवात्तुहिकुसंधापिगंधकूटपर्वतादतीर्यनवेधालीमहानगत्रातंनोपसकान् ४॥ जडाकू

खलपुनवेधालकालिरुवशीरुगवत्तुद्वतवागकूतपासादिकदधतीयधाममानसदा
मंदियसदागमानसपत्रमाहमदगमथपाफजिगंधियतागमितसूदान्ददयवाचविषम
नमताविलमहाजिंशमहिमहापुत्रपालकृष्णसमलकगग्नममीतिरिश्चपजनेः ४५८ सुकसूत
विद्विगुगथागतस्यगत्रिवरीलवाधैवसूयावादिमुक्तवस्तितालावागोवाचकात्रनानिआ
यागिनिधिखनगगपकलनसहानग्नस्कांधः ०० यंमहानिचयवातीकववलधवः ४॥ ५०० संव

रुगवान्ताषां तपनिवित्रा वनसहृदं गतं. दं ववैशालकालिकु वथा रुग वन्मो शक्तिं वनसिपु
सा दया मास ॥ गं पुसं नचिरा. यं नमो र्गन रुग वां वैशाली मदान गत्री पविशति. तमा र्ग र्ग
धयन्ति स्म. समो जयन्ति समः पुष्या वकी वधायः. चिरु विचित्रयट दामघं भक्तु गध जयता का अत्र
६२ व. ता ना गन्धानि धूपिना निरुत्वा जं न रुग वां र्ग नो पसका मति डय सकु मं रुग वन ४ पा दयानि
वसानि पतति. जप खल रुग वान सह आन यकु वचि व विलिखित. तल नय स विध्व ग र्ग सकु मा

वध. पूर्व सख विन लरु र्धय निरु न ग वृध दिख कि वधानि नै कप रुं धय रु ग व द्र व मि नि र्म त्रि ध
क नै ध गे वा लि रु वा ना धि वा गि य नि मा र्थ पति रुं य स म नू ध स नि स्म. जप रुग वान वैशाली मदान
न गत्री पविध्व स म मया. ॐ नु की ल म व रु र्ध व रु दि ध म व लो क स व रु. व रु वा द्रु प सा र्थ रु मा स ग रि.
च वि ता वा च र्थ ग कं चि नू प श्चि मं स म य स र्थ रु ल मा रु न्ध थ ग त ना रु ना. स न्य क स व रु वा नां व रु म ड रु
रु रु रु धी पा स का पा सि का ड ग रु धी य नि. दं र्ग रि य नि. धा व रि य नि. वा च रि य नि. प र्थ वा य स

७०

मि. गं वां सर्वगः निरुपपद वा यस्मिन् पाया साऽकलिकलदविग्रहविवादरुगं तु नागसऽथेद्य
पायका कृष्णलादऽखधर्मानकमिष्यन्ति अजयाश्चरुविष्यन्ति सर्वविदेऽकं लयाऽनवं मूकं वृक्तास
दायनिरुगं वनमं गदवा चरुः कनसा च सा रुद्रक रुगं नमहा सा रुद्रपुमर्दनी नाम विद्याया ह्रीं
विमोचनीयं धर्मयथोयगं गं सिक्ता पख्याना नाम तथा गता नां संम्यकसं वृद्धा नां वृद्धमूलाऽनवं
मूकं रुगं वानमहा वृक्तासदायनिरुगं वनमं गदवा चरुः गं नदित्यं वाक्कनमृष्टसाधुचसृष्टमनसि

कुरुता विष्यन्ति वा नवं रुद्रकं निवृक्ता सादायनिरुगं वनमं पथ्यऽथोपी रुगं वानमं गदवा चरुः
स्याथरुद्रकं अचलं मचलं सा नमचलं पकितिनिधाये समनमूखं लिखं वने विद्युष्टं गवद
पुगलनपा वंगं मसा नवदिवले मदानिरुगं सखादा वा नमृष्टमूखं कायगं नानुसमति गमथवि
पथ्यनं यथा समाधयश्च स्वा नो अक्षिपादा च स्वा विरम्यकसं पहाधं च स्वा विरम्यकसं पहाधं निवृत्ता
निध्मना निवृत्ता यस्यानि पंवा डिया नि पंवा वला नि पंवा नसमं गयऽसपवाधं गानि जायी सः

७१ गममार्गं नवान् पूर्वविदावसमापनयं दशतथा गममेव तानि च कादशविमुक्तगायनानि द्वादश
 दशमं गं यतिगसमूहपादद्वादशकात्रयसंयुक्तपुवर्हनामवा पाठशका वा आनायानसमतिः तथा
 गतानसमतिः ॥ अष्टादशधनिकवृद्धधर्मावत्याविशदक्रवाधिः ॐ संसासदावाक्कनमदासाहस्य
 मर्दनीनामविशवाहीयमावनायसूत्रे गंगसिकतापुखाकातथा गमसदतासंम्यकसंवृद्धावावृद्ध
 निदावः ॥ धर्मनिदावः संघनिदावः वृक्कनिदावः ॐ ध्वनिदावः सत्यनिदावः मार्गनिदावः यति

गसमत्यादनिदावः चन्द्रनिदावः सूर्यनिदावः केशुग्रदनरुचनिदावः ॥ स्यात्प्रथमदा सात्रे कसिनि
 विधवधिः ववाग्रसात्रे आमषिधिमेघवतिकालितकालीकानसिवदहं रुवकमसखेपसमन
 धाये सुमे सगमनेपाये वज्रधने स्वादा ॥ अथरुगवांसु स्यावलाया ॐ मां गमधमराषण ॥ ॐ
 मांसमिलोकं पुनस्मिवापुनः स्वर्गवावत्तववाधिसक्तिः समास्तिनेवेदगथागमेन देवानिदं व
 नकनोरुमेन तस्मादिदं वत्तववपुधितममेन सत्येन ॐ हा सुसस्मिता यकथा विरंगमदमनता
 वा

विग्रहस्तनमंषां०० दंपतीतवत्रसंचनत्नमंमंनसस्थन०० हासुखसि॥ यथयुकी०० ४ पृथिवीप
निष्ठितश्चुद्धिं वायुहिनपकमंनस्थायमायंगलसन्निसेधयार्थमार्गसिद्धिदशका०० दंपतीतव
७३ त्रसंचनत्नमंमंनसस्थन०० हासुखसि॥ आर्यसत्यानिविरावयन्निगमंहीनपहनसूदंशितानिका ५३
शंपकानकस्यमनस्यकत्वा नमंरुयकसमवापुवति०० दंपतीतवत्रसंचनत्नमंमंनसस्थन०० हा
सुखसि॥ अत्रियथा वायुवगादिस्त्रिभुजगतानेवडयंनसंख्यातयवसयाजनविषयकाश्रु

मनजातिदिवृद्धपू०० दंपतीतवत्रसंचनत्नमंमंनसस्थन०० हासुखसि॥ शंपंगमावातनरथेवस्तु
ववावास्तुसर्वसत्वासुखिनारुवंकुशास्तुवमर्गिनवदवपूर्यवृद्धनमस्य०० हासुखसि॥ शंपंगमा
वागस्तुथेवस्तुववास्तुसर्वसत्वासुखिनारुवंकुशास्तुविवागननवदवपूर्यधमन्नमस्य०० हासु
खसि॥ शंपंगमावातनरथेवस्तुववास्तुसर्वसत्वासुखिनारुवंकुशास्तुनमर्गिनवदवपूर्यसंचन
मस्य०० हासुखसि॥ यानीरुतानिस्मागतानिहिनानिहमावथवान्नविकृद्वृवंकुमेगीसत

७४ नंपजासुदिवात्रवाणीचवन्नंरुधर्मं॥यंनेवसखनजिनाजिनानिसंख्यवादीनममननास्मिन्
 नेवसखन००हासुखस्मि॥मृशरुसर्वरुयस्य४खादा॥स्यायथद॥धिन्नधिधिन्नवलनिघाषवल
 सागनेसाववनिअरुत्तपाफेआवघाषसाववनिअरुत्तवलवति॥सिस्त्रपाफेसावंगमसूर्य४४
 धमसूर्यनिघाषखादा॥००यंसावाकनमदासाहप्रमदनीनामविद्यावाहीयनिमावनी
 यसुगंगामनसिकतायख्यानाकथगतानामदनासंम्यक्तवृक्षानांवृक्षमूलावृक्षपदाधर्म

पदासंधपदावक्रपदा०००पदा॥लोकपदा॥०००श्वरपदा॥पत्रमंछितपदा॥महविषयदा॥आप
 नितपदा॥आरुनितपदा॥हंरुपदा॥यदंयपदा॥अहिसवृक्षवृक्षस्याग्निनाग्नावर्क४अधीयसिनाव
 क्रधापयसिना०००नयूजितालोकपालेनमंस्कता०००श्वलेनसूजितासर्वदेवतायागावात्रे
 बहिनन्दिता४यदंयिनालिषिरिलंतावक्रहिरुतावदकेचिन्दितासनामकेपदविनावा
 रुवर्तुकानाचलोक॥गावन४॥सर्ववृक्षानामूजानपथकवृक्षानामाधुयाअविषाविमूक्ति४धं

७५

वक्रानां प्रवाहनी मध्यां जागता माध्याध्याय वाहनस्य कृष्णनाम स्यादयमनमय मय मयानाम
दर्शनमार्यमार्गस्य विवर्धनमाकृष्टाना धारुणं दनसत्काय दृष्टीना प्रपातनमानपर्वतस्य संभ्रमवधं
संसारमूढस्य दुःखानवसर्वसंसारयतिना नामा मूढिपर्वताना कृन्तनीमात्रयागस्य दुःखं सेनीमाः ३३
नपर्वदधोऽङ्गी लनमात्रवलिङ्गस्य दुःखं नदीकल्लेङ्गस्य मातृपुत्रं निर्वाननगननिस्सामधीयं
सागराहादिति ॥ स्याद्यथ द ॥ त्वर्गत्वर्गघोषेऽवधने सात्रयिषरुं देविपुत्रयहं संकषन्निवि

भार्गवनिष्ठस्य साधनि ववृधवनि वासवनि विरूषनि विषंगमं यशुपनि युष्यगर्हस्वादा ॥ ६० ॥
सामहा वाक्कथमहासाहस्रयमर्दनीनामविद्यावाही यत्रिभायनी यस्तु जगं गीसी कतायत्वाका न
थागता नामर्दतासंन्यक्तं वृद्धानां वृद्धमूढा यस्यामृदिता ४ सर्वद्वेषसानूत्वा सुगालोका अनर्हन्ति
वांछयुक्प्रविष्टायस्य वाथीयगंगासि कतायुत्वे न दहति ४ सम्यक्तं वृद्धे प्रत्यक् वृद्धे ४ आवर्के श्रयुक्
महिर्सं वृद्धे ४ संन्यक्तं वृद्धा ४ यत्कवृद्धा श्रवका धामा नापि दहति धीयगु वृद्धनीया ४ यस्या

७६

सिनाऽवक्रवर्चशीर्षम॥ धीलत्रक्रितदनन्दहृः कयायावमिनायत्रिपूत्रितासाधितावाधिसागऽय
वाजिनीमात्र॥ अथवक्रसदापनिऽशकुशदेवातामिन्दश्चत्वात्रश्चमदावाजान॥ एकवारगकस्वने
कवारुगवक्रंनमस्यमानाडवृ॥ अहाविशामदाविशामदासाहस्यमर्दनीआवक्रासर्वसत्त्वानांवृ
हमूजावक्रुदिसम॥ मूजावक्रवयदास्यामऽसूतंनमदासाहस्यमर्दनिशुक्तिस्वर्हानिमृदिताया
ऽमनूयाऽपदूहावक्रसंनानुभासनः नंवांदपुपुष्यामिविशिवक्राविर्मिताऽशकुशवाधविना

मूधर्नालाकपालेश्वरमृदिता॥ साशय्यदऽकलिंरगलावदहृदगजयनं सिंदमदसावाग्रपापदं सः
गामिनिमालिनिद्रुलिमिद्रुलिनिद्रुलिमंद्रुलिमं॥ ददंरुदंरुदंरुदं॥ ८॥ सुदनिनत्रयवनिद
स्मिनेनत्रवनिवकुलिवत्रसेनेधवाधनेखादा॥ ०॥ अस्याखलपूनमदासाहस्यमर्दनिवि
यावाह्राकायमानायाजिसाहस्यलोकधकुऽषदि कानंषकंमं॥ वकुषुदिकुविदिकुशुनासनेऽ
यक्रुवाकृसेतिनादपकृष्टऽघोषकृघोषयन्मिस्मऽअहादूऽवमहाकष्टनष्टाहृतसंघातव

७७
 ७७
 नीलाश्वसर्वथा अत्र फलपादितुमानासर्वेषामयस्यं ववा ॥ न च हस्मिनि विषदन्ति विषदन्ति प्रपद्य
 न्ति च अथ रुगं वास्म हस्मि व ऊ म यी रु मि नि मि त मं व रु दि षा य प ला य न्ति अथ च त्वा ना म दा ना जा
 न च रु दि षा म दा न नि का ला त ग्री न च म हि नि मि त व न्ति ॥ न च का र्वा य वि धा व न्ति अथ व क्त सा ॥ ३१
 हा य मि त्र या म या का षा म हि नि मि त्र मि त्र मं व स य ताल मा ण वि हा य सं प वि ध व न्ति ॥ अथ षा का
 दे वा ना मि त्र स्य ॥ अ नि य न षा कि कृ न्त म न व रु य व न्त रु दि रि पा व र्ष न ॥ न न च स म य न स म न

४ सा हा या ला क धा मो य रु य रु स रु द्रा दि स न्ति य मि ता नि वि श्रा या पा द ता नि कृ ता वं ॥ स म रु
 नि वि षा द न्ता रु ग व न ॥ पा द या सि त्र सा नि य त्या व व न रा स र्व स त्व दि ता नू क म यी वे ध म र धा र्णा
 त म णा य रु न ॥ वे षा म र धा र्णा त म ॥ अथ रु ग वा स्म गु क्क क मे त्या स रु ल नि स्म मि त्रा नि ग्र ह न च
 का व या मा स या ग नि मा रु द्या नी नां पी रु द्या नि नां जा ग मि ॥ अ द न्ता द्या न क त्या पि स द्ध रुं दी न या
 ग मि स वं व दू रु वं न स्य ला हि ता उ त्या द क स्य च ता ग मिं य मि ग रु दि म डा क्रि ध म हि स य ध र्म स्य

७८
सहृदं मधुना मर्जकस्थे वमज्जी ससृष्टा यद्रुत्राग हात्रिगम रुवमहि महासाह प्रपुमर्दनी
सहं यदि यं जिनता धित विद्यावाही ममि कुस्यवलि मस्थं ह्युया वयन मनवसमयन वेग
ल्या महानगं यो सर्वं ०० मिथो हं पडवी पस र्गमि पाया सा ०० नियसथं ॥ य रुवा रुसमनू ५८
ष्या मनूष्य ४ स्व क स्व कोनां ल्गम वमनिका नावे गाल कालिह वयो ४ सव्वं गवा धिखवि
निमका सर्वसुखसमपि नावृद्धा पुथं कपसा देन समन्वा गता रुवे य ५५ म्म सर्वसुखसा देन स

मन्वा गत व रुव स मंगल स मित वत्त य पुजा हिनता महात्य वे गदि वन रु न स न रु क मालिका
को किल मयुत्र च क वा क जीव क पश्चि ग धम मधू वनिकु ज नि विग म का य पी ज ॥ सा प स न ००
वं किन्न वा ॥ अघटि क नि व वत्त हा भु नि व ल मि रुं नी ग र व म्म ग प ध व वी धा व व य थ ह्म ना
ह्म पि नू न वं प वा य नि दालि म वि ल्वा म ल ने ग्रा धां श्व र्थ प ल रु क पि ह्म दं व न सा न ताल माल
क नी ल वं प क रु रु ग म्मा प मू रु मि स दे व ना ग न स रु श्व दी दी का व प मू रु ॥ अ रु वी रु व य

अथर्वमहिषावर्षज्जमासुषं च गंधर्वलाकपाद्वरुवरुमथ च त्वात्रा न दावा जान ४ पां जलथा
 रुगावन्ममं तदवाचन ॥ ॐ दं रुदन् रुगावनमदासा दस्युपमर्दनी नाम स्रुवाजसर्वप्रह्यमाच
 ७२ नीयवृद्धमूडाधर्मपराय ४ यकश्चिगच्छिस्तापदपनिगृहीत्वा काषायधाविनाडगृहीतानि ३२
 ७३ त्वावाचयित्वा पर्यवापलिषित्वा च धनयित्वा धनयिष्यति तस्य सर्वं ॐ निरुययदवायसर्ग
 पायासावेन कलिकलरुहं न विग्रहापायासाविवादाजावनये शुन्यपायकाकुशलादृश्य

४ व २

धर्मानातिकमिष्यन्ति जराश्चरुविष्यन्ति सर्वविदं ० कं ४ ॥ न नराष्ट्रस्य सीमा वंधयतु कामं न स
 सनामं न विभुक्तु कर्म न पंचामिषयविवर्जितं न संमानं पाणिश्लापदपनिगृहीतं न सर्वसत्त्व
 समविभं न स्रुविभं न च वसं रुवद्ययुक्तं न ग्रामनगावनिगमं गंगानककुलाय गतस्य कोवकुटा
 निरुत्तामध्यावाजधन्यायुष्यावकिं भुवनधीकृतानां नागंधधूपयितव्या ४ ॥ अरुदिगं न स कं न्यका
 ४ ससनानां ४ रुहसं ४ रुहययितव्या च त्वावाचं ४ च त्वाविनत्त राजानानि रुहययितव्यानि पूर्वार्द्धं काः

धास्वस्वादा वा न जायिर्जा वा ग जा र्छालसमजा सनिपान जा र्निहता सर्वनाम स स्वस्यं रुम
 मयस्यस्वाना क सर्वकाषादसंप्रशक्तं शुक्रमसूतं न पुन्यं धवा क्रिया वा ज्ञा दा वा ज्ञा पवसेन
 २ सरुषितं न पुथावकी वक्ष नानागन्धपयिता कृधनदी कला ड रुयध रुखदिन वदनाग्निः १२
 काले सर्वविज्ञानिः कृदिगप्यरूपयानि मूलनेत्रपूरूपयानि ॥ नानागन्धनिः स्रग्ना विगन्धेषु वा ८२
 ८२ गन्धेषु वा कृमेषु वा कालेषु वा गच्छेत्ति त्वावंधनियानि स्रग्मलानि स्रग्पूषाति नानागन्धदकं रु

नामदगीवकृत् न पूरूपयानि यस्य काखादकं न कृवति तस्य स्रग्कर्मावध कृत् विगन्धनयोः
 नृवाधैः धनस्रग्कंष्टिः त्वा मूलनेत्रपूरूपयमवा ०० दक्ष मदासाह स्रग्मदनास्रग्मदाहर्हयमराव
 वापुर्लोकवृद्धाश्च वृद्धानां धीवकाश्च शैवर्मेऽलो कया वाश्च स्रग्मनायमिध्वनामथा स्रग्ममदान
 ग्नादाग्निमीश सपुत्रिका वीर्यनर्गजया नं वां वैता ४ कर्मस्ति स्रग्मवज्रानि वक्रिबधनदाहकथा
 वा नं न रग्मपिनामं धाहास्त्रं वनस्यगी ॥ न नं न वा कं न काखादकर्मजं ता मवा नानागन्धेनथ

पुष्पे निवृत्ताः सर्वपापकाः ॥ तत्र ॥ १ ॥ दुर्भंशं कवचं कर्वालिकवली खनलं कुंकिनिजवल
नंदविधिभावनविधानि पद्मनिखादावा धावति खादावा गन्धर्वखादावा संसर्वाखादाव हृदनिखादावा ॥
मां मनुष्यदा सर्वसत्त्वानां सर्वकाखादाव तं ता दोषघ्नि मनुविज्ञा गम सर्वदेवे गम हृदिता हृदिता जिता ॥ ३
॥ यत्र जिता ॥ खादावा गलगुर्वे संपादनात्मा दगुपितकरुगन्दनविषपीतकानपविमाचरुका
मनससनामं सरूपिणं न रुदपीभसन निषधुः ॥ यं विशाडदादहृद्या गजसा सर्ववृद्धा नां पश्यं कजि

न गजसा अदमाचेववा र्जन सर्वेषां मनुधावि धापद्मा यासा विपुलस्यमोगल्या यनस्यमद्विधावदूषां चनि
वृक्षस्य कांक्षयस्य धूमं गुह्ये ॥ कोष्ठिने पूर्वपापस्याचमानदस्य धूमं न च मेखापर्वधेवकल ॥ चेतसस्ये शं ध्वर्य
घमं कृष्णमक्षा विषयनला कपालानां मधुध्वनवलं न च सेनायती नासीर्यलदाविती चस्रसमृद्धि यावीर्यं धमज
सा मंषा विषमसह्य विषमथा गुरुमनुष्यदा हवन्निनिर्विषा विषदूषणा सनं ॥ सायथद ॥ दनिकसिने किलिने दिने मं
उग्रपुत्रं कनकं कंयूः दशं रं खनलं मवृगद ॥ खादावा ॥ समकं खादावा ॥ ह्रीलखादावा ॥ मीलखादावा ॥ यानालगु

८४ किलागश्चवेगं पाश्चविचरिकापिठकालादलिं गश्च कश्चु रुवमि सफमी. नागाक्षेपमादश्च न लाकं यथा विषा.
 निर्विषा रुगवानसंधसमं नदं विषा नागाक्षेपश्च मादश्च न लाकं यथा विषा निर्विषा रुगवानं वा
 ८५ न धर्मा धर्मो यस्य दं विषा नागाक्षेपश्च मादश्च न लाकं यथा विषा निर्विषा रुगवानं वा १४
 संधस्य दं विषा विषययुधिती माता विषययुधिती पिता न न स्य वाकं न विषा
 सर्वे न निर्विषा नागाक्षेपश्च नाना रुमि सफमी मरुविषयुधुपा न न वा संक मरुविषयादा ॥

मूथानकलिकलदविग्रदविवा दयनक क ग फ य ना ज य रु का भे न पूर्व रु म हा शे त्य पूजा क
 र्हा ॥ ०० शं वान न द म हा सा रु य प म द नी वि शा ना ह्नी प व न ग या ॥ वृ द न नि जि ता मा न ध र्म
 ध न म ध र्म ना संध न वि जि ता ती थ्मा ०० द ध म स र्मै श्च पु जि ता सा मा वे न मं ऊ न सा ग न द म
 ग्नि ना क्क जि ता का श्वा ॥ ८ द क ना श्मि पे ना जि ता ॥ वा ग न नि जि ता मं धा न न व जं धा पा य मं
 स र्म न द व नि ष्मि स र्म न प थि वि रि ता स र्म वृ द्ध क्क ध र्म क्क स र्म ज य रु मा म्ठ वा ॥ १॥ १॥ १॥

विद्यामहं पतंरुमिदानका धांदिनकनी वृद्धवीनं नमस्यामा धर्मनाउपरुं कनयनप
समना विद्यां वृदीयका गिना धर्मउ विविदिह दं संवासाय गधम रुम ॥ नमः वृद्धाय
८५ पादो वन्दित्वा वृक्षवचनमववीरु ॥ वृद्धाऽपत्यं कवृद्धा च वृद्धा नांश्रवकाश्च अषया लाकपोलः ॥
श्रजावनदवनापिच ॥ ॐ निला कागः सदेनं सस्तिनाऽसन्दीदना वारुसाधोना गरुह रुतामदाः
मूनं धकन सापिनदं नांमकाश्चनदं निरुजासां पूननजायन जासां गहो निनिष्ठमि ॥ नननानि

संपथा रग रुयपमहदि ॐ विद्यापूवतीं विनामनिकल लंवा संवृद्ध ॥ निषयं नागरु यावः श्रीया जननवि
हालं न नासानिकं वा माख्यास्य लाका नाथ ॥ १५ ॥ हिमः मंशु काम नाउश्च कक्षापसमात्रमूस्त्रिका साहकाजा
मिकाश्चैव कामिनी वतीरुथा ॥ पूरुना माह नद्या च धकुनी कं पा नी मूरवमलु का मूलं वा वनक सर्वभदनीः
नमं ग्रहाय रुद धादानू धा सरुयकना ॥ १६ ॥ यरुद लरुध नृपा यथा गं निधानक मंशु कन गहीनस्य वरु
षां पत्रिवरुं म मग नाउ गहीनस्य रुदिरु वनिदानू धा स्कं द्व गहीनस्य स्कं द्व वाल निदानक ॥ १७ ॥ अपसमा

८७ नगदीनस्य रं नलानमं वनि ॥ मुखिका गदीनस्य मुखितं धनमृच्छति मारुका सं गदीनस्य दसं गतनमं ॥
 मिका पगदीनस्य नानि नदति सफना कामिनी पगदीनस्य पसप ४ सपना दति न वनि पगदीनस्य उिका दनं
 विषादनि पूतना या गदीनस्य का धनं गतनमं ॥ मारुन दगदीनस्य विविग्नयमादि रान् ॥ ६ कनि पगदीन
 नस्य गंध पुनि पना यमं ॥ ७ सपनि नृधनं ॥ मुखमं डि निका गदीनस्य क र्यमं नृ विविशमं ॥ ८ मूलं वा
 पुगदीनस्य दिका श्र सत्र जा यमं ॥ ९ नृय स माख्या सं जथा नृयं नि दान का ॥ १० मं श का ग व नृयं दमः

गवाजा गयथ स कंध कुमाल नृयं दमपसमा नृयं गल वन ॥ मुखिका कल यं दम ग वृयं दम मारु
 का ॥ कामिका नृयं दम यं दम कामिनी नृयं दम सान नृयं दम कन दम नृयं दम मारुका नदी वि
 दाल नृयं दम कनी यक्रि नृयि धी की कूट नृयं दम डीलू र मुखमं ॥ ११ मूल वा जं नृयं दम नृयं दम नि दान
 वका ॥ १२ नृयं दम नृयं दम वा दान वका नां रु यं क ना ॥ १३ नृयं दम मान यि चामि सृं यार दान क र्थि ना ॥ १४ दना
 नाम गंध यं दम नायनी मदान वा ॥ १५ नृयं दम नृयं दम दान दान नि या जय नृयं दम ग र्थं दम मान दि

८८ त्वन्माहादयः यः कृत्वा नाना मन्त्रमन्त्ररूपा मानिता ४ यः कृत्वा नाना पिठिता ॥ नाना वक्त्रा कनाथ कनाथ जलि
 ४५ नाना निविह खितानि विजं नायनि पादिनां नाना चतुष्टय ध्यामिता कनाथ यः सखः जालीनः
 कृत्वा यः ज्ञान वा ज्ञायते हं नाना सिद्धि सद्धि मन्त्र दत्त अस्मीत्युक्तं दत्तं यैः यैः पूजयित्वा यः सनातनः सखः ॥ ८
 विना सर्वपालिकं वन्धीयुष्य गन्धसमा कृत्वा यः कृत्वा गि कस्य कं हं गं ह्नी नाका नयं नगं ह्नी नाना अर्द्ध नागसिद्धि
 मन्त्रा नमूधि कृत्वा उ सर्वपान ॥ वक्त्र निमित्ता द्रव्य कनाथ यः कलपिता ॥ जावतदादयः वर्षादि कृमाः

ना धांदिन कनाथः यः ॥ मामा निकु मन्त्र विद्या सखः वक्त्र निमित्त ॥ सपुष्पा सखः रुट मूर्धना जंजक चैव मंज
 ना ॥ स्याद्यर्थ दत्त ॥ अर्गव रग रुगि निरुव नः ॥ नन्दि सल गि त्रिग व त्रिग वृद्धि गत्र वा लनः ॥ आलक्ष
 अर्ग रक्ष पवर्ष निखा दा ॥ क्रिप संनिष्ठतां ग र्ह सभ्य ग्वर्द्ध ॥ ३ ॥ न्दि या ग र्ह ह्नी ४ सखिना साधु मोचनः
 सखुदा नका ४ सखः सन्निष्ठतां ग र्ह काले नय त्रि नू यमं ॥ ना ना वं गानि सखा दि अर्क न र गी व सख
 पान ॥ ५ ॥ ना वक्रा समाख्या ना त्रि नं जी वं रुदा नका ४ ननाथ धा कृ सखः ॥ मां विद्या मूदा रुनं

यन्मि सर्वरुतदिमानकं पीताय रुगवनम धावकय ॥ ०० ॥ मां महासादृश्यमर्दनीमृगं कृमि धाव
 यन्मि वावयन्मि पर्यवापनूवन्मि ॥ तस्य च रुगवनपक्ष चत्वा नाम दाजा मोनवीवनपिषु पाशुभिर
 १० नासनगलानपमंक हे षर्यपविस्त्रं त्राकसूकं कविष्यामि ॥ ४ ॥ सत्कृतकरुविष्यन्मि ॥ सर्वसत्त्वगु ॥ ८०
 नूकतश्चमो नितश्च पूजितश्च ब्राह्मं ब्राह्मसदा माता धावविष्यन्मि ॥ ॥ अनेनार्थकधैवधवाक्
 धपविवाजका नापूजामि रुमात्यनमध्वगमा रुविष्यन्मि ॥ ॥ नहि धाव न कुलपूजा वा कुलदू

दिना वागृचिना रुविगद्य ॥ गृचिकायन गृचिवक्त्रं रुवधायनासनायन केदा विरहापदान कूदः
 भमिगसं सगं दान कूदं वा सपुसकमं न रुविगद्य जस्य रुत गृहीतस्य पुत्रग ॥ ०० ॥ मां महासादृश्य
 मर्दनीमृगं धावयिष्यन्मि ॥ तस्य चत्वा नाम दाजा न ॥ ४ ॥ स्वयं भवन्तु वदन्तु पिंसं विधास्यन्मि ॥ ॥ नवः
 मर्दद्विकोरुदकरुगवनमदा सादृश्यमर्दनीमृगं धावयिष्यन्मि ॥ ॥ नमस्यिवाशीदिवसवासक
 लपयन्मि ॥ तस्या सर्वतस्य नमनूया अत्रमावन लपयन्मि ॥ ॥ नमस्यनीश्चय रुविष्यन्मि ॥ ॥ सर्वरुतगं द

८१

स्यः ॐ मां महासाहस्यमर्दनीसुखं धनं शिवागस्यकां श्रितं चलात्रामहाभाजानमखपदधरिष्यः
 निः ॥ किं मगनपुनत्रं ॐ निराजयकृवाकृसासुतकस्यदमाशाशं कश्चिन्नलोकविद्यासविधस्यनिस
 त्वानादिनायः ॐ मां निवमकुपदानिवः ॥ नस्यवत्रयवत्रध्रुविधिषारुमानिगमंहीनविपुलारुमां ८१
 निदुवावर्तयधनेसाधनधनिः ॐ यं धर्ममूपाश्रुथसहसाशादवभाजसंवीपनिः ॥ पाजलिस्तेनमः
 स्थालालोकनाथसमवुवीनः ॥ सुलोचिनाः ॐ यं विद्यासर्वलोकहितकवी ॥ विद्यामहंयवकां निमन्नाष

धिसमायुगातः ॥ शित्रीषंयुष्यमयामागं गृगं वृकं नकात्यलरहोलयमंदमं जिष्ठासूकवीमकटीजयाः
 पत्रिवलावात्रसमं वित्रीषां मकं गगं वृनसाचन्दनावरुं ककुषनपगटवत्रापियं गुत्राचनाएका
 सषाश्रमनसिलोधचक्रकुं कसहिं गुमकुसंयुक्तवर्षकं ॥ यं घात्रसयतावरुं कसर्वग्रदविमा
 चनोऽसर्वरुतवित्रेषु ॥ यं घात्रेणं जनें समतागटेहीनकायनमूचरिहगवजाधने ॥ महाह
 रं पुलेपमं महाधैर्यतरथेवचराजावतपधतिगतसुं नरुं गं यजूरयननरुं नं गुरुतानां

८२

ननेषामदिनेषिधमं रुनासंखमदंगानिपद्यवाक्यपिलपर्यंत ॥ जावतद्वयमि सद्यस्यगुणयमंरुत
मनुलायकादिलेपरदापियकाधमग्रामत्राविधमययुगसजमेऊरुदिमंवापिदिगननरुनंनगु
कुमानां नानेषामदिनीषिधमः ॥ उगसकादतडागपुषक्रिययगुणवायकाधमजननस्यधमनिससि ८३
रुविषयमिवाक्यपिधमनियामंषुपनत्रकसनिपातमीमससलेययसकडरुविषयमिवागलगांशुपुत्रि
षासुर्वेसर्वपिटकषुत्रविषदरुविषयानक्रियंनमयमिवाजननपर्यगासुसर्वकाखादंरुदनविवादी

रुनधंसिद्धं वाजडा नपमावनं अरुसिद्धंसिद्धमपापनाति ॥ ॐ धनत्वंमनाधनत्वं ॥ अपुणाल
रुनं धनं जावतविशोधनरुनमकाधनानि साधयंति ॥ निर्यग्धनिगमंषुत्रगस्यावृक
रुलेषुत्रविशोधनस्यपाहृस्यधमनिकर्मकनरुनरुमनुयदानेसि ॥ ॐ नुस्यवच
नयथा ॥ स्यायथदवाअमीकैविकुमंरुनघाषंरुनगमंददिनिधधनधनं २ दनिनिखूखूम
खखमंसात्रंगमंरुनंरुपत्रकलिहात्रिनिस्वाहा ॥ सर्वपापकयममंरुवदिगंरुसाहा ॥ निरु

१३

माससर्वापापानि स्वाहा ॥ गंगा वक्ता वधक श्रुत्वा कपालात्तदंशं वा ॥ यत्कथं नापत्तयं सर्वदा नीती
 वसपूजिका ॥ कवाणे कस्य वा गुरुं सुपांजली रुक्मा ॥ सदृशसूर्यपथात् ॥ पूर्ववदपरास्वना ॥
 सदं वमात्तुषासूत्रलोका कदा दशान विद्यमानं अत्रिनिता सुययुक्ता वयं समर्पनी ॥ नाजयमस्वनी ॥ ८३
 नामविद्या वैशार्यपात्रनी ॥ सादृश्यमर्पनी नृत्तामदा नाजसुहादया ॥ युद्धसंघातजया सर्वभूवि
 नाशनि ॥ महासाहसलोका वक्ता वै सुगुं मूर्ध्नि ॥ नमस्कृत्य पूजयन्त नमस्कृत्य पूजयन्त स्यांजली नम

पा १

कृत्वा गुरुं वा नृध्वजयन्त ॥ गुरुं खलु गुरुं वा नृध्वजयन्त ॥ कालसमर्थपति सत्यनाम ॥ गुरुं गुरुं गुरुं गुरुं
 कृत्वा मास ॥ ८४ ॥ कालं महि कृत्वा मासदा सादृश्यमर्पनी सुगुं ध्वजयन्त ॥ वाचयन्त पर्यवापनमनत रुविशति
 सदं वकस्य लोका दीर्घबाहुमथासहिना य सुखाय स्य धं विद्वान्नाथं ॥ य कश्चिन्महि कृत्वा मासदा ध्वजका
 थं नमदा सादृश्यमर्पनी सुगुं ध्वजयन्त ॥ य विद्वान्नाथं ॥ य कश्चिन्महि कृत्वा मासदा ध्वजका
 थं नमदा सादृश्यमर्पनी सुगुं ध्वजयन्त ॥ य विद्वान्नाथं ॥ य कश्चिन्महि कृत्वा मासदा ध्वजका

२४

वृक्षमंतदवाचन ॥ जानीमानिरुदन्तुगवनयक्महात्रकासूनाधिरुषितानि ॥ त्यायथदममहाप
पुनिसत्रामहासाहस्यमर्दनीसूक्ष्ममहासायुत्रीमहाधीनवनीमहासूक्ष्मनसावधीनानिरुदन्तुगवन
यक्ममितपत्रिवर्जितननूहातनिध्वत्रिभुवापिभुपायक्मराजननिभाययक्मयाधिताजूलयकं ८४
वरुगवनपिभुपायंयक्ममिषयत्रिवर्जितन ॥ ०० दंभववद्गननडादिदंयक्ममिषमसंसृष्टमनुवय
सरुदन्तुगवनयनिययाम ॥ १॥ नवंमूकंरुगवास्तुहिरुमंतदवाचन ॥ नंतदिरुवाधेनमहासाह

अपुमर्दनीसूक्ष्मत्रयिष्यति ॥ नंतारुतमिर्यनध्वत्रणीआतमत्रकाध्वत्रयितया ॥ नंतदिरिभुपा
यंयत्रिगेकनाआहानंयनिकूलसंक्षेपादयितया ॥ कनयंवामिषसंसृष्टंयिभुपायंयक्ममि
षयत्रिवर्जितसंक्षेपादयितया ॥ १॥ नवंससूक्ष्मंअनिर्यसंक्षेपाअनिर्यदू४खआत्मसंक्षेपाद
यितया ॥ कनयंवामिषादिकस्ययक्ममिषानिकावायक्ममिषाधियत्रिहायनिनामि
४ससूक्ष्मसूक्ष्मनायल्यमं ॥ गणवाहानंयंवामिषसंसृष्टंसंक्षेपाकनधीआतमत्रका ॥ अष्ट

८५

म्यां वरुद स्यापं च दग्धं च १ गभं कं न्याया स सनात सूरुषिगयाः मूला नाशो वसु साय च
मिक्ता पद पत्रिग हीन सा ला दित कं सुग कं च रुग्णं का नयित्वा मनु धर्मे विद्या समा नयित्वा
ग्रंथि कृत्वा च सुखं वधर्वं न गच्छेत् तद्धि त्वा द गन्धान्न त्वा लु वा ला द ह ला लु वा उ द क पू र्ण पू ष्य नृ पः ८५
कुं द यित्वा नाना गन्ध धूप यित्वा ॐ सां विद्या आ व ह र्ति न या जा व न् न स्य सु रं हा जन या द र्श व
मि न्द्र यो र्ध्वा वं शित्वा वा क्य वा क्क र्ध्वा ४ विष ल १ ध्व न ग्ग क सिं ह स्य ना यिन ४ स विष गि त्रि मु

ध्व न हा न्द ना मि न्द्र य ति क्त ४ त न ग्ग क्क नि विष क्त हा जन ४ पु रं न स्य वा क न मू र्त्त रं हा
जन विष ग्गि ना द व ना या मि खि ना वि ग्ग रु व क्क थ ग न क क्क रुं द पु रं ना च द व ना या म हा
व ला क न का र्थ स्य द र्श न्दा ४ श्री म न्द्र का ध्व प स्य च ४ ध्व क्क सिं ह स्य व र्क न्द्रा कि द र्श स्य वा च ला
नां ला क पा ला च मा वि रु द्धा म हं ध्व ना ४ ना रु सी च म हा का ला च च ४ श लि नी त थ १ ॐ सां
पू ष्यो च गं धा च प ति ग्ग रुं रु म मा द्ति र्वा यी नि ना पू जि ता रु त्वा न रं र्ग ध रं रु हा जनं रं यं वा मि

सिंहानकाहारा॥ वाताहारा॥ अह्नूयाहारा॥ खेदलाहारा॥ पापविना, दुःखविना, मोडविना॥
पत्रंशाहारा॥ ॐ मां महा मायूना विद्या माह्वीयवक्रा मिमं धयूषधूपं वलि कदायामि, अय कां सं
मं, पापविना, दुःखविना, कृपितविना, मोडविना ॥ पत्रंशाहारा ४१ सर्वग्रहाङ्गाहारा ४८
त्वहुमं सीमाविना, मेवविना ४१ कल्याविना ४१ ४२ त्वहुमं वृद्धधर्मसंघाहियसंता ४१ ग
यथा॥ कालिकनालिकुं हादि संविनि कमवाकृतिहा विनि के सिधामनि, हनिपिंगलं, लं

वंपलं वं, लं वादवि कलपा, क, र, धादलि, जमदुनि, जमवाकृति, रुतगसंनिपमीरुमगंधयू
षधूपवलि कदायामि, वक्रार्थममसयनिवावसर्वसत्तानां वसिधं रुतदुषदासादाय ॥
नवंमया धृतमं कसिनसमयरुगवान् अवस्थां हिद्वनिस्म, जं नवनं अनाथपिबुदस्यामा
ममहताहिरुसंधं नसाई ॥ ननखलूप, समयरुगवान् अवस्थां जं नवनं अनाथपिबुस्यालाम
स्वातिनामहिरुपनिवसनिनवादरुसतनू, धा, इविनयवजित अविनयसंता ४ अविनागं

ॐ यं धर्मं विनयं संघस्यानर्जं कदा नू विपाटयामाणाः नैकतस्मात्पुनित्वा नू विविधं निस्
कुं मे मरुता कुरु संपन्नं दक्षिण पादां गुह्यं ४ संकान्त काशा कृ मोपतिता ॥ १० ॥ न वा हयमाना नू क
धीः प्रविबर्हयमाना ४ स्वयिनि अदा क्रियुषमाना नन्द ४ ॥ साति हि कृ मार्ग धाधिक दृ विम वा क ८ २
गलान् नू मोपतिता ॥ न वा हयमाना नू कृ धी च प्रविबर्हयमाना यत्न दृ दृ च पुन सुविमं २ यं न
ह ग वान् नू नाय संकान्त ४ ५ प सं ॥ ११ ॥ ॥ पा दो वि व सा रि वं धि च का मे ध द वा क लि

न श्रूयमाना नन्दो रुग वत मे तद वा य न ॥ ॐ ह रु ग व न श्र व न ॥ १२ ॥ न व न नू ना थ पि धु शा न
॥ १३ ॥ ॥ सा ति ना म हि कृ पु ति व ॥ १४ ॥ ॥ नू ध म जू वि न य व जि न ॥ १५ ॥ ॥ अ वि त्रा य सं प न ॥ १६ ॥ ॥ अ वि
ना ग त ॥ १७ ॥ ॥ मं ध र्म वि न य सं घ ॥ १८ ॥ ॥ ॥ नू वि पा ट या मा ना नू नै क त सं मा न य पु नि दा
नू ध म धु वि वा नि क मे म र ता क ॥ १९ ॥ ॥ ॥ कृ त पा दां गु ह्यं द दृ ॥ २० ॥ ॥ सं क लान् क का शा कृ मो
प ति ता ४ ॥ न य वा द मा ना नू कृ धी च प्र वि ब र्ह य मा न ४ ॥ स्व यि नि त सा हं रु ग व न क थ य ति य या ॥

१०१ दकः अत्रात्रकं । अत्रिनागः नासात्रागः मुखत्रागः कर्णत्रागः हृदयत्रागः गलत्रागः क
 र्णमूलः हृदयमूलः पृष्ठमूलः उदरमूलः कर्णमूलः गलमूलः वक्षिमूलः अंघ्रिमूलः
 हस्तमूलः पादमूलः अंगुष्ठमूलः चापनयाः शशिः स्वस्तिदिवः । स्वस्तिमः धादिभस्तिः २१
 स्वस्ति सर्वमहात्रागः सर्ववृद्धादिसंस्तुतः । गद्यथाः ॥ ॐ ह्रिः विंतिः किंतिः हिंतिः चिंतिः निंतिः
 दाः घादः दूगः हादः द्रविधिः वंगुहिनिः वांसुपिमात्रिनिः वर्षनिः आत्रादिधिः शत्रादिधिः

१०२ नलमः निलः निलिः मिलिः मिलिमलः । दूदमः ॐ ह्रिः मिंतिः विंतिः विष्टदः वयलः विमलः हल्लः
 अष्टमः कालिः श्यकीः अंशुः कालिः कलः २ वदलः २ कालः २ हलः २ वदलः २ वासादवाः दादवाः द
 मदं वाः गलायाः वलायाः पलिः वलायाः पिशुः २ हिलिः हिलिः हिलिः हिलिः हिलिः हिलिः हिलिः हिलिः
 हिलिः हिलिः १० ॥ मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः १० ॥ मिलिः मिलिः
 मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः मिलिः १० ॥ वलः वलः वलः वलः वलः वलः वलः वलः वलः वलः

१०३

लिका अथ लाश्र रागवानः श्रवणवक्र दधिमूखा श्रवणपाशुलिकादिगाम्यानि ४ कर्कोटक संखपा
ल ४ कं वलाश्र गला वली ७ गं वृत्र मे जी नागं वा ५ वृनिखग ४ कं गं श्र कमी वसुचिनामसु खेव वृड
वग्राधियमं न कालेन मे जी मं अषिकं न व गं अय वध क र्धुन मे जी म कट मुखेन व काल के न सून २२
देवा गला पृष्ठं मं सदा १२ लय गं न मे जी लं वृ कं न व ॥ अमानवा श्र ५ नागा सु खे वारु वमानवाः
मृगी ल श्र मदानागा मृचिलिन्द श्र विधु ता पथि वी वरा यं नागा म खे व जल निधि ता ४ ॥ अक नी रु वरा

अथ अचम वृत्ता श्रिना ४ ॥ कर्षिष विधीष वृमं जी मं ग वृनिखग ४ ॥ अया द कं वृमं मे जी म दिव द वृत्र
वृषय द वृमं मे जी मं जी व दू प द वृत्र ॥ मा मं पा द क दिन सुग मा मं दिन सुद्वि पा द का ४ ॥ मा मं व वृषय
द का दिन सर्व दू पा द का ४ सर्व सा र ग वृमं मे जी ५ नागा जल निधि ता ४ ॥ सर्व रु गं वृमं मे जी यं क र्शि
रु धि वी लि ता ४ ॥ सर्व सत्यं वृमं मे जी यं सत्वा रु स रु व वा ४ ॥ सर्व सत्वा ४ सर्व पा द ४ सर्व रु ना च क
वला सर्व वं सुखिन स र्ग सर्व सं रु नि ना ग म या ४ सर्व रु दा क्षि प ध रु मा क श्रि त्या प मा ग रु ॥ मे जी

१०४

[illegible]

वर्धुवरुणासाममयन्नराजपतिवसनिस्य॥ शायं नयासहामायूर्योविद्यानाहाकलयस्वस्थ
नंकलादिवास्वस्तिनाविद्वन्निष्ठा॥ सानिस्वस्त्यायनंकलाबाजीस्वस्तिनाविद्वन्निष्ठा॥ नमावृद्धा
य॥ नमाधर्मोय॥ नमःसंधाय॥ नमामहामायूत्राविद्यानाह्ने॥ गद्यथ॥ रुद्ररुद्ररुद्ररुद्र॥ ५ ॥ नाग
ल्लल॥ दंवल्लल॥ रुद्रश्चित्रश्चंद्रश्चंद्रश्चंद्रश्चिनीत्रिजिनि॥ अंगल॥ लामेला॥ ००लिमेला॥ मिलिम
ला॥ ००लिमिल॥ मिलिमिल॥ ००लिमिलिमिल॥ दंव॥ सुदंव॥ गासु॥ रंगालावेला॥ चयलाविमला॥ ००लि

१०५

त्रिः शिठि त्रिः नमो वृद्धा नाः त्रिलिकिसि रमा दादिकाः नमो हंता ४ दा ला दा ला वर्ष रुद व स म न
नदिससः दि सा स नमो वृद्धा ना स्वा दा ॥ सा य न या म दा मा यू या विद्या बा ह्या न रा स्व स्य य नं क
ला सं व दू ला कि र्ध न स यू न कं न्य को हि ४ सा ह्य मा ना मं ह्य ना म ड या नं ना या न य र्व न यो र्ध द
का म षुः गं ह्य स को म द म रु ४ य म रु ४ य म कि न प म ति ना नू वि न व न ४ य मा ध र्म ध या नं दे न न
ए प र्व न वि व न म नू प वि रु ४ स न न दार्ध ना य प ह्य थि क ४ य ह्य मि र्दि न स क न व ना न प कि रि म

२३

यू न या ॥ न व ह्य ४ सा मि न म ध ग न स म ति प रि ल ह्य ॥ सां मं व म दा मा यू या विद्या बा ह्या म न स्य का
र्षि त्वा नमो वृद्धा य नमो ध र्मा य नमो र्ध या य ॥ नमो म दा मा यू वि विद्या बा ह्या न य थ ॥ दू दू दू दू दू ॥ ३ ॥
ना ग ल ल र दं व ल ल र न ल ल ल र द य रं वि ज २ थू स २ गु ल २ रु य जि नो २ अ ग ल ॥ ग ला मं ला ॥ त्रि मं बा र मि लि
मि रु र मि लि मि रु र ॥ लि मि लि मि रु र दं व स दं व र मा स २ र ग ल ला व ला व ला व य ला वि म ला ॥ ०० दि त्रिः
हिं दि त्रिः हि त्रि लि ॥ नमो वृद्धा नां त्रि कि सि रमा दादिका य नमो ३ रु का दा ला वर्ष रुद व स म न न द द

सुदिग्धासूतमावृद्धानां स्वादा ॥ अथ तसमां द्वादसनायपदिनकृत् ॥ स्वस्ति ना कृभं न स्व विषयमनूया
फ ४॥ ॐ मौनिवमकृपदाने दादन्ननिस्स ॥ नमा वृद्धाय ॥ नमा धर्माय ॥ नमा संघाय ॥ नमा सुधीवरा
१०५ सस्यमयूलनाजाय ॥ नमा महा मायुलिविद्यावाही ॥ नमस्तथा ॥ सिद्धे सुसिद्धे ॥ मोचनि विमोचनि मा २५
रुनिः सुकृतेः विमूकतेः अमलेः विमलेः निर्मलेः मंगलेः दिने भुगर्भे वने २ वत्तगर्भे रुद्धे सुकृते समकृते
उसर्वाथ साधनिः सर्वानर्थपवाधनिः सर्वमंगलसाधनिः मनसि मानसि महा मानसि ॥ अरुणे ॥ अरुणे ॥

मः अरुणेः अलङ्कारविमलेः विमलेः अमलेः अमलेः अमलेः विमलेः वक्त्रे वक्त्रे पुरुषे पुरुषे मना वथ ॥ मन्त्रे मन्त्रे
वनिः श्री रुद्धे रुद्धे पुरुषेः सूर्यका मन्त्रे वीरगुरुः सवर्धुवक्त्रे वक्त्रे वक्त्रे ॥ समं जपति हरेः वक्त्रे २ मां स्वादा
॥ नमा सर्ववृद्धानां स्वस्ति रुद्धे मम सर्वस्वत्वा नाच्छुद्धिगुविधुविम्विस्वादा ॥ साक्षनपूतवानन्दम
नेन ४ समेन कालेन नमस्तथा ॥ सवर्धुवक्त्रे सा नाम मयूलनाजावरुवतिः नपूतवक्त्रे वक्त्रे ॥ न
नकस्यहता ४ ॥ अरुमे वसनेन कालेन समथेन सवर्धुवक्त्रे सा नाम मयूलनाजावरुव ॥ ॐ यं वान

१०७
 उमहा मायूया विद्या बाह्य नत गहि दयमनूया व्यास्यामि ॥ नयथा ॥ ॐ ह्रिमिनि ॥ किलिमिनि ॥ नि
 लिमिलिहि ॥ किलिमिलि ॥ मिलि ॥ ॐ हं वा ॥ ॐ वा ॥ सुवत्रिकसियरिं नमति ॥ ॐ नो वृक्षाना चिकसिपा
 नमस्तु ॥ ॐ मिह बा ला हित मूल ॥ ॐ वा ॥ सुहं वा ॥ कुंदि कुनदि ॥ कु कुनदि ॥ गिलकु जनदि ॥ मूठकव ॥ ॐ
 या या वर्ष रुद वा सममं न नवमा सा दध मा मं मि ॥ ॐ लिमिलि कलिमिलि ॥ ॐ मूल ॥ ॐ दं व सुद
 माद ॥ दलिम ॥ सुह वद ॥ वृष वद ॥ वृष न ॥ ॐ ह मस्तु न को न कला न कलिम ॥ स्वप्रमखिलम ॥ ॐ निस

जल ॥ ॐ व सु ॥ ॐ व सु ॥ दध द ॥ मूठनद ॥ वर्ष रुद वा न वा दक न ॥ ॐ रुद वा यममं न ॥ ना मा य
 हि या वा य हि ॥ रुत्रि मा लि कु मा लि ॥ ॐ लिमिमि ॥ किलिमिमि ॥ किलिमिलिमिमिति ॥ ॐ लिमं
 सिध्मं रुदा मिदामरुपदा सा हा ॥ ॐ दं मा नन्दमहा मा यूया विद्या बाह्य दयम ॥ ॐ पंचान
 नद मा हा मा यूया विद्या बाह्य ॥ ग्राम गमं नमन सिक्क र्वा ॥ मूत्रं द ग मं न नृपथ ग मं न ॥ वा
 जकुल मरुध ग मं न ॥ वीत्र मरुध ग मं न ॥ अग्नि मरुध ग मं न ॥ उदक मरुध ग मं न ॥ पथ थिक प

१०८

ममिहमरुतमेमेमराविवाहमध्यागतन अहिदहनविषपीकन ॥ सर्वरुयसमहनासमनधिक
हंवारकपिगतमनशिकरुयातनातिकपीमेक ॥ अहो ज्ञानपात्रिपात्रिकपूयवित्तोपुअर्थ
नवमना ॥ तवैतव्याधिनम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥
पयासिहमनद ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥
हनामरुप ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥

सद्वर्गताकयमात्ररुयसमना ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥
महोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥
दधुयविदाय ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥
वविह ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥
हलिमादा ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥ अहोमानेय अयदासनाम ॥

नागमलकावा. नागमहलिकावा. नागपार्षदावा. नागपाषदीवा. अस्रवावा. अस्रवीवा. अस्रपूजावा.
अस्रदूहितावा. अस्रमहलकावा. अस्रमहलिकावा. अस्रपार्षदावा. अस्रपाषदीवा. मयूगावा.
१०८ मयूगीवा. मयूगपूजावा. मयूगदूहितावा. मयूगमहलकावा. मयूगमहलिकावा. मयूगपाषदावा. मयूग
पाषदीवा. गवूदावा. गवूदीवा. गवदपूजावा. गवददूहितावा. गवदमहलकावा. गवदमह
लिकावा. गवदपार्षदावा. गवदपाषदीवा. गन्धर्वावा. गन्धर्ववीवा. गन्धर्वपूजावा. गन्धर्वदूहितावा.

गन्धर्वमहलकावा. गन्धर्वमहलिकावा. गन्धर्वेपाषदावा. गन्धर्वपाषदीवा. किंनरावा. किंनरीवा. किं
नत्रपूजावा. किंनत्रदूहितावा. किंनत्रमहलकावा. किंनत्रमहलिकावा. किंनत्रपार्षदावा. किंन
त्रपाषदीवा. महाव्रगवा. महाव्रगीवा. महाव्रगपूजावा. महाव्रगदूहितावा. महाव्रगममलकावा.
महाव्रगमहलिकावा. महाव्रगपार्षदावा. महाव्रगपाषदीवा. यक्षावा. यक्षीवा. यक्षपूजावा. यक्षदूहि
तावा. यक्षमहलकावा. यक्षमहलिकावा. यक्षपार्षदावा. यक्षपाषदीवा. वाक्यावा. वाक्यीवा. वाक्य

सपूजावा. वाक्रसदृहितावा. वाक्रसमदलकोवा. वाक्रसमदलिकावा. वाक्रसपार्षदावा. वाक्रसपार्षदीवा. ॥
११० गोवा. प्रमीवा. प्रतपूजावा. प्रतदृहितावा. प्रतमदलकोवा. प्रतमदलिकावा. प्रतपार्षदावा. प्रतपार्षदी
वा. ॥ पिष्ठावा. पिष्ठात्रीवा. पिष्ठात्रपूजावा. पिष्ठात्रदृहितावा. पिष्ठात्रमदलकोवा. पिष्ठात्रमदलि १००
कावा. पिष्ठात्रपार्षदावा. पिष्ठात्रपार्षदीवा. ॥ रुग्णावा. रुग्णावा. रुग्णपूजावा. रुग्णदृहितावा. रुग्णमदलको
वा. रुग्णमदलिकावा. रुग्णपार्षदावा. रुग्णपार्षदीवा. ॥ कुंहान्दीवा. कुंहान्दीवा. कुंहान्दमदलकोवा. कुंहान्द

मदलिकावा. ॥ कुंहात्रुपार्षदावा. कुंहात्रुपार्षदीवा. ॥ पूतनावा. पूतनीवा. पूतनपूजावा. पूतन
दृहितावा. पूतनमदलकोवा. पूतनमदलिकावा. पूतनपार्षदावा. पूतनपार्षदीवा. ॥ कटपू
तनीवा. कटपूतनीवा. कटपूतनपूजावा. कटपूतनदृहितावा. कटपूतनमदलकोवा. कटपू
तनमदलीकावा. कटपूतनपार्षदावा. कटपूतनपार्षदीवा. ॥ स्कंदावा. स्कंदीवा. स्कंदपूजा
वा. स्कंददृहितावा. स्कंदमदलकोवा. स्कंदमदलिकावा. स्कंदपार्षदावा. स्कंदपार्षदीवा. ॥

173

[illegible]

वृक्षाणां संघावकसंघातानां अंनं ॥ लामेंलाः ॐ लिमलाः मिलि २ मलाः मिदूदू ॥ मिलिमा मिलिमाधू
सूकं ला ॥ संघावकं वा समुवा ॥ आ ॐ ना ॐ मिलि कं अनादः वर्षं रुवा ॐ लि कि सि ॥ समनं न नदमायां
दक्षमास्यति मे लिमं सदा सर्वसत्त्वेषु वदति ॥ वविधि कवटकमूलं ॥ ॐ मि सवलः ॐ व पि सं क व ॥ आव
नः नवा दकं न वर्षं रुदवा सं रुखं दा समनं न ॥ नमा रुगं व न ॐ द र ग म सि सि का य ॥ ॐ मि ना य र ग म दा
दि का य हिं ग म त्रि का यः ॐ लं ग लं कू लं ॐ अ ट न ट कू लं ॥ आ स न पा स न पा य नि कू लं ॐ य नि कू लं ॥ नमा

लगावमवृत्तानां घाता ॥ अथाकमागिना जिना जिना विपसि विपसि जिनयुत्रिकम ॥ १ ॥ लस्यमूल उप
 गमविशं रुकसि विषम ॥ २ ॥ कुकु रुद वा क्र ॥ ३ ॥ वृद्धं व क न क म नी ॥ ४ ॥ दं व वा न ॥ ५ ॥ ग म म म ल ॥ ६ ॥ य ग म म का ॥
 ११४ ॥ ७ ॥ य ॥ ८ ॥ अथ क म ल ॥ ९ ॥ म नि ॥ १० ॥ अथ क पं ग व ॥ ११ ॥ ५ ॥ य ॥ १२ ॥ म वि स म वा य म ॥ १३ ॥ ग म म म ॥ १४ ॥ न म म द र्शि क म द व ता ॥ १५ ॥
 ॥ म म लिय सं ना ॥ १६ ॥ द व ता ॥ १७ ॥ म दित म ना ॥ १८ ॥ द ॥ १९ ॥ क र्क रु म नि ॥ २० ॥ शि वं न नि रा स ॥ २१ ॥ य ॥ २२ ॥ ॥ ० ॥ लि
 निलि किलि चिलि कलि वलि ॥ २३ ॥ उ द ना ॥ २४ ॥ म द मो द ॥ २५ ॥ व म न ॥ २६ ॥ रु रु क न ॥ २७ ॥ क नं ग म ल ॥ २८ ॥ ॥ ० ॥ नि म व तां क

कालि ना ना य नि ॥ २९ ॥ प ॥ ३० ॥ शं नि ॥ ३१ ॥ क पिल व यु नि ॥ ३२ ॥ ॥ ० ॥ वि मि वि मि वि मि ॥ ३३ ॥ रु म द म रु प दा सा दा ॥ ३४ ॥ ॥ ० ॥ मां प म न न द
 म द्रा प्र व था वा क्र ॥ ३५ ॥ स दा य मि ता ता मि ता ॥ ३६ ॥ रु द वा ना मि ड व ॥ ३७ ॥ रु रु हि म म द न ना डी ॥ ३८ ॥ रु रु विं ड
 नि म द्रा य रु स ना य मि ता ॥ ३९ ॥ ॥ ० ॥ रु रु न न द ॥ ४० ॥ म म म द्रा स धी ना म म पृ ग रु क मा नं पृ क मि त य दू र वि हा ड
 प स क म न ॥ ४१ ॥ स प म म य रु रु न न रु मं रु क म व मं रु ली ॥ ४२ ॥ म य ॥ ४३ ॥ ॥ ० ॥ रु रु स ल ॥ ४४ ॥ रु रु स ल ॥ ४५ ॥ रु रु स ल ॥ ४६ ॥ रु रु स ल ॥ ४७ ॥ रु रु स ल ॥ ४८ ॥ रु रु स ल ॥ ४९ ॥ रु रु स ल ॥ ५० ॥ रु रु स ल ॥ ५१ ॥ रु रु स ल ॥ ५२ ॥ रु रु स ल ॥ ५३ ॥ रु रु स ल ॥ ५४ ॥ रु रु स ल ॥ ५५ ॥ रु रु स ल ॥ ५६ ॥ रु रु स ल ॥ ५७ ॥ रु रु स ल ॥ ५८ ॥ रु रु स ल ॥ ५९ ॥ रु रु स ल ॥ ६० ॥ रु रु स ल ॥ ६१ ॥ रु रु स ल ॥ ६२ ॥ रु रु स ल ॥ ६३ ॥ रु रु स ल ॥ ६४ ॥ रु रु स ल ॥ ६५ ॥ रु रु स ल ॥ ६६ ॥ रु रु स ल ॥ ६७ ॥ रु रु स ल ॥ ६८ ॥ रु रु स ल ॥ ६९ ॥ रु रु स ल ॥ ७० ॥ रु रु स ल ॥ ७१ ॥ रु रु स ल ॥ ७२ ॥ रु रु स ल ॥ ७३ ॥ रु रु स ल ॥ ७४ ॥ रु रु स ल ॥ ७५ ॥ रु रु स ल ॥ ७६ ॥ रु रु स ल ॥ ७७ ॥ रु रु स ल ॥ ७८ ॥ रु रु स ल ॥ ७९ ॥ रु रु स ल ॥ ८० ॥ रु रु स ल ॥ ८१ ॥ रु रु स ल ॥ ८२ ॥ रु रु स ल ॥ ८३ ॥ रु रु स ल ॥ ८४ ॥ रु रु स ल ॥ ८५ ॥ रु रु स ल ॥ ८६ ॥ रु रु स ल ॥ ८७ ॥ रु रु स ल ॥ ८८ ॥ रु रु स ल ॥ ८९ ॥ रु रु स ल ॥ ९० ॥ रु रु स ल ॥ ९१ ॥ रु रु स ल ॥ ९२ ॥ रु रु स ल ॥ ९३ ॥ रु रु स ल ॥ ९४ ॥ रु रु स ल ॥ ९५ ॥ रु रु स ल ॥ ९६ ॥ रु रु स ल ॥ ९७ ॥ रु रु स ल ॥ ९८ ॥ रु रु स ल ॥ ९९ ॥ रु रु स ल ॥ १०० ॥ रु रु स ल ॥

११५
 चं न मा हि न भं जा ॥ न मा वृद्धा ना स्वस्ति वा दाय द रुवं रु स्वस्ति वा द रु य द स्वस्ति वा द रु ता मा र्ग स्वस्ति
 पु त्या गं तं षु स्वस्ति वा जो स्वस्ति दं वा स्वस्ति म र्ध दि न स्ति न सर्व रु स्वस्ति वा रुवं रु मा शे मां पा प मा र्ग म
 न्ना सर्व दि व स क ल्या नं ४ स व न रु रु द का ४ सर्व दृ द्वा म द र्द्वि का ४ ग व र्ण रु नि न्ना त या ४ ज न न स र्ध १०३
 न वा के न स्वस्ति रु व रु य म न न ४ ज न या म द्वा मा य र्ग वि श्वा ना ह्ना न्ना गं न्ना वि न्ना म म स र्ध
 स स्वा ना क्त्र रु क्ता क्त्र रुं रु गु पि यं निं रु य निं पा ल न धा नि स्व स्य य नं द रु य निं द व ध रु य निं द व
 ४ गं द प वि १

विष दृष द विष ना ध न सी मा वं ध भ न धी वं धं व कूर्वं रु व र्ध न प ध रु स व द्वा ध नं ॥ रं चान न्द रु क्ता म द्वा य रु
 ४ स म द्वा य नि व स नि रं य म ल य र्ध न वा ४ रं चानं षु य र्ध न वा ४ षु ज न्ना वि षु म द्वा र वि षु न दी षु म द्वा न दी षु क
 ४ षु प स व र्ध षु व र्ध न द्वा र्ग षु प ल ला क षु गि नि गु द नं षु ४ म धा नं षु म द्वा धा नं षु च त्व र षु म द्वा म ग र
 षु ग्रामं षु धा षु ४ द यानं वृ व नं वृ प व नं षु प र्थ षु न र्थ षु रं चान न्द रु क्ता म द्वा क व र्ध या या वा ४ धा न्ना
 पु नि व स नि रं य न या म द्वा मा य र्ग वि श्वा ना ह्ना म म स र्ध स स्वा ना क्त्र रु क्ता क्त्र रुं रु य निं द व ध रु य निं द व

रूपविपालनमामिस्त्रस्ययनदक्षुपत्रिदाहयुपत्रिदात्रविषदूषधविषनाशनसीमावन्धंधवही
 वंधकृर्वरुजीवरुवर्षगतपधरुगत्रदासंतगयथा॥दलनीदालनीविलिनिममहिशामः
 ११६ विमादनिस्त्रमृनिस्त्रयंरुवस्वादा॥पूर्वायामानन्ददिक्षयाधृष्टनाष्टनामगर्वनाजापनितस १०८
 निगन्धर्वाधिपनित्ररक्षकगंधर्वगतसदृशपत्रिवात्रगंक्ष्वनामाधिपत्यंकात्रयनिःस्यपूर्वादिक्ष
 वरुक्तिपत्रिपालयनि॥साधिसंपू४संपी४संजानासामाद्य४संशनापनिःसंधंशसंदूत४संध

वत्रसंपार्षद४॥अनयासदासायूर्याविशानाहाममसर्वसत्त्वानांवनकाकनारुजीवरुवर्षगतपधरु
 सत्रदागत॥गयथा॥संलूकं२॥अमिष्ठयातनिवन्नवतिवंदमालिनिवंदलनिपू४कं॥वाचूचीचूखादा
 ॥पद्धिमायामानन्ददिक्षयाविनूपाकनामनागनाजापनितसन्निअनकगगतसदृशपत्रिवा
 त्रानागनामाधिपत्यंकात्रयनिःस्यपूर्वमादिसत्ररुक्तिपत्रिपालयनि॥साधिसंपू४संपी४संजाना
 सामाकं४संधंशसंदूत४संधवन४संपाषद॥अनयासांदासायूर्याविशानाहाममसर्वसत्त्वानांवन

११७

काकलाशुवर्षधनपधुसत्रदासतं॥नयथा॥वदुनिशंकादिशंविशूमतीशंदददददददद॥८॥ननु
ननुननुननु॥८॥ननुननुननुननु॥८॥ननुननुननुननु॥८॥सादा॥उरुगयामानन्ददिभयावे
धवधनाममहायक्रवाजापतिवसति॥अनेकयक्रुधनसदप्रपतिवात्रायक्रुधमाधियसंकात्रयति॥१०॥
शुद्धवादिधंनरुतिपत्रिपालयति॥सायिर्षपुन॥संयोग॥संज्ञातासामाभ॥संभनायति॥संथय॥संदूक
संपवल॥संपाषद॥अनयासादासायुयाविद्यावाहाममसर्वसत्त्वानाकनकाकनोदुजीवंशुवर्षधनप

धुसत्रदाधनं॥नयथा॥सात्रिशंघिनिशंमति॥दिनिशंमति॥किनिनिशंदिनिनिशंथल॥शंघिगल॥चल॥शंदनं
विषवधूमतिस्वादा॥पूर्वधधननाशुदक्रि॥धनविनूक॥यस्मि॥नविनूपा॥क॥क॥धनसंवाहनादिसं॥च
लालामहायक्रुलाकपालायधधोने॥॥दिसत्रनसंपालयति॥महाधेन्यामहावला॥यत्रचकप्रमर्थना॥दुर्ह
षा॥अपनाजिता॥॥अधिमंथा॥दुतिमन्ना॥वधुमन्ना॥यसंशोने॥॥दवायत्रमविसर्गममनरुवक्तिमहर्षिका
॥नयनयामहासायुयाविद्यावाहाममसर्वसत्त्वानाकनकाकनोदुपत्रिगाहापत्रिपाल

नाजगद्वं गंधकूटकनालयनिः ४ कृत्वा मृतपर्यन्त सागना नावसंधना मदावलामदानं जाद ४
 श्रीजनविक्रम ४ गन्धविपुत्राय रुद्रिगुणं विपुत्रं नाजगद्वं वकुलो यक्रमदायेन्यमदावलका
 १०२ वायकालाय रुद्रवेसक ४ कपित्थवसुनिः ४ जगतामूनिवृद्ध ४ धाकृत्सिंदुमदा मनिपयपादो वलाया विना १०२
 मेषुमदध्वन ४ वदस्यति च धावयां साकं सागने वसंत ॥ वजायुधं च वै धाल्यामंगलं च द्रविचिंगल
 वा नाहस्यामहा कालं च पाया च सुदर्शन ४ विष्णुय रुद्रावकाया च धनं धावालयालिया विहि

षतस्य सप्तमयत्र ४ मृगं सां चमर्दन ४ आटया पावकाय रुद्र ४ कपिलवद्रुधन्यक ॥ दुर्जयन्या वसपुं
 गा वसुक्रमिन्नमनिषु ४ रुद्रका रुद्रक ४ समीत न्दा जानन्द पुत्र स्मि ४ ४ मृगं दक मालधन ४ जानन्द मव
 षपट ४ ४ कृदं ४ सवसुषुदर नामानवनिषु ४ मदागिनिचनं स्मिना दितकं कार्त्तिक शो कुमालाल
 कवि ४ म ४ ४ वै धाक कं हात वाद्रु कलिं रंगं पूरुदस्यति ४ ४ दुर्जा धनं च सूर्यनं च मूर्शन वा रुद्रव नं मर्द
 नमं च यं य रुद्रिगुपं च मालव ४ रुद्रश्च नादिता स्वपु ४ सर्व रुद्रव सा कला सोटनक पालितक ४ सा

दिष्टुणाकायं च त्रितक ४ कपिल कपिलसुधा वकुला उज्जिहां न्यायामधुयापुर्वकसुधा नैगमन
 पांवालयपुलावगजसांकशोधनधमया दधनयोध शत्रुपुत्रं जय ४ कुनूक गुंवर यदुतामत्रककुनूक
 १२१ को। यदुतामत्र ४ गुरुवमहागखलमखला। वनिपतिनच सिद्धार्थ आर्यमीवनवासिन ॥ सिद्ध १११
 यामथैधनं सरुधा यास्तुल्यवत्त। यदुसिंदवल यासिंदयावलावला। कोटिवर्ममहासैन
 तथापनयुत्रं जय ४ पुष्पादकश्चनं पाया। मगंधषुगिनिवजधा। गी। यागपर्वमय ४ सुषेधचनो

मंत्र वीलवाहश्च साकं काकयाचसुखावह ४ कोमयां वायनाय सा रुडकाया रुद्वर्षक ॥ यदुपा
 टलियुक्तं नामतारुगसुखसुधा। अरुंधीकश्चैव काथेषू अश्वस्तुं कटंकट ॥ गनकश्च सिद्धार्थ ॥
 मंदकश्चापि जिहर्जय। अग्र्यादकं मंशकं ४ धेनवं महिकानन ४ विकटंकटाश्च जयकावसम क
 पिलवसुनिधौ गेनने कर्तिको दानकाया निलया कुवय रंन मध्यमकीनयश्च सो रुडया महा
 मंजसा ॥ वैश्वर्यको दानुपुत्रं जम्ह कामनूह निषु। यशोवृक कटाव्याना सुधा विकटं ०० थपि।

वे मातिका दवस मादवद वृत्तमन्दन ४॥ परं कनश्च कासमीत्र सहाजि कोशिकं वसग ॥ ५
सुपाला कलिं रंगममभुला मभुला सनाल कलसावक काविष्णु मात्रिनी नामलका ॥ धर्मपाल
१२२ अलारु वृत्तं कावेवमदा रुज ४॥ जिनर्षहा वा जफुला हीमान ॥ वेधमधमदा वाज ४॥ यरुकाटी ११२
पान्तिवृत्त ४॥ यान्तागिनि कलुवस गोवस ४॥ सिंधुयाग वा जिधूलयानि विपुल कलिं रंगममभुला
४॥ पांवालग लुदमिठं मसिंद पाल वृधं नध्वन ४॥ धुकमखश्चाटया पाल लकिं कवावसेता ॥ ५

ताध्वनश्च पुत्रुगी कसमीवमदा पुत्र ॥ परं कनश्च दवद वृत्तिंगल स्वस्ति मंवसत ॥ वचन्दा वचन्दा ध्वन
मातलि रश्चेव कासदवपुगी वसपवृद्ध ४॥ काविष्णु नल कलवन ४॥ पात्रन वृत्त कलु नचध कन
वमचिगा वंजि वं वृत्त कल वृत्तिंगल ४॥ पूर्ववर्धन पुरुमख ४॥ कवाजु शाजि यानेक ४॥ कुमं हाव ४॥ काल
रुकं मनुषुमकलध्वज ४॥ विरुसेन ववा कात्रल १० पुत्र गावर्न ४॥ पिंगल रश्चेव वासिन ४॥ पतनि शपि
यदधनि ४॥ कुमं हाव यरु वाज गेह विपुत्र सर्वनि वासिक ४॥ धनसद ४॥ धनसद ४॥ यरुनां पयुपास्य ४॥

१२३

अहिरुजाया (ग) पा ला अं को अल का यत्र नदी च नदि न गत्र ग्राम धा धव लि चि ४१ द वा व मान
 वे ध स ना ४२ ख ये न्य य त्रि पा ल क ४३ य रु का ती य त्रि च न ४४ अ द क व ही ति वा सि क ४५ गं म द द्वि का य रु
 म द धे न्या म द धे ला ४६ प न ध रु प म र्थ ना द र्ध सा य त्रा जि ना ४७ अ द्वि स द्या द मि स द्या व र्धु म द्या श र्धं धो ११३
 न ४८ द वा स त्र स पि स त्रा म म न रु व नि स द र्धि का ४९ गं य न या म द मा थु र्या त्रि या ना हा म म य र्ध स
 ला तां च न का क र्ध रु व र्धं ग त य ध रु स त्र दा धं ग त ग य था वा अ क ट वि क ट र ह त्रि ति दा त्रि ति ध व ति धा

११३

व हि वा दूं का २ वूं का २ द न द न द न द न द न द न द न द न द न वा १० ॥ जि टि जि टि जि टि जि टि जि टि जि टि
 जि टि जि टि जि टि जि टि १० ॥ अ मि गान म म स र्व स त्वा ना क् ॥ द द द द द द द द द द द द द द द द ॥
 १० ॥ अ द्वि जि षी द म म स र्व स त्वा ना क् ॥ य च य च य च य च य च य च य च य च य च य च १० ॥ म म स र्व स त्वा ना
 क् ॥ ध ध ध ध ध ध ध ध ध ध १० ॥ ना ध य अ द्वि ती षि द म म अ म क य स र्व स त्वा नां च ॥ द द द द द द द द द द ॥
 १० ॥ जि टि जि टि जि टि जि टि जि टि जि टि १० ॥ ना ध य स र्व स क न म म स र्व स त्वा नां च ॥ व ल व ल व ल व ल व ल ॥

१२५

लक्ष्मिव ॥ मंथं नयामदा मायूयाविद्यानाह्ला मम सर्वसत्त्वा नाक्त्र कृत्वा कृत्वं शुजीव शुवर्ष धर्मे मे ध
 शुसलदा धर्मं ॥ चत्वात्रा ॐ मां आनन्दमदा यक्ष्मं नापतयं ॥ यं विदि धा सुयतिव सक्ति ॥ यं वि
 दि धा सुवर्क नि पत्रि पालयक्ति ॥ तयथा ॥ पां शिक ४ पां चालग ७ ४ सा नागि विहा मवत ॥ मंथनः ११५
 यामदा मायूयाविद्यानाह्ला मम सर्वसत्त्वा नाक्त्र कृत्वा कृत्वं शुजीव शुवर्ष धर्मे मे ध शुसलदा धर्मं ॥ चत्वा
 त्रा ॐ मां आनन्दमदा यक्ष्मं नापतयं ॥ यं विदि धा सुयतिव सक्ति ॥ यं विदि ग ता सत्त्वा वरुक्ति ॥ तयथा ॥

रुम सुरुम ४ काल उप काल ॥ मंथं नयामदा मायूयाविद्यानाह्ला मम सर्वसत्त्वा नाक्त्र कृत्वा
 कृत्वं शुजीव शुवर्ष धर्मे मे ध शुसलदा धर्मं ॥ चत्वात्रा ॐ मां आनन्दमदा यक्ष्मं नापतयं ॥ यं विदि
 धा सुवर्क नि पत्रि पालयक्ति ॥ तयथा ॥ सूर्य ४ सोम ३ ग्नि वायु २ ॥ मंथं नयामदा
 मायूयाविद्यानाह्ला मम सर्वसत्त्वा नाक्त्र कृत्वा कृत्वं शुजीव शुवर्ष धर्मे मे ध शुसलदा धर्मं ॥ तयथा ॥
 दुग्दुल्लं मानन्द वेधे वध स्यमदा नाजस्य धर्मं हा रुधना मानि ॥ यं सत्त्वा निव रूक्ति पालिपाल

यन्मि १०० निःश्र पदवाश्च पसर्गश्च ला कस्य नाधयन्मि १ ला कानूय दाथ ला कम नू विवत्रमि ॥ गयथा ॥
०० न्द सोम वनू द ४ पुजा पतिरुवा वाज ०० धान नन्द न ४ काम ० धिः ४ कुनिकं ० धनिक ० क ॥ वदिमधिध
१२५ व ४ ॥ पद्य नू द य पां चिक सान्ना गि विदोम वन ४ पुरुष क खदिन का विद नू त व ४ ॥ ग्मा पाल य रु ४ ॥ अ ११५
ट कोन ल वा जा जिन र्ध रु ४ ॥ पां वाल ग ४ ॥ समूखा दी र्ध य रु ४ ॥ सपत्रि वा न विविग य न श्र ग न्ध र्ध रु
ली य रु कं ० क ४ दी र्ध ग कि ध्र मा न लि ४ ॥ गं य रु मा म दा य रु प वि ध य का ॥ अ द्वि म को दू मि म को व

सुमको य सं सो न ४ ॥ वे ध व न स्य म दा वा ज स्य जा न व ४ ॥ यं पां वे ध व ४ ॥ म दा वा जा म ला व य नि ॥ अ
रं म व य रु वि द ० यन्मि अ यं म व रु न म रु मि म ॥ ०० मां वे ध व द स्य म दा वा ज स्य जा न व ४ ॥ गं य
न या म दा मा य या वि थां वा ह्ना म म स प वि वा न स व स त्वा ना रु व रु कूर्व रु जी व रु व र्ध ग न प ध्म
रु स व दा धा न ॥ प वि वा य नं रु कालि कल द वि ग्र द रु रु न वि वा द वि ग्र द ४ प वि वा य नं रु म नू य य
दा न रा म नू य य दा न ॥ द व य दा न ॥ ना गं य दा न ॥ म स न य दा न ॥ म नू त य दा न ॥ ग नू रु य

११७ दाता ॥ गन्धर्वदाता ॥ किंनरदाता ॥ मन्त्रदाता ॥ यक्षदाता ॥ राक्षसदाता ॥
 धूम्रदाता ॥ पिशाचदाता ॥ रुद्रदाता ॥ कुंभदाता ॥ पुननदाता ॥ कटपुननदाता ॥
 ॥ स्कंधदाता ॥ उल्माददाता ॥ रुद्रादाता ॥ अयस्मादाता ॥ अश्वदाता ॥ नरुद्रदाता ॥ ११८
 दाता ॥ लेपनदाता ॥ वक्राकर्तृदुसर्वसत्त्वानां च ॥ अश्वदाता ॥ गदादाता ॥ वृद्धि
 दाता ॥ त्रिधाता ॥ वंशदाता ॥ मानदाता ॥ मंदादाता ॥ मर्जादाता ॥ आता

दाता ॥ जीवितादाता ॥ माल्यादाता ॥ गन्धदाता ॥ पुष्पादाता ॥ रु
 लादाता ॥ सखादाता ॥ आद्रुतादाता ॥ पूजादाता ॥ विष्मदाता ॥
 मृगादाता ॥ रवेणदाता ॥ रक्षसमादाता ॥ सिंदानकादाता ॥ वा
 नादाता ॥ सेंदनिकादाता ॥ असखादाता ॥ वक्राकर्तृदुसर्वसत्त्व
 त्वानां च ॥ कल्याकर्मधकाखोर्दकिप्रधन ॥ पवनना ॥ दूतना ॥ दुल्मादना ॥ रुद्रना ॥ वे

काशंति॥ ॐ शंताय नमः महापिण्डं ॥ अद्विमया दूतिमया वधुमया यमया सोमं ॥ देवाय नमः
सयाममनुरुवन्मिमद्विका ॥ तायेनयामदा मायया विद्यानाहाममसर्वसत्त्वानाच्छत्रकूर्केशु
जीवदुवर्षमपयधुमनदाधन॥ तयथा ॥ दन्तखलखलमलमिलमलमंदतिमलमलितिकं ॥ दल १२१
दलदलदलदलदलदलदलदलदल ॥ १० ॥ मिडिमिडिमिडिमिडिमिडिमिडिमिडि ॥ १ ॥ सिद्धि
सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि ॥ १० ॥ स्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्ति

स्वस्तिस्वस्ति ॥ १० ॥ ममसर्वसत्त्वानाच्छत्रकूर्केशु ॥ मां पूनवानन्दयं च महाभारतया
यहिवाधिसत्त्वामाह कृत्तिगता वक्तिगता यमा नाना वक्तिगता गता पित्रक्तिगता पूनकनमा ॥
तयथा ॥ कुषानिनन्दा विष्णुना कपिलाश्रमि ॥ ॐ शंताय नमः महाभारतया अद्विमया दूतिम
या वधुमया यमया सोमं ॥ देवाय नमः सयाममनुरुवन्मिमद्विका ॥ तायेनयामदा मायया
विद्यानाहाममसर्वसत्त्वानाच्छत्रकूर्केशु जीवदुवर्षमपयधुमनदाधन॥ तयथा ॥ दन्तखल

सिद्धिसिद्धि॥ १०॥ स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति॥ १०॥ मम सर्वसत्त्वानां कुरु मरुवं हु स्वादा॥
 दाद रं सो नन्द मदा वा कृषी या हि वा धि यत्ना मां हु कृत्ति ग मां जा य मा नो व क्रि मां जा ता पित्र क्रि त
 १४३ ४॥ तां पुन कृत मां तय थ ॥ अनासिका वा कृषी ॥ लो डा वा कृषी ॥ समू डा वा कृषी ॥ पा न दा निनी वा १२३
 कृषी ॥ विद्या ध वा वा कृषी ॥ धन ध वा वा कृषी ॥ धन ध वा वा कृषी ॥ अ सि ध वा वा कृषी ॥ दल ध वा वा
 कृषी ॥ चक्र ध वा वा कृषी ॥ चक्र वां जा वा कृषी ॥ वि हि ष ना वा कृषी ॥ ॐ यं ता दा द ध वा कृषी ॥ अ द्वि

मं २५
 मं २५ इति मं २५ वं मं २५ य ध सो नं ४६ दं वा म न म पि स ग्रा म म नू रु व क्रि म द द्वि का ४६ ता य न या म दा मां
 यूर्या विद्या वा कृषी मं म य प नि वा न सर्व सत्त्वा नां च व क्रा कृ व वं हु जी व हु व र्ष ण ग य ण हु धन दा धा त रा
 तय थ ॥ हु नं स्व नं स्व नं म लं मि लं म लं मं दं ति म नं म लु ति क ॥ दल दल दल दल दल दल दल दल दल ॥ १०॥
 मि ठि मि ठि ठि मि मि ठि मि ठि मि ठि मि ठि ॥ ८ ॥ सिद्धि सिद्धि सिद्धि सिद्धि सिद्धि सिद्धि सिद्धि सिद्धि ॥ १०॥ स्वस्ति
 स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति ॥ १०॥ अमूक य स प नि वा न कुरु मरुवं हु स्वादा॥ दाद रं सो नन्द

लंमंदतिमभूमिभित्तिका॥ हलहलहलहलहलहलहलहलहल ॥ मिठिमिठिमिठिमिठिमिठिमिठिमिठि
 ॥ १० ॥ सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि ॥ १० ॥ सस्मिस्मिस्मिस्मिस्मिस्मिस्मिस्मि
 ॥ १० ॥ समसपयत्रिवावयसर्वसत्त्वानां कृष्णमहं कृष्णमहं कृष्णमहं कृष्णमहं कृष्णमहं कृष्णमहं कृष्णमहं
 कथितानामवाक्यी ॥ पदमानामवाक्यी ॥ मरुतिनामवाक्यी ॥ मात्रिकानामवाक्यी ॥ नाडिकानामवा
 क्यी ॥ दालिकानामवाक्यी ॥ कलशानामवाक्यी ॥ विमलानामवाक्यी ॥ ध्रुवतीनामवाक्यी ॥ द्रविड्या

नामवाक्यी ॥ ब्राह्मिणीनामवाक्यी ॥ सावित्रीनामवाक्यी ॥ दूकानामवाक्यी ॥ वावृणीनामवाक्यी
 ॥ कालिनामवाक्यी ॥ कौंठ्रीनामवाक्यी ॥ गुलानामवाक्यी ॥ हलानामवाक्यी ॥ वलानामवा
 क्यी ॥ ग्रसनीनामवाक्यी ॥ कलालीनामवाक्यी ॥ पतंगीनामवाक्यी ॥ विंदूनामवाक्यी ॥ धा
 लीनामवाक्यी ॥ गंधत्रीनामवाक्यी ॥ कुंठलीनामवाक्यी ॥ कावंगीनामवाक्यी ॥ बार्धनीनामवा
 क्यी ॥ मंदनीनामवाक्यी ॥ जयनीनामवाक्यी ॥ गौराहाविणीनामवाक्यी ॥ वृद्धिनाहाविणीनामवाक्यी

१४५
१४६
रुसी ॥ दंडुना नाम वारुसी ॥ दुषासनी नाम वारुसी ॥ दुक्कनी नाम वारुसी ॥ तदागयालि नाम वारुसी
॥ वज्रमाला नाम वारुसी ॥ स्कंधना नाम वारुसी ॥ तमादाना नाम वारुसी ॥ वर्षदिना नाम वारुसी ॥ गज
नी नाम वारुसी ॥ सखोटनी नाम वारुसी ॥ विद्याकनी नाम वारुसी ॥ जगमाना नाम वारुसी ॥ दुलका १२३
मुखी नाम वारुसी ॥ वसुंधरा नाम वारुसी ॥ कालवारी नाम वारुसी ॥ यमदूती नाम वारुसी ॥ अम
ला नाम वारुसी ॥ अमृता नाम वारुसी ॥ दुर्द्धाता नाम वारुसी ॥ सगंधिषा नाम वारुसी ॥ धनवाहः

नाम वारुसी ॥ धननेषा नाम वारुसी ॥ घातनी नाम वारुसी ॥ मर्दनना नाम वारुसी ॥ मांजालि नाम वारु
सी ॥ विदुषि नाम वारुसी ॥ अयिमयलधना नाम वारुसी ॥ विधुलपानी नाम वारुसी ॥ कलालदन्ति
नाम वारुसी ॥ मनोवमाना नाम वारुसी ॥ सोमाना नाम वारुसी ॥ चक्षु नाम वारुसी ॥ हिंति वाना नाम वारुसी
॥ निलाना नाम वारुसी ॥ विजाना नाम वारुसी ॥ ॐ यना सयति मदा वारुसी ॥ अक्षि मंथा दन्ति मथा वरु
मंथा यं धा सोने ॥ दवा सुवमपि सया ममन रुवन्ति मरुद्धि का ॥ तापानया मदा मा युवया विद्या वा

नाहाममयपविवायसर्वसिलानाच्छ्रवणाकर्षणं कृत्वा कुरुवर्षभामयध्वजं वदामहम् ॥ नमः ॥ हिलि ३
मिलि ३ गच्छ गच्छ ॥ हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि ॥ १० ॥ हल हल हल हल हल
हल हल हल हल हल हल हल ॥ १० ॥ चिटि चिटि चिटि चिटि चिटि चिटि चिटि चिटि चिटि चिटि ॥ १० ॥ हिं का मिं का ॥ १२ ॥
चिं का ॥ दा वं २ ह स २ व व २ य न २ च ल २ व ल २ सा दा ॥ न मा ४ सर्व वृक्षानां सा दा ॥ प रुं क वृक्षानां सा दा ॥ अ रुं का
नां सा दा ॥ मे जी य स वा धि स ल स सा दा ॥ सर्व वृक्ष वा धि स लानां सा दा ॥ अ ना ग म मि नां सा दा ॥ सं क दा ग म

मि नां सा दा ॥ सा ना य ना नां सा दा ॥ सं भ ग ना नां सा दा ॥ सं भ कृ ति य ना नां सा दा ॥ व कृ ष सा दा ॥ ॐ द्रा यं सा
दा ॥ प जा प न यं सा दा ॥ ॐ ध ना यं सा दा ॥ अ ग्न यं सा दा ॥ वा य वं सा दा ॥ व वृ ध यं सा दा ॥ अ मा यं सा दा ॥ ॐ
पे न्द्रा यं सा दा ॥ वे ध व ध यं अ रुं धि य न यं सा दा ॥ ध न रा ष्ट्रा यं गं ध र्वा धि य न यं सा दा ॥ वि नू ट का यं कं ण धु
धि य न यं सा दा ॥ वि नू पा ण यं ना ग म धि य न यं सा दा ॥ दे वा नां सा दा ॥ ना ग म नां सा दा ॥ अ सू ना ध
सा दा ॥ म नू ता नां सा दा ॥ ग नू ण नां सा दा ॥ गं ध र्वा नां सा दा ॥ किं न रा नां सा दा ॥ म हा न ग म नां सा

१४
दा॥ यज्ञानां स्वादा॥ ब्राह्मणां स्वादा॥ पुराणां स्वादा॥ विष्णुनां स्वादा॥ रुद्राणां स्वादा॥ कुं
कुं नां स्वादा॥ पूतनां स्वादा॥ कटपूतनां स्वादा॥ स्कंधनां स्वादा॥ उल्मादनां स्वादा॥ श्लुया
नां स्वादा॥ अयस्मानां स्वादा॥ शीतनां स्वादा॥ चन्द्रसूर्यशं स्वादा॥ नरुणां स्वादा॥ ग्रहा १२८
धमं स्वादा॥ अतिथानां स्वादा॥ लिखितनां स्वादा॥ सिद्धिवतानां स्वादा॥ सिद्धिविशानां स्वादा॥ रोगीनि
शं स्वादा॥ गंधर्वशं स्वादा॥ अंगुलीशं स्वादा॥ अमृताशं स्वादा॥ अरुनीशं स्वादा॥ चापटीशं स्वादा॥

जामिनीशं स्वादा॥ शिवशं स्वादा॥ अथ सर्वशं स्वादा॥ चण्डुलीशं स्वादा॥ मातंगीशं स्वादा॥ नाः
गहदयाशं स्वादा॥ गहदयाशं स्वादा॥ मानसीशं स्वादा॥ माहामानसीशं स्वादा॥ प्रह्वरीशं स्वादा॥
माहिर्दुशं स्वादा॥ समनरुदाशं स्वादा॥ मदासमनरुदाशं स्वादा॥ समयाशं स्वादा॥ मदासमया
शं स्वादा॥ पणिसवाशं स्वादा॥ मदापणिसवाशं स्वादा॥ धीमवतीशं स्वादा॥ दंडधवाशं स्वादा॥ मदा
दंडधवाशं स्वादा॥ मृचिलिखुशं स्वादा॥ मदामृचिलिखुशं स्वादा॥ ऊयनीशं स्वादा॥ धान्तिशं स्वा

दा॥ पुस्तिका यथा दा॥ मया कृता यथा दा॥ मया किञ्च यथा दा॥ मया विज्ञाता यथा दा॥ सत्त्वार्थ वा
 सना यथा दा॥ मदा मायु नमो जायथा दा॥ मदा मायु नमो विद्या नमो यथा दा॥ मया कृता यथा
 दा॥ मया विद्या हि मदा मया मदा यति मदा मदा नमो हि ४ मम सपनि वा नमो सर्व सत्त्वानां नमो १२२
 कर्तुं यथा दा॥ दस्य कृत्या कर्म धा दस्य ४ का खा द कि न धा न ४ वं न ४ वि वा थ व का र्थ ४ ४ दत्ता
 दाः कृता मया मया नमो का दिका दिति यकाः रु ती यका ४ न रु र्थ का ४ सप दिकाः मया मया सिका

४ मा सिका दव मा सिका ४ म दहिका नित्य गो वा विषम गो ला रु र्ग क वा वार्हिका पी निका ४ ल लष
 मिकाः सनियानिका ४ दस्य सर्व कला ४ म नृ ष क वा ४ म नृ ष क वा दस्य द नृ क दू कि हि रु कृ ष मग
 पुषि द क या मा वे ष र्थ ला द लिं ग दस्य ४ वि वा व हि म द्वा व रं द क म वा व क म शि वा ग ना स वा ग
 मूख वा ग क वा ग र द द य वा ग र ग ल ग र ह क र्थु म ल द नृ म ल द द य म ल पा र्थ म ल ए ष
 म र ४ द द व म र ग पु म ल व सि म ल गे द व म ल यो नि म ल प जा नि म ल उ व क म ल उ वा म

ल। हस्त धूल। पाद धूल। अंग पलंग धूल। हस्त सर्व यदा। सर्व विषा। सर्व व्याधि मख सि। वाणी। स्वस्तिः
 देवा। स्वस्ति मरुध्दि नं स्ति न। स्वस्ति सर्व मेदा। वाण सर्व वृद्धादि संरुमं। नमो युद्धी धंशं। नमो युद्धा धंशं।
 नमो युद्धा शं। नमो युद्धा कशं। नमो युद्धा नाशं। नमो युद्धा नशं। यं वा क्क धं वादि क पा य धर्मो धं। नमः १३०
 स्तं पां नम स्तं व मां सर्व सत्ता नां च य वि पा वरा रु। स्वस्ति मा रु। स्वस्ति पा रु। स्वस्ति ग र्ह ह्य। स्वस्ति य दा ना। स्व
 स्ति रु य दा ना। स्वस्ति व रु य दा ना। स्वस्ति रु व प र्था प ना नां। स्वस्ति रु म म सर्व सत्ता नां व स्वा हा। ड ग्टे क्त स्व

मान न्द नाग वाहा नामा नि। तय थ। वृद्धा रु ग वान धर्म स्वामी नाग वाजा। वृद्धा नाग वाजा। महा वृद्धा नागः
 वाजा। ॐ न्दी नाग वाजा। ड पें दी नाग वाजा। समूदी नाग वाजा। सनू ड पूजा नाग वाजा। सा ग वाना नाग वाजा।
 सा ग व पूजा नाग वाजा। म क वाना नाग वाजा। न द्या नाग वाजा। ड प न द्या नाग वाजा। न ली नाग वाजा। ड य
 न ली नाग वाजा। सु र्द म ना नाग वाजा। वा सु कि नाग वाजा। वा सु कि नाग वाजा। न रु की नाग वाजा।
 अ वृ र्ध नाग वाजा। व वृ र्ध नाग वाजा। पा शु व क नाग वाजा। ष रु गु ली नाग वाजा। सा व र्ध ना

गंगाजा ॥ धीमांतागंगाजा ॥ धीवर्धनागंगाजा ॥ धीरुडानागंगाजा ॥ अत्रलानागंगाजा ॥ अतिवरा
नागंगाजा ॥ अक्रुकोनागंगाजा ॥ धीमवाहनागंगाजा ॥ ससेलुनागंगाजा ॥ सूर्ययहानागंगाजा ॥ चन्द्रप
१५९ हानागंगाजा ॥ रुडकानागंगाजा ॥ नन्दनानागंगाजा ॥ गङ्गानागंगाजा ॥ विशाकनानागंगाजा ॥ १३१
सह्यहानागंगाजा ॥ वर्षधनागंगाजा ॥ विमलानागंगाजा ॥ अलिकक्षिषानागंगाजा ॥ वलक्षिषा
नागंगाजा ॥ अक्षक्षिषानागंगाजा ॥ गवक्षिषानागंगाजा ॥ मृगक्षिषानागंगाजा ॥ हस्तिक्षिषा

नागंगाजा ॥ अर्दवलिकानागंगाजा ॥ अनार्दनागंगाजा ॥ विशानागंगाजा ॥ विशाक्षानागंगाजा ॥
गंगाजा ॥ विशुषेनानागंगाजा ॥ नमूचीनागंगाजा ॥ मृचिचिंदानागंगाजा ॥ नार्वधनागंगाजा ॥
वाजा ॥ वाघवानागंगाजा ॥ धिचिनागंगाजा ॥ धिचिकानागंगाजा ॥ लंवूकागंगाजा ॥ रुमि
नागंगाजा ॥ अन्ननागंगाजा ॥ कननागंगाजा ॥ हस्तिक्षिषानागंगाजा ॥ पांडवकागंगाजा ॥
जा ॥ पिंगलागंगाजा ॥ रेलानागंगाजा ॥ रेलयकागंगाजा ॥ पांडवकागंगाजा ॥

सखी नाग वाजा ॥ अयलाली नाग वाजा ॥ काली नाग वाजा ॥ डपका नाग वाजा ॥ वलद
वनाग वाजा ॥ नावायना नाग वाजा ॥ मंवलना नाग वाजा ॥ हीमा नाग वाजा ॥ वाक्रुषा नाग वाजा ॥
१५२ ॥ रबीलवा दूनाग वाजा ॥ गंगना नाग वाजा ॥ सिंधू नाग वाजा ॥ वक्रु नाग वाजा ॥ डीत नाग वा १३२
जा ॥ मंगली नाग वाजा ॥ अतवतयना नाग वाजा ॥ सुयतिस्त्रिना नाग वाजा ॥ येवावर्धना नाग
वाजा ॥ धवधिधवा नाग वाजा ॥ निमिधवा नाग वाजा ॥ दूनिधवा नाग वाजा ॥ रुडाना नाग वाजा ॥

सूरुडाना नाग वाजा ॥ वसूरुडाना नाग वाजा ॥ वलरुडाना नाग वाजा ॥ महिना नाग वाजा ॥ मनि कंठना
ग वाजा ॥ क्षीकलकी नाग वाजा ॥ क्षीपीतकी नाग वाजा ॥ क्षीलाहितकी नाग वाजा ॥ क्षीरध्वतकी ना
ग वाजा ॥ मालिना नाग वाजा ॥ वक्रुमालिना नाग वाजा ॥ वरुषा नाग वाजा ॥ रुडयदाना नाग वाजा ॥ दुंदूहि
नाग वाजा ॥ अमनीर्थ नाग वाजा ॥ मनि सुना नाग वाजा ॥ धरुवाखा नाग वाजा ॥ विवूरु की नाग वाजा
॥ विवूया नाग वाजा ॥ वैधवर्धना नाग वाजा ॥ शकटमुखी नाग वाजा ॥ चार्यटकी नाग वाजा ॥ रंग

नमो नागवाजाय पंचाला नागवाजाय पदमा नागवाजाय विंदू नागवाजाय पविंदू नागवाजाय अलिका
 नागवाजाय वलिका नागवाजाय कालिका नागवाजाय किंचना नागवाजाय किंचनका नागवाजाय किंचका
 नागवाजाय कृष्णगोमो नागवाजाय सुमानुषा नागवाजाय मूलमानुषा नागवाजाय दुर्हमानुषा नागवा १३३
 जाय अतंगमो नागवाजाय अदमा नागवाजाय दुर्हमा नागवाजाय वधुका नागवाजाय मूलका नागवाजाय हलका
 नागवाजाय शंखी नागवाजाय शंखवर्धना नागवाजाय अत्रवाला नागवाजाय मलवा नागवाजाय सतसी नागवा

जाय कर्काटक नागवाजाय कपिला नागवाजाय सवला नागवाजाय दुर्गपला नागवाजाय नखका नागवाजाय
 वर्धमानका नागवाजाय मोरुका नागवाजाय वृद्धिका नागवाजाय पुमोरुका नागवाजाय कंदला नागवाजाय
 नागवाजाय शंखभली नागवाजाय नन्दापनन्दा नागवाजाय अर्चिला नागवाजाय महासुदर्शना नागवाजाय पवि
 किठ नागवाजाय सुमुखी नागवाजाय आदवर्धनमुखी नागवाजाय गोंधवा नागवाजाय सिंदला नागवाजाय दुमि
 दी नागवाजाय श्रीकृष्णका नागवाजाय श्रीधरका नागवाजाय द्वावपशुका नागवाजाय नील ००० शंखानंदना

रुजीवरुवर्षमगतयष्टिरुधनदागत॥ॐ॥यंवा नन्दमहासायूत्राविद्यावाह्याभेजिथवाधिसत्त्वंनमदासत्त्वंन.राषि
 नावाद्यनूमादितात्र॥तद्यथा॥मिनिमिनिमिनिमिनिमिनिमिनिमिनि॥३॥रुदङ्गागिआगिआगि॥४॥रुदङ्ग
 दनं॥रुदङ्गानिदिदन्दिमवयंमिनिमिनिमिनिमिनिमिनिमिनि॥४॥वाधिसत्त्वावाधिसत्त्वाविचित्रिनिमिनि॥३॥
 यंस्वाहा॥ॐ॥यंवा नन्दमहासायूत्राविद्यावाह्याभेजिथवाधिसत्त्वंनमदासत्त्वंन.राषिनावाद्यनूमादितात्र॥तद्यथा
 ॥हिलि२मिलि२मालिनिःचक्रनि॥किनिकिनिकिनि॥किनिनवक्रनं॥कूनु०कं.विदाउदसं॥धन२

[illegible]

१५२ नमः कुरु मन्त्रवर्धितं वृकं लोठ कविषान् ॥ मन्त्रविषान् ॥ विष्टि विषान् ॥ अथदी विषान् ॥ विशाविषा
न ॥ स्वस्ति मम यत्रिवात्र सर्वसत्त्वानां कुरु सर्वविषान् ॥ ॐ यंत्रानन्दमहामायत्रीविद्यावाह्याय कुरु देवानां
मिथुनारुषिणावाथेनमादिताय ॥ नमः ॥ अल अं उ वा माला अं उ लः वापेति अं उ लः मथति घातनि ॥ १३२
घनि ॥ दित्रि २ गिनि २ दूनि २ गिनि २ गवृष ॥ नमः ॥ वमि ॥ दादादादादादासिंद धिति ॥ धिधिति ॥ कुरु १ कनह्ला ॥ वन २
सि ॥ उट २ नि ॥ वट २ सि ॥ मिले २ कपिल ॥ कपिलमूल ॥ दादिहं सर्वदृष्टा नां अमृतकनामि ॥ हस्तपादां ॥

गनिग्रहं कनामि ॥ सहजिद ॥ हाह दवदि ॥ उटिं गिति ॥ यत्रपतिवर्हि ॥ वज्रवज्रवज्रवज्र ॥ ४ ॥ वज्र
वमं स्वादा ॥ ॐ यंत्रानन्दमहामायत्रीविद्यावाह्याय कुरु देवानां मिथुनारुषिणावाथेनमादिताय ॥ न
मः ॥ अल २ शनि ॥ नप २ शनि ॥ धर्म २ शनि ॥ सत्र २ शनि ॥ कूटि २ मूटि २ मिति २ सत्र २ दन २ मत्र २ शिति २ दादादा
दा ॥ ७ ॥ वावावावावा ॥ ७ ॥ दलदलदलदलदलदल ॥ ७ ॥ सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि
सिद्धिसिद्धि ॥ १० ॥ स्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्ति ॥ १० ॥ मम सर्वसत्त्वानां कुरु सर्वपुष्पकान् यम

दूतातः कालवाणीतः कालपाशकः सत्यदधुतः वक्रदधुतः ॥ ॐ दधुतः सखिदधुतः दधुतः ॥ ता
 गदधुतः ॥ अस्रवदधुतः ॥ गवृद्धदधुतः ॥ सवृद्धदधुतः ॥ गंधर्वदधुतः ॥ किंतवदधुतः ॥ मद्रावगदधुतः ॥
 यक्रदधुतः ॥ वाक्त्रसदधुतः ॥ पितृदधुतः ॥ पिशाचदधुतः ॥ रुतदधुतः ॥ कृत्वादधुतः ॥ पुननदधुतः ॥ १४०
 कटपूतनदधुतः ॥ स्कंधदधुतः ॥ उसादधुतः ॥ सुयादधुतः ॥ अयसमावदधुतः ॥ अस्त्रकदधुतः ॥
 वाजदधुतः ॥ वीवदधुतः ॥ अग्निदधुतः ॥ उदकदधुतः ॥ सर्वदधुतः ॥ कंठाधुतः ॥ खसिरुवंतुमसव

यत्नानां वक्राकूर्वकुजीवकुवर्षातयधुतः ॥ उग्रदधुतः ॥ सप्तमानन्दनदिवाहीनामानि ॥ तयधुतः ॥ गंग
 नदिवाही ॥ सिंधूनदिवाही ॥ वक्रनंदिवाही ॥ क्षीतानदिवाही ॥ क्षालनदिवाही ॥ अर्जिवतीनदिवा
 ही ॥ जलनानदिवाही ॥ कृत्वादिवाही ॥ विष्णुनदिवाही ॥ क्षातवाहनदिवाही ॥ विद्याधनदिवाही ॥
 नेत्रावतिनदिवाही ॥ चंद्रपूतनदिवाही ॥ क्षीवस्वतिनदिवाही ॥ कटुपीनदिवाही ॥ पथाष्टीनदिवाही ॥
 कावैत्रीनदिवाही ॥ तामयधीनदिवाही ॥ मधुमतीनदिवाही ॥ वैगवतीनदिवाही ॥ ॐ दधुतः ॥

॥यूष्कविहीनदिवाह्री॥रुध्रधवतिनदिवाह्री॥नर्मदानदिवाह्री॥शोभितानदिवाह्री॥विस्वामितानदिवा
ह्री॥अमवानदिवाह्री॥तामवानदिवाह्री॥पर्यवालानदिवाह्री॥सुवसुनदिवाह्री॥पुरुदिकानदिवाह्री॥
नयदानदिवाह्री॥विमलानदिवाह्री॥नैवञ्जनानदिवाह्री॥सदानदिवाह्री॥दिवन्धुवतिनदिवाह्री॥व १४१
थयूष्यानदिवाह्री॥रुध्रधवतानदिवाह्री॥सुवन्धुतीनदीवाह्री॥ॐ शंतावांनैवमहानदायस्मितपृथिवी
मकुलैषसवति॥तामसवायूनदीषु शंखानागाजसूत्रासूत्रागन्धवांशकिनवामदावगायत्रावा

[illegible]

कामरूपा। विचित्ररूपा॥ नैवासिका॥ पुनितसक्ति॥ नाथेनया महा मायूया विद्यावाह्य मम सपविवात्रस्य
 सर्वसत्ता तां वन रुकुर्वं रुजी वरुवर्ष धनयश्च रुस्रदा धन॥ उगं कृत्वं मां नन्द पर्वत राह्या नामाति॥ न
 यथा॥ सुमन्यपर्वत राजा॥ हिमवतपर्वत राजा॥ गंधर्वादनपर्वत राजा॥ हस्तसिंगपर्वत राजा॥ खदीरपर्व १४२
 त राजा॥ सुवर्णपाश्वपर्वत राजा॥ दूतिधनपर्वत राजा॥ निमिधनपर्वत राजा॥ चक्रवाक्यपर्वत राजा॥ म
 हाचक्रवाक्यपर्वत राजा॥ ॐ ह्रीं लयपर्वत राजा॥ वृक्षालयपर्वत राजा॥ धीमनपर्वत राजा॥ सुदर्शनप

र्वत राजा॥ विपूलयपर्वत राजा॥ बलाकपर्वत राजा॥ रुमित्रपर्वत राजा॥ महिकूतपर्वत राजा॥ वंस
 चित्रपर्वत राजा॥ वेजाकपर्वत राजा॥ असूत्रपात्रपर्वत राजा॥ हनुमन्पर्वत राजा॥ विंदूतयुक्थ
 र्वत राजा॥ चन्द्रपुरुषपर्वत राजा॥ रुद्रहोत्रपर्वत राजा॥ सूर्यकान्तपर्वत राजा॥ विदूषपर्वत राजा॥
 सिध्दपर्वत राजा॥ चित्रकूटपर्वत राजा॥ चंद्रहोत्रपर्वत राजा॥ मलयपर्वत राजा॥ सुवर्णसिंगप
 र्वत राजा॥ पात्रिजातपर्वत राजा॥ सुवाहपर्वत राजा॥ सुसैनपर्वत राजा॥ वृक्षकूटपर्वत राजा॥

वंदगर्ह्यपर्वतनाजा ॥ रम्यकर्तुपर्वतनाजा ॥ मात्रविजयपर्वतनाजा ॥ मलयपर्वतनाजा ॥ खड्गप
 र्वतनाजा ॥ नायनपर्वतनाजा ॥ मंजनपर्वतनाजा ॥ मंजनपर्वतनाजा ॥ वृक्षपर्वतनाजा ॥ ददप
 ६३ र्वतनाजा ॥ कैलासपर्वतनाजा ॥ महेंद्रपर्वतनाजा ॥ सर्वपर्वतनाजा ॥ कालंजनपर्वतनाजा ॥ लाहि १४३
 तागिरिपर्वतनाजा ॥ उपासिहियपर्वतनाजा ॥ रम्यगिरिपर्वतनाजा ॥ चन्दनमालपर्वतनाजा ॥ व
 र्गुगर्ह्यपर्वतनाजा ॥ काकनादपर्वतनाजा ॥ क्षमादपर्वतनाजा ॥ ॐ स्वतावानेवजसमीनपिथिवी

मधुलेपर्वतनाजा नक्षत्रशंखानागा ॥ अम्रनामवृत्तागवृत्ता ॥ गंधर्वाकिंतनामदावगम ॥ यक्षावाकसा ॥
 धुतापिधवाहृताकृता ॥ पुनता ॥ कटपूठता ॥ स्कंधा ॥ उमादा ॥ रुद्रा ॥ अयस्माना ॥ अस्मन्नका ॥ सिद्धि
 विद्याधवश्चराजानश्चपतिवातानां नैवासिका ॥ पतिवसक्ति ॥ मयनया महासायुषा विद्यावाही ममसयः
 त्रिवारसर्वसत्त्वानां कवका कवर्वरुजीवरुवर्षगतपञ्चरुद्रदागत ॥ सिद्धं रुद्रवर्कल्यान ॥ सर्वपापन
 यरुद्रकल्याण ॥ धूम्रसहस्ररुद्रकल्याण ॥ पतिवाधयं रुद्र ॥ अथ मयूहध्वं रुद्र ॥ अनथानपतिवाधयं रुद्र ॥ ममसर्वस

१५५

सत्त्वानां च न कृत्वा कुलवं रुजी वरुवर्षात पथ्य रुहा न दाहात ॥ धनं द्वा भक्त विषा चैव उरु ताद पदं तथा-
१ न वती च अस्मिन् नो चैव रुद ही रुवति सफमी ॥ ॐ स्वता सफन रुजा तज्जहारिका सत्ता ॥ १५५ रुवा दिस
वरुनि प्रविषालय नि ॥ गं पतया मदा मायुलया विद्या नाह्ना मम सप विवा न सर्व सत्त्वाना च न कृत्वा कूर्व १४५
उजी वरुवर्षात पथ्य रुहा न दाहात ॥ उगृह्णन् मानन्द प्रदा धना मानि ॥ यं ग्रहान रुग्णं पूजयन्नि द्वा
सर्व द्वि ॥ सुख दुःख कर्म क ॥ सुहि रुक्क निवेदय नि ॥ न यथा ॥ सूर्य ग्रह ॥ उग्र ग्रह ॥ वृषा नि ॥ रुग्णं रुग्णं

ग्रह ॥ शनि च न ग्रह ॥ अंग न ग्रह ॥ वृद्ध ग्रह ॥ अस्मिन् रुग्रह ॥ धूमक रुग्रह ॥ अस्मिन् विहाति न रुग्ण-
सफ २ दिहां लिता ॥ नागं ग्रहा सुधा सफ मद द्वि का मदा नया ॥ सूर्य चैव साम चैव सफ जिहाजन
दका ॥ उदया सुग मरु न च क सफ कर्म धायुषा ॥ य रुक्क द्वि कना लाक मदा गं जा मद द्वि का विद्या सः
मनु माद रु सप सन न च मसा ॥ गं पतया मदा मायुलया विद्या नाह्ना मम सप विवा न सर्व सत्त्वाना
च न कृत्वा कूर्व रुजी वरुवर्षात पथ्य रुहा न दाहात ॥ उगृह्णन् मानन्द पो ना धना मानि सिद्धि वता

नासिद्धिविद्यानादिकयथांस्तदीयवर्तव्यासिनां सांयायूनां डग्रमंजसा मच्चिमन्तयक रिहानत
हार्ययग्रामिनां रंषा नामानिकीरुं शिष्यामि ॥ तथथरा अयमकोनामदक्षि ॥ वासकोनामदक्षि ॥
१६५ वासदेवानामदक्षि ॥ मानिचिनामदक्षि ॥ माकदानामदक्षि ॥ विस्वामिनामदक्षि ॥ वशिष्ठानाम १४३
दक्षि ॥ वाल्मीकिनामदक्षि ॥ काव्ययानामदक्षि ॥ दृष्टकाव्ययानामदक्षि ॥ हृगुनामदक्षि ॥ हृगु
नरंभनामदक्षि ॥ अग्निनरंभनामदक्षि ॥ रुगीनामदक्षि ॥ रुगिनरंभनामदक्षि ॥ अग्निनरंभनामदक्षि ॥

अरुथानामदक्षि ॥ यूलक्षनामदक्षि ॥ अमदश्विनामदक्षि ॥ द्योवायनाममदक्षि ॥ दृष्टद्वोवाय
नाममदक्षि ॥ द्वात्रितीनाममदक्षि ॥ समंगिनाममदक्षि ॥ दुर्गागानाममदक्षि ॥ समुगानाम
मदक्षि ॥ अग्निवादिनाममदक्षि ॥ किर्हिवादीनाममदक्षि ॥ सुकिर्हिवादीनाममदक्षि ॥ गुवूनाम
मदक्षि ॥ यारुलकानाममदक्षि ॥ अयायनाममदक्षि ॥ हिमवांताममदक्षि ॥ लादिनाशः
नाममदक्षि ॥ वेधवायनाममदक्षि ॥ दुर्वासानाममदक्षि ॥ सबहानाममदक्षि ॥ मदानाममद

१५७
 धि॥ पुरा नाममदधि॥ कुक्कला नाममदधि॥ वृक्षानि नाममदधि॥ अन्नने नाममदधि॥ हानिश्चवा
 नाममदधि॥ वृद्धा नाममदधि॥ जागुलि नाममदधि॥ गंधा लाना नाममदधि॥ अकष्टल नाम
 मदधि॥ अघिर्घिर्ग नाममदधि॥ द्विषिर्घिर्ग नाममदधि॥ काशायना नाममदधि॥ काशायना १४६
 ममदधि॥ रिषममां ग नाममदधि॥ कथिलाना नाममदधि॥ एभीतमाना नाममदधि॥ नादिताक्षः
 नाममदधि॥ सुनंजाना नाममदधि॥ सुननेमी नाममदधि॥ अक्षिना नाममदधि॥ वालिखी नाममदधि॥

नालदाना नाममदधि॥ पर्वताना नाममदधि॥ किमिलाना नाममदधि॥ ॐ स्वता आनन्दपोना धामदधि॥ यावदाना
 नाकलानयमकुना पत्रवरुचिथमीन ४१ धावाना चान ४७ यवताना मदा मंजामदा वला ४१ सिद्धा सिद्धयना
 र्कमा ४१ मंयनयामदा मायूलया विद्याना ह्नातथा गतरा विना याममसयत्रिवा नसर्वसलाना चक्रा कृत्रवंश
 जीवकुवर्षमय ४१ कुमानदा ४१ गयथा ॥ दिवि २ हिलि २ खिलि २ मित्रि २ घित्रि २ सित्रि २ मिलि २ रु १ उ १ रु १
 गसनि १ मथनि १ दहनि १ घाटनि १ पचनि १ पांचनि १ पातनि १ दहनि १ दल २ दालनि २ पाटनि २ माहनि १ समुनि

स्वाहा॥ उ गृह्णन्तं मानन्दमहा प्रजापती नामानि॥ यद्वानागा अमवा सवता रगवृक्ष किं न मा सदा वगा यद्वा ना
कृसा ॥ मनशा विर्यं यन्निगता नवक धुता सरु प्रहनी हिन सखे ये स्वस्ति विरहा ये ॥ गला कथयस्त्वपि ना॥ तद्य
था॥ तुक्ता यजायति ॥ पृथियजायति ॥ अग्नयजायति ॥ अग्नियजायति ॥ हव्यु यजायति ॥ पुलस्तयजायति ॥ पुलह १४१
यजायति ॥ मनू यजायति ॥ वधी यजायति ॥ यक्र यजायति ॥ धुगनू यजायति ॥ सनन्द मानू यजायति ॥ यन
कृमानू यजायति ॥ ॐ स्वाहा मानन्दमहा मान यजायति ॥ स्त्व वक्रजं गमस्य रुत ग्रा मस्य वक्रा वै वस्ति तथ न

यं न याम दामा यलया विद्या वा ह्यमम सय त्रिवा न स र्व सत्ता नां च वक्रा कुल वं रुजी व रुवर्ष भन य ह्य रुधा न द
गत ॥ ॐ मां च म रुष मिद मं वक्रा कुल वं रुहा ल दाम न ॥ तद्यथा ॥ हि त्रिं श्वि त्रिं मि त्रिं मि त्रिं त्रिं सिं
त्रिं श्व रु रु रु रु ॥ ग्रस नि मथ नि ॥ द ह नि घा न नि ॥ य द नि ॥ पां च नि ॥ द न नि ॥ द ल २ दाल नि ॥ पा न नि ॥ मा ह
नि ॥ कृ मृ नी यं स्वाहा ॥ उ गृह्णन्तं मानन्दमहा विषा नां नामानि ॥ तद्यथा ॥ अग्न वा प्रु ला कं यू वा ॥ रुत ग ना
रुत य नि ॥ विंदू य नि ॥ मि त्रि य नि ॥ गं आ ग य नि ॥ य र्क्ष ग्र य नि ॥ अल ला ॥ त वृ ज ॥ त वृ तं त वृ ज ॥ दा दा जाला माला ॥

१२० वृद्धनरासितावाद्यनूमादितावरा कनकमूर्तिनासम्यक् वृद्धनरासितावाद्यनूमादितावरा काव्यपेनसम्यक् वृ
द्धनरासितावाद्यनूमादितावरा मयादिभाकमूर्तिनासम्यक् वृद्धनरासितावाद्यनूमादितावरा ॐ यं वानन्दम
दा मायूरीविद्यावाह्नीमेजिशतववाधिसत्त्वं नमदासत्त्वं नरासितावाद्यनूमादितावरा वां कदाचपदापतिना १४२
रासितावाद्यनूमादितावरा धर्मेष्टवनामिष्टं नरासितावाद्यनूमादितावरा चरुमिसदावाञ्जरासि
तावाद्यनूमादितावरा धनराष्ट्रं च गन्धर्वनाञ्जं नरासितावाद्यनूमादितावरा विवृट्कनचक्रं लभुम

दावाञ्जनरासितावाद्यनूमादितावरा विवृट्पाकनचक्रागमदावाञ्जनरासितावाद्यनूमादितावरा वेद्यवध
नचक्रमदावाञ्जनरासितावाद्यनूमादितावरा अष्टाविंशतिरिश्च गन्धर्वसनापतिरिहासितावाद्यनूमादि
तावरा अष्टाविंशतिरिश्च कं लभुसंतापतिरिश्च अष्टाविंशतिरिश्च नागसंतापतिरिहासितावाद्यनूमादिता
वरा अष्टाविंशतिरिश्च यक्षसंतापतिरिश्च पाञ्चिकं नचक्रसंतापतिरिहासितावाद्यनूमादिता
वाहासितावाद्यनूमादितावरा ॐ यं वानन्दमदा मायूरीविद्यावाह्नी अनन्तिकमहीया ॥ देवग्रहद्वारा

गग्रदधरा ॥ अस्रग्रदधरा ॥ गङ्गग्रदधरा ॥ गन्धर्वग्रदधरा ॥ किंनरग्रदधरा ॥ मन्दाग्रदधरा ॥ यक्षग्रदधरा ॥ रा
 रुग्रदधरा ॥ पितृग्रदधरा ॥ पिशाचग्रदधरा ॥ रुतग्रदधरा ॥ कुंठाग्रदधरा ॥ पुननग्रदधरा ॥ कटपूटनग्रदधरा ॥ स्कंध
 १२१ ग्रदधरा ॥ उल्मादग्रदधरा ॥ रुद्राग्रदधरा ॥ अप्सराग्रदधरा ॥ अस्त्रकग्रदधरा ॥ अतनिकर्मनिरा ॥ सर्वग्रदधरा ॥ १३१
 आदानिधीहि ॥ गङ्गादानिष्ठा ॥ वृद्धिनादानिष्ठा ॥ वंसादानिष्ठा ॥ मानसादानिष्ठा ॥ मंडादानिष्ठा ॥ मर्मा
 दानिष्ठा ॥ ज्ञानादानिष्ठा ॥ जीविनादानिष्ठा ॥ वल्पादानिष्ठा ॥ माल्यादानिष्ठा ॥ गन्धादानिष्ठा ॥ पुष्पा

दानिष्ठा ॥ धूपादानिष्ठा ॥ रुद्रादानिष्ठा ॥ सखादानिष्ठा ॥ आद्रुत्यादानिष्ठा ॥ विद्यादानिष्ठा ॥ मूलादानिष्ठा
 ॥ खेतादानिष्ठा ॥ खलसमादानिष्ठा ॥ शैदानकादानिष्ठा ॥ उगसिद्धादानिष्ठा ॥ वाजादानिष्ठा ॥
 अश्व्यादानिष्ठा ॥ श्यदनिकादानिष्ठा ॥ अतनिकर्मणीया ॥ कल्याकर्मणाकाखादकिन्नरावेनाश्वि
 वयसका ॥ दूर्जक ॥ दूर्जद्विगदूर्जया ॥ दूर्ध्वकिन्न ॥ दूर्लखिन्न ॥ दूर्लघिन्न ॥ वंधूमान ॥ अतनिकर्मणीया ॥ दूर्ध्व
 नकादिकेन ॥ दूर्गिथकेन ॥ रुमीयकेन ॥ वासुधकेन ॥ सप्तमासिकेन ॥ अर्द्धमासिकेन ॥ दैवमासिकेन ॥ मूर्द्ध

दूधीनां ड्यासिकानां च ॥ तथैव ॥ उं वृत्तिवति धनकी कुरु मखादा ॥ नागद्वेषश्च मादश्च ॥ गं लाकं ग्याविषानि
 विषारुगवान्दुष्टावृद्धस्य दंतं विष ॥ नागद्वेषश्च मादश्च ॥ गं लाकं ग्याविषानि विषारुगवान्धमाधिमस्य
 १७३ दंतं विष ॥ नागद्वेषश्च मादश्च ॥ गं लाकं ग्याविषानि विषारुगवान्धस्य दंतं विष ॥ यं ह्यलसर्वदुष्टा ॥ १७३
 नामहतावेव जयस्य ॥ तथैव गतस्य गंतं न कृतस्वस्वायतनमथा ॥ समस्यपनिवानसर्वस्य त्वाना च दंतं विष
 ॥ महा मायूनी विद्या नाहोस्वस्ति नानन्दस्वाति हि कुरु वं दुःसाधु र्गवानिद्यायुषमानानन्दो र्गवत ॥ ५

निष्कृत्य नरुगवत ॥ पादो द्वित्रमावद्वित्वा णि ॥ ४५ दन्ति धी कुरु ॥ यं न स्वाति हि कुरु ॥ नापयं कान्द ॥ ४५ पयं कमे
 स्वाति हि कुरु ॥ दुःपुत्रिदान ॥ ४५ पयिदान ॥ नयामहयुया विद्या नाहो नरुमकार्षित ॥ पयिना ॥ पयिग
 हः पयिपालन ॥ ४५ निस्वस्वायतन ॥ ४५ पयिदान ॥ ४५ पयिदान ॥ विषदूषण विषधमनसी मावंध ॥ धनधीवंध
 चकार्षित ॥ ४५ यद्विषित ॥ ४५ युषमा स्वाति हि कुरु ॥ समावावदा ॥ ४५ युषमतावनन्द ॥ नरुमस्वस्वायतन ॥
 मथाना युषमानानन्द ॥ ४५ युषमां च स्वाति हि कुरु ॥ यं नरुगवान्धनापयं कान्द ॥ ४५ पयं कमे र्गवत ॥ ४५ पादो द्वित्रमा

वंदित्वा नमस्तुभ्यं वारुणवत निदं सयित्वा नमस्तुभ्यं ॥ अथ रुगवाना यूपमनमानन्दमवाच ॥ हस्तं गृह्णन्मानन्दम
 दा मायूरीविद्यानाह्वापरावः ॥ नि ॥ तथा वादिन रुगवतमानन्दपदमवाच ॥ तन किंमिदं रुगवतविदित
 १७४ रुविष्यति ॥ रुगवान्पुननूवाच यं वानन्दवाचा नामदा समुद्र ॥ क्षमागच्छंशा ॥ पृथिवी वा आकाशमप्ययं ॥ १७४
 १७४ चन्द्रादित्यावा पृथिविनियमं न धावापतिशान्ता गच्छंशा ॥ न च तथैव गतस्य वचनमनंथं रुवदिति ॥ अथ रु
 गवाना यूपमनमानन्दमा मरुयमं ॥ तस्मात् रुक्मनन्दः ॥ मां मदा मायूरीविद्यानाह्वा वत स एव पर्वदा मावाच

यन्नि ॥ रुक्मनन्दः रुक्मिणीना मया ॥ १७४ ॥ रुक्मिणीना मया
 तपति ॥ रुक्मः ॥ मां मदा मायूरीविद्यानाह्वा
 सकानां मया सिकानां च ॥ १७४ ॥ दमवाच रुग
 रुक्मः ॥ यवतस्यापर्वदिष्टो नियमि ॥ संनिषत् ॥ रु
 राक्षसामनुष्याश्च सर्वतरुगवता ॥ राक्षसमह



कानां च ॥ साधु रुगवानिद्या यूपमानानन्दो रुगव
 चरु ॥ १७४ ॥ पर्वदा माला चयति ॥ रुक्मिणीना मया
 वाना रुमना ॥ आयुष्मानानन्द ॥ आयुष्मां च स्वाति
 वासुनमवृत्तगच्छंशा ॥ रुक्मिणीना मया ॥ रु
 नदनिति ॥ ॥ अथ मदा मायूरीविद्याना

ही अविनष्टाय रुमदापमिलक्षसमाप ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ नमो रुगं वक्ष्ये आर्ये महाही तव गीये ॥ १ ॥ वंमं प्र
 धृतमं ककक्षि न स मय रुगं वानु वाज गृहं विद्वत्तिष्ठ ॥ ही तव नमदा धम धम ॐ चिकारु तन पक्षदं ॥ १ ॥
 १७ ५ ॥ अयुष्मान्नाद्रलक्ष्मि विद्वत्तिष्ठ ॥ दं वयं ही तागं ग्रही ॥ अरुग्रही ॥ अस्रवग्रही ॥ किं न वग्रही ॥ मवृत्तग्रही ॥ ॥ ॥
 गंधर्वग्रही ॥ महावगग्रही ॥ मनुष्यग्रही ॥ वमनुष्यग्रही ॥ पुनग्रही ॥ रुतग्रही ॥ पिशाचग्रही ॥ कंठा ॥ पुग्रही ॥
 दिपिहि ॥ काकोलूक ॥ कीट ॥ नीरुध ॥ येन नमनुष्यामनुष्यसलो ॥ अथ युष्मां नाद्रल ॥ नरुगं वानु ॥ नमदापयकाक

रुगवत ॥ पादो सिन्या रि वं दिवा रुगवत शिपद क्रिणी क ॥ रुगवत ॥ वृद अग्र ॥ शिपव र्थय मास्म ॥ अथ रुग वानु ॥
 जानने वनाद्रलमा मनुय निस्म ॥ किं नं नाद्रलममपुनत ॥ छिन्ना अग्र निपव र्थय नि ॥ १ ॥ वंमं प्र ॥ आयुष्मान्नाद्रलरु
 गवतमं तदवाचतु ॥ ॐ ॥ हादं रुगवत नाद्रल वाज गृहं विद्वत्तिष्ठ ॥ ही तव नमदा धम धम ॐ चिकारु तन पक्षदं ॥ १ ॥
 दं ॥ ॥ ॥ हादं रुगवत नाद्रल विद्वत् ॥ दं वयं ही ॥ नागग्रही ॥ अरुग्रही ॥ नाद्रुसग्रही ॥ अस्रवग्रही ॥ मवृत्तग्रही ॥ किं न व
 ग्रही ॥ गंधर्वग्रही ॥ गंधर्वग्रही ॥ महावगग्रही ॥ मनुष्यग्रही ॥ वमनुष्यग्रही ॥ पुनग्रही ॥ रुतग्रही ॥ पिशाचग्रही ॥

१२२

मोनाजा। वनूधराजा॥ कूवेलाजा॥ मनस्वीजा॥ वासुकीजा॥ दधुनिजा॥ धरुवाजा॥ वनूठकाजा
जा॥ विनूपाकजा॥ वृक्षसदश्रियविजा॥ वृक्षारुगेवानधर्मस्वामीनागजा॥ मृनुरुनलाकनकसक
ममसर्वसत्त्वानां वनूकाकुर्वीयत्रिगद्यत्रिप्रदयत्रिपात्रध॥ भान्निस्वस्वयनदधुयत्रिदात्रध॥ युयत्रिदात्रध॥ विषद॥ २५१
वन॥ विषधमन॥ सीमाबंधधलदीबंधनकुर्वीयजीवशुवर्षधमयध॥ यवनदासत॥ तयथा॥ ॐ ला॥ मीला॥ उय
ला॥ ॐ लमति॥ विलमति॥ हनमति॥ वरुमति॥ कनू२मति॥ रूवू२रूवू२वव२ववू२मति॥ रूमीव॥ ॐ॥ कालिक॥

मृहिसलनधामलन॥ दलै॥ स्कलै॥ स्कलसिखलै॥ जयस्कलै॥ जयवाकै॥ चलमनै॥ चलनाति॥ चलनदि॥ वाग्वनि॥ वि
लदति॥ यलादिन॥ अलुन॥ पलुन॥ कललै॥ किंनलै॥ कयूलै॥ ककुमति॥ रुतगम॥ रुतमति॥ धनमंगल॥ दिवतनग
रु॥ महावने॥ मृवलाकिमल॥ मृवलव॥ धुनंधन॥ जयालिक॥ जया॥ गमलादिनी॥ वनू२रूवू२वध२रूवू२ध
नू२वू२मति॥ वधन॥ धनू२विवधन॥ विमति॥ विस्कृति॥ नागनि॥ विनागनि॥ वंधनि॥ माकृति॥ मावनि॥ विमा
वनि॥ माहनि॥ विमाहनि॥ रावनि॥ विरावनि॥ साधनि॥ विसाधनि॥ र्मसाधनि॥ विष्मधनि॥ सखिनि॥ सविदनि॥

साधु रुद्रमानं तत्र २ मानं रुद्र २ वंधु मतिरदिति २ खिलि २ खनलि २ खल २ खन २ मंगल २ नमामु नं वृद्धा नाखादा ॥ अ
 स्था खलुपुनत्रानन्दमहाधीनवनीमहाविद्याया दल २ धा रुद्रवर्षदहातानयसुगं धितव्या नभ्यमाना ॥ क ० नभ्यः
 १२४ यमानाया सन्नाशा रुद्रनडा मस्यनका कतारुविषयि ॥ गध्वर्षपूषामडाहि नैवमनथा मनथवा ॥ अथरुविषयि ॥ १३४
 नभ्यमनविषयननाम नकाव नविद्या नमरु नवंगाउ नवाधिन नमग्नि विषादकन कालकनिषयि ॥ विद्यामरु
 पुयागा नां वसर्वे वा साधुपयुक्ता नासिद्धा नासिद्धकना सिद्धना वा शाहूणी पनपयुक्ता ना च मावनी ॥ सर्वविघ्न

विनायकानां रुद्रदहनकरी ॥ कलिकलरुक्लनपसमनकरी ॥ सर्वग्रहविनाशनी ॥ शागग्रहनमकृति ॥ सफधा
 स्यसरुगं नमृद्धा मुंजक संवसंजनी ॥ कजपातियत्तस्यमहायकृष्टं नायति वज्रं दधिपुनपुक्कलितं नपककालि
 रुद्रं नगावशावेनिकमृद्धानसखा टयं ॥ वत्तानामहावाजानां अयं संवधनवकं नमृद्धानसखा टयषु रुद्रप
 हावेन विनाशयेयु तस्यव यरुलाकावेवदानरुवे ॥ अदकवत्ताया नाजध्वान्या नलकमेवस ॥ अस्याखलुपु
 ननाहलमहाधीनवनीमहाविद्यायसकृत्पनिवर्हिताया नाजचोलादका अग्निविषयं सुविकानानदुर्गा म

१७८ धगग ४१ सर्वरुशंख ४५ त्रिभा ४५ ॥ ॐ ॥ यं खलूयूनमदाहीनवती नामविद्या न कवल्यां गंगानदिवाल कास
 मं कवुद्धे रुगवठरुहाषिना रुविष्यति ॥ सिद्धाय नमः सिद्धा सिद्धयना कमा सर्वदेवता गयशुगंधवसि वगवुठ
 किं नममदालगवंदिना सर्वजिनगनवंदिना ॥ सर्वरुशयपदवेषु मम सर्वसत्त्वाना क्वगिवसा वाहुधमि रुवंधु ॥ १७९
 ॥ ॐ ॥ दमवा वरुगवान नारुसना ज्ञायुष्या वाहुल ॥ सीवसर्ववनाय पर्वसदवमानूषासुगंधवलाकारु
 गवना रुषि सक्तं नदनिनि ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ज्ञायुषि मदाहीनवती मदाविद्या वाहीना मध्वनधीयत्रिष

माफ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ नमो रुगवक्षु ज्ञायुष्य
 मरुवुद्धाना ॥ ॐ ॥ वंमया ॥ तमं क कस्मिन्ममयं
 नन्दयं नवे ॥ ॐ ॥ लिखं रुदक्या युष्याना नन्दारु
 पदं वृषका ॥ ॐ ॥ नवे ॥ ॐ ॥ लिमनूपा ॥ ॐ ॥ वे ॥ ॐ ॥ ल्या
 मा मरुयगं ममगं ॥ ॐ ॥ नन्दवे ॥ ॐ ॥ निगं ॥ ॐ ॥ ॥



मदा मरुनूषा नरो विद्या वाहे ॥ नमः सर्व
 रुगवान युष्यम मा मरुयगं स ॥ ज्ञाग मया
 गवत पंथ सोषित ॥ यं नरुगवान रुजिषूज न
 विदवति संपालित न ॥ रुगवान युष्यम
 नकीलपादरु पयित्वा ॥ ॐ ॥ मांति मदा मरु

१४३ ना। सर्वगधा सर्वसक्ति कविष्यति। स्वस्ति रुत कृत्वां वृद्ध स्वस्ति देवाः सह गका स्वस्ति सर्वोक्ति रुतानि सर्व
 कालदिहां रुत वृद्धानुतावेन देवता नाम ननु व। या यो मर्थ सम ही पंतः सर्वे धा य सम धिताः स्वस्ति
 वादी पद रुत रु। स्वस्ति वा दू रुत य दः स्वस्ति वा रुत नामा र्ग स्वस्ति पद्या गत मृत्त स्वस्ति वा गी स्वस्ति देवा १४३
 स्वस्ति मधुदिन स्ति तः सर्वे रु स्वस्ति वा रुत रु मा र्गै धा पाप मा ग मः सर्वे रुत्वा सर्वे पाध सर्वे रुता व क वः
 ला। सर्वे वे सुखिन सं रु सर्वे सं रु निवा त म याः सर्वे रु डा नि प ध रु मा ग चि रु पाप मा ग म रु या नी द

रुतानि समागतानि स्ति तानि रु मा व थ वा ग वि रु कृत्वां रु मे जी स त मं प जा सदा वा च गा जी व च नं रु ध र्म वा
 ॐ ए वं रु द न्म या य ष मा ना न दा रु ग व न ४ प ति धृ तः ॐ रु की ल पा द रु प चि त्वा ॐ मां नि म दा म क्ता न्मा न्वा
 म दा म रु प दा नि रु ष मं स्म ॥ ॐ मां व ग धा र वि स त न वि स त न वि स त न वि स त न वि स त न ॥ ३ ॥ वृ द्धा ला
 कान् क य र्क मा हा य य ति ॥ सर्वे धौ वे नू म न न ॥ सर्वे प रु क वृ द्धा नू म न न ॥ सर्वे दानू म न न ॥ सर्वे शे कानू म न
 न ॥ सर्वे धा व कानू म न न ॥ सर्वे य य व कानू म न न ॥ प र्थ क व कानू म न न ॥ का म ध्व नानू म न न ॥ ॐ दानू म

४ नां२

[illegible]

सप्ततः विसप्ततः विसप्ततः विंशसेतः ४ ॥ वृद्धालाकानुकं पर्यमाह्वयति ॥ मत्स्वतः मत्स्वतः विद्यापदं
ति ॥ ॐ लूयभां मयः निगच्छतः निगच्छतः वृद्धयविधति ॥ महाद्वानि दवा दवगुवृद्ध संदका दवा स्वतः
का ४ संयजायतयः स्वतावाला कया ला ४ यविधति ॥ अनेकानि च दवता सह आदिः असुनं दानिश्च ॥ अनेका
नि असुनं गत सह आदि वद्वनि च हत सह आदि रुगवत हि पसं नानि पदं रुक्मि ॥ सर्वसत्वातां मथत्वा मानथ
कविशति ॥ निगच्छतः निगच्छतः निगच्छतः निगच्छतः ४ ॥ क्रियपलायतनः यदि ययंदूषचिह्नानपलायतनः

१८५

धन॥ यमे रं विहान पलायत नवका नूवहित का मासु मितुं रु मं ववत यविग रु वृक्ष ला कान कं य र्कं वं मा ह्याप
 यति॥ समन॥ समन॥ समन॥ समन॥ ४ ॥ नू समं नू समन॥ नू समन॥ नू समन॥ ५ ॥ समन॥ समन॥ समन॥ समन॥ समन॥ समन॥
 नू॥ ८ ॥ मिनिमिनिमिनिमिनि॥ ४ ॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥
 नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ मू नू मिनि॥ १३ ॥ नू सम मिनीति॥ मिनीति॥ कं कना॥ कं कना॥
 कं कना॥ कं कना॥ कं कना॥ कं कना॥ कं कना॥ कं कना॥ कं कना॥ कं कना॥ कं कना॥ ८ ॥ कं कना॥ कनीति॥ कुनिर्य॥ कं कनी॥

कनिष्यति॥ निनिनिनिनिनि॥ ५ ॥ निलरु सावि॥ रू निरु॥ निरु॥ निरु॥ निरु॥ निरु॥ निरु॥ निरु॥ १ ॥ अदियुयं
 मनाथ निधि॥ मू नू मू नू मू नू॥ निर्गठुत॥ निर्गठुत॥ पलायतन॥ त्रिपुं पलायत॥ अदियुयं वृक्षा ला कान नू पे कं
 कनव मा ह्यापयति॥ यविगति॥ सर्व सत्वदिता ध्या धार॥ मेरु विदानी॥ कनू धा विदानी॥ मूदिता विदानी॥ ८
 यं शा विदानी॥ न गं मरु पदा सिद्धा॥ सिद्ध गम॥ वृक्ष शा पिता॥ सर्व वा द वताना हि सर्व रुताना॥ कदि मे पिता॥
 ८८ म हाने नार॥ थान मे नाय॥ धर्म तया पित्र॥ जगता मितय॥ सर्वा धा म्यं रु आ ना रू सुव॥ विधा कि काय॥ यरु

१८५
शुविधस्तुवित्रलीकता॥४॥धनुविनाहनाया सर्वस्वसि कविष्यति॥याजगतामाक्रमामाननिर्वहयति॥
यकदमक॥४॥सर्वधर्मा॥४॥सर्वस्वसि कविष्यति॥गतिर्याजगता॥४॥सकतयधसुखीवह॥अथयसर्वस्वत्वा
नासर्वस्वसि कविष्यति॥यनसर्वजगत्तैवभैरविहंनतायिनापालितः पूरुवक्रिखसर्व॥४॥सर्वसि कविष्य ॥४॥
ति॥गतिर्यसर्वस्वानांदीपनाश्चेवपनायधसंसारंवहमाधसर्व॥४॥सर्वसि कविष्यति॥य॥४॥साक्षात्स
र्वधर्मा॥४॥मविसंवादक॥४॥विवाकं॥४॥विक्कन॥४॥सर्वस्वसि कविष्यति॥यस्मिन्जातं महावीर्यं यम

क्षा॥अर्थसपद॥४॥सिद्धार्थसिद्धसंतान॥४॥सर्वस्वसि कविष्यति॥यस्मिन्जातं महावीर्यं सर्वत्रयपकलयिता॥४॥स
र्वस्वपुमदिता॥४॥सर्वस्वसि कविष्यति॥यदिकात्रयत्रलिता॥यस्यवा॥४॥वसंधवाश्चदुर्मनामासीतसर्वस्वः
सि कविष्यति॥य॥४॥आसीतमूनर्थवधर्मवकपकीर्ति॥४॥आर्यसत्यानिवदत॥४॥सर्वस्वसि कविष्यति॥य
स्मिन्जातं वसुमनिधमंत्रकपकीर्ति॥४॥आर्यसत्यानिवदत॥४॥सर्वस्वसि कविष्यति॥यनतीर्थकवासर्वाजिधर्मः
॥४॥काविनांवधिकता॥४॥सर्वगध॥४॥सर्वस्वसि कविष्यति॥स्वसि रुवकूवृतां॥४॥वृहस्वसिदेवा॥४॥सहका॥४॥स्वसि

सदा निरुतातिपर्वकालादि संकुचं वृक्षपुंक्षानुलावेन दवतानां मरुतवराया अथ समहितं तद्वर्धयाम
 मृधितानां स्वामिदादीयदं रुचं रुचामिदावजतामा र्गसि पद्यागमेषु च स्वामिदादीयसि दवास्वामिमा
 १५२ दिनसि तस्य वृक्षसि वा रुचं रुचामा वीषां पायमागताम सर्वे सत्वा सर्वे पाथी सर्वे रुता चकवला ४ सत्वे १५
 वे सत्विन संकुचं सर्वं संकुचिना तमया ४ सत्वे रुदाक्षि यश्च रुमागचित पायमागता ॥ यानीह रुतानि स
 मागता निरुता निरुमा वथ दानु निरुकुचं रुमेगी सगमं पया सुदवा चना की च वनं रुचमे ॥ ॥

॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥ ॐ नितरु वृक्षानां वृक्षानुलावेन दवतानां वृक्षानुलावेन महा ॐ नितय सा मति ॥ ॥
 आर्यमहावक्रा महा मरु नूतानधी महा विद्या वाही यमाय ॥ ॥ आर्यमहा पात सना ॥ आर्यमहा सा
 दस्यु महा नि ॥ आर्यमहा मायूत्री ॥ आर्यमहा गीत वदि ॥ आर्यमहा नूतानधी ॥ नमं यं च वक्रा सु रं य विम
 माय ॥ ॥ रंधमोक्ष रुतं सातथ गत रुत रुतं सा च यो नि राध रुतं वादी महा धी महा ॥ दयं धमो रं
 पवन महा या चित यन मो पा स का पन म धमि आ ॥ ॥ ॐ नितरु १० १० १० १० १०



ASHA ARCHIVES

2755